जापान की सैर

[सूर्योदय के देश की यात्रा के सचित्र तथा रोचक संस्मरण]

•

रामकृष्ण बजाज

•

१९५७

सत्साहित्य प्रकाशन

प्रकाशक

मार्तण्ड उपाध्याय

मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,

नई दिल्ली

पहली बार १९५७

मूल्य

डेढ रुपये

मुद्रक

हिंदी प्रिंटिंग प्रेस

दिल्ली

प्रकाशकीय

नये-नये देशो, नई-नई जगहो के बारे मे जानने की इच्छा सभीको होती है। लेकिन सभीको नई-नई जगह जाने का अवसर मिले सो बात नही। जिन्हे स्वय जाने का और देखने का अवसर नही मिलता, वे जानेवालो की बाते सुनकर या पढकर अपनी जिज्ञासा को किसी हदतक शात कर सकते है और जिन्हे बाद मे जाने का अवसर मिले, वे अपने से पहले जानेवालो के अनुभवो से लाभ उठा सकते है।

सभवत. यही कारण है कि 'मंडल' ने यात्रा-सबधी जितनी भी पुस्तके निकाली, पाठको ने उन्हे पसद किया। 'लद्दाख-यात्रा की डायरी', हिमालय की गोद मे', 'जय अमरनाथ' आदि पुस्तको की लोकप्रियता इसका प्रमाण है। अपने पाठको की इसी पसद से उत्साहित होकर हम समय-समय पर ऐसी पुस्तके निकालते रहे है, तथा भविष्य मे और भी निकालने का विचार है।

जापान न केवल एशिया का, अपितु समस्त ससार का एक महत्वपूर्ण देश है। विश्वयुद्ध में पराजय के थपेडे सहने के बाद भी जिस तेजी से जापानियो ने अपने देश का पुनर्निर्माण किया है, वह प्रशसनीय और अनुकरणीय है। एक एशियाई देश होने के नाते जापान के बारे मे और अधिक जानकारी पाना हमारे लिए और भी ज्यादा जरूरी हो जाता है।

आशा है प्रस्तुत पुस्तक हमारे पाठको को पसद आयेगी।

—मंत्री

लेखक की ओर से

अपने जापान-प्रवास मे हमे वहा के बारे में बहुत-सी नई बाते जानने को मिली और काफी नये सस्मरण लेकर आये। यहा मित्रो के आग्रह से मैंने अपने अनुभवो को लेखो के रूप मे लिख लिया। बाद में ये लेख एक साप्ताहिक पत्र मे धारावाहिक रूप से प्रकाशित भी हुए। कई मित्रो को वे पसद आये। उनमे से कइयो का आग्रह हुआ कि कुछ सामग्री और जोडकर उन्हे किताब के रूप मे छपा दिया जाय।

मै कोई लेखक तो हू नही, न किताब लिखने की मुझे आदत हे, न शौक ही। मेरे नाम से किताब छपने का यह पहला ही अवसर है। इसलिए मुझे स्वाभाविक सकोच रहा। फिर भी मित्रो के आग्रह के सामने मेरा वस नही चला और यह पुस्तक उसीका परिणाम है।

मैंने इस पुस्तक में अपने छोटे-मोटे अनुभवो व अनुभूतियो को ज्यो-का-त्यो लिख दिया है। आशा है, जो लोग जापान की यात्रा करने का विचार करते हैं, उन्हे इन अनुभवो का कुछ लाभ मिल सकेगा। मुझे तो जितने मित्र मिलते हैं, उन सबको आग्रहपूर्वक मै तो यही सलाह देता हू कि उनको जापान जरूर जाना चाहिए। विदेश जाना हो तो भी यूरोप की बजाय वे जापान पहले जाय, ऐसा मुझे लगता है। यूरोप की बजाय जापान से हमारा सामीप्य भी अधिक है और सीखने को भी अधिक मिल सकता है।

—रामकृष्ण बजाज

विषय-सूची

इंटरनेशनल चेंबर आफ कामर्स के प्रतिनिधियो के सम्मान में हुए भोज में

(वाये से दाये) १. लेखक, २ लालजी मेहरोत्रा, ३ जापान के राजकुमार टकामत्सु, ४ विमला वजाज, ५ राजकुमार की पत्नी ६ श्री वसल

जापान की सैर

: १ :

रंगून पहुंचे

गर्मियो मे इस साल कही दूर घूमने जाने का मन हो रहा था, परतु कहा जायं, इसका कुछ निश्चय नही हो पा रहा था। तभी खबर मिली कि इस साल का अतर्राष्ट्रीय कामर्स चैबर का जलसा टोकियो मे हो रहा है और महाराष्ट्र कामर्स चैबर ने सुझाया कि मै भारत की तरफ से प्रतिनिधि होकर क्यो न जाऊ। सोचा, चलो जापान ही घूम आवे। पूर्व की तरफ लोग कम ही जाते है। जापान की उन्नति की प्रशसा भी सुन चुके थे। अतः तीन मास के लिए सुदूरपूर्व की यात्रा का कार्यक्रम बना। हमारी यात्रा कलकत्ते से प्रारभ होनी थी। सो वहां पहुचे। कलकत्ता बहुत गरम था, परतु ३ तारीख की रात को ही रिमझिम वर्षा होने लगी, मानो प्रकृति देवी हमे प्रसन्नतापूर्वक विदा कर रही हो, लेकिन हमारा वायुयान हमे भारत से दूर ले जाने मे जैसे हिचक रहा था! पहले सुना कि दो घटे की देरी से जायगा। फिर दो घटे से बढकर तीन घंटे हो गये, तब कही रवाना हुआ।

कलकत्ते से रवाना होकर सबसे पहले रगून पहुचे। यह जगह काफी अच्छी लगी। यहा का सिक्का 'चाट' कहलाता है।

ज्ञाट को १०० भागो मे बाटा गया है। इनमे से प्रत्येक को 'पियाज' कहते है। सरकारी मुद्रा-मूल्य की दृष्टि से हमारे रुपए के बराबर ही चाट की कीमत है। किंतु बाजारो मे हमारे १००) के बदले १६० चाट मिल जाते है। भारत के लोगो और सिक्के दोनो का ही यहा अच्छा सम्मान है।

रगून का विश्वविख्यात 'पगोडा' (बुद्ध मदिर) तो हमने देखा ही, साथ ही 'पीस पगोडा' (शाति-मदिर) भी देखा। यह नवनिर्मित देवालय शहर से लगभग सात मील दूर है। उसके निर्माण के लिए दुनिया भर के बौद्धो ने चदा दिया। समस्त ससार मे शाति की स्थापना कैसे हो सकती है, इस प्रश्न पर विचार करने के लिए पिछले दिनो यहा बौद्धो की विश्वपरिषद् का एक विशाल सम्मेलन हुआ था। उसी जगह पर यह नया मदिर बना है। मदिर छोटा है, परतु है सुदर।

पीस पगोडा के पास ही परिषद् के लिए एक बडा भारी पक्का मडप बनाया गया है। इसे 'गुफा' कहते है। एकदम नए ढग से बनाया गया यह मडप बडा ही दर्शनीय है। भीतर से यह बहुत बडा है। करीब ६-७ हजार आदमी उसमे आसानी से बैठ सकते है। बाहर से उसे गुफा का रूप दिया गया है। बाहर की तरफ चट्टानो से आच्छादित होने के कारण वह साधारण पथरीली पहाडी-जैसा लगता है।

इस गुफा के भीतर प्रकाश और हवा के लिए समुचित व्यवस्था की गई है। बैठने के लिए सुव्यवस्था है। लोगो से भरा सभा-गृह अत्यत भव्य लगता होगा।

इसके निर्माण मे एक करोड से अधिक रुपया खर्च हुआ।

इसे बनाने का अधिकाश श्रेय बर्मा के प्रधान मंत्री श्री ऊ
है। ऐसे कार्यों मे वह व्यक्तिगत रूप से भी बड़ा रस लेते है।
अपनी निजी देखरेख मे सारा काम करवाते है।

इस सभा-गृह के निर्माण को लेकर एक बड़ी रोचक घटना सुनने मे आई। श्री ऊ नू ने कई विख्यात शिल्पी और स्थापत्य-कला-विशेषज्ञ बुलवाये और उनसे नक्शा बनाने को कहा। उन्होने अपने दृष्टिकोण को समझाते हुए कहा कि भवन मे ये तीन बाते तो होनी ही चाहिए—

१. देखने मे एकदम सादा और स्वाभाविक हो, २: सुदर, स्वच्छ और सुव्यवस्थित हो, तथा ३ आधुनिक सुविधाओ से पूर्ण हो।

बड़े-बडे कलाकारो ने अपने-अपने नक्शे पेश किये, पर नू महोदय को किसीका भी नक्शा पसंद न आया।

इसी बीच श्री नू को एक स्वप्न आया। इस स्वप्न मे उन्हे यह भवन कैसा हो, इसका पूरा नक्शा साँफ-साफ दिखाई दिया। कहा जाता है, उसी समय बर्मा के एक प्रसिद्ध शिल्पी को भी ठीक वैसा ही स्वप्न आया और उसने भी भवन का वही नक्शा देखा। दूसरे दिन नक्शा बनवाकर उसने श्री ऊ नू के सामने प्रस्तुत किया। देखकर वह खुशी से उछल पडे ! शिल्पी सचमुच उनके स्वप्न को नक्शे मे उतारकर ले आया था।

रगून मे भारतीयो की सख्या काफी है। नगर की जनसख्या लगभग ८ लाख है, जिसमे करीब एक-तिहाई भारतीय है। अधिकतर मुसलमान है। जो भारतीय यहा रहते है और बर्मा के

निवासी होना चाहते है उन्हे बर्मी सरकार ने बर्मी होने की इजाजत दी थी, लेकिन वहुत कम हिदुस्तानी वहा के बाशिदे बने। ग्रापस मे भी एकता कम है। कमाई यहा करते है, पर यहा के लोगो पर खर्च न करके भारत मे ही वे पैसा भेजना चाहते है। इससे हिदुस्तानियो के प्रति दुर्भावना बढ रही है। बर्मी सरकार ने भी भारत भेजे जानेवाले रुपये पर प्रतिवध लगा दिया है। वास्तव मे एक प्रकार की सकुचित राष्ट्रीयता का प्रसार यहा हो रहा है।

रगून की दूकानो पर ग्रधिकतर स्त्रिया ही बैठती है। पूरी दूकान वे ही चलाती है। साधारण ग्रौर उच्च ग्रधिकारियो की पत्निया ही नही, वडे-वडे मत्रियो की स्त्रिया भी ग्रपनी-ग्रपनी स्वतत्र दूकाने भलीभाति चलाती है। बच्चे या तो स्कूल जाते है, या इन दूकानो पर ग्रपनी माताग्रो की मदद करते है। भोजन के समय दूकान पर बैठकर ही वाजार से खरीदकर खाना खा लिया जाता है। दीखने मे सुदर ग्रौर भले-भले घरो की महिलाए ग्रपने साहस ग्रौर वल-बूते पर दूकाने चलाती है। स्कूलो ग्रौर दफ्तरो मे नौकरी करके वेतन-भर कमा लेनेवाली स्त्रिया तो सारे ससार मे पाई जाती है, परतु ग्रपने कधो पर व्यापार के उतार-चढाव का भार लेकर तथा ग्रपनी पूरी जिम्मेदारी पर दूकान चलाना कुछ ग्रौर ही वात है। कोई यह नही कह सकता कि इन स्त्रियो की योग्यता ग्रौर कार्य-क्षमता मे कोई कमी है। काम फुरती ग्रौर सफाई से होता है। हिसाव-किताव भी वे स्वय लिखती है। भावो मे कमी-वेशी करना, नए-नए ग्राहको को ग्रपने माल के प्रति ग्राकर्षित करना, विल वनाना ग्रादि सारे कार्य वे दक्षतापूर्वक कर

लेती है। यदि दुनिया के दूसरे मुल्को की महिलाएं भी रंगून की अपनी बहनो की नकल करने लग जाय तो पुरुषों के लिए एक बहुत बड़ा सकट और प्रतियोगिता उत्पन्न हो जाने का पूरा-पूरा डर हो जायगा।

जिस प्रकार हमारे देश में होली होती है, उसी प्रकार वर्मा मे जल-उत्सव मनाया जाता है। तेज गर्मियो के बाद, वर्षा-ऋतु के आरभकाल से कुछ पहले यह उत्सव आता है। सब लोग वर्षा रानी का हार्दिक स्वागत करने को तैयार हो जाते है। तीन-चार दिन तक दफ्तर वगैरा बद-से रहते है। रास्ते-चलते हर किसी जाने-अनजाने व्यक्ति को पानी से तर कर दिया जाता है। अपने यहां की तरह वहां पानी मे रग डालने का रिवाज नही है। सड़कों पर नल के जोड (कनेक्शन) खोल लिये जाते है, जिससे इन दिनों सडको पर पानी-ही-पानी दिखाई देता है। घरो मे नहाने के लिए पानी खरीदकर लाना पडता है, पर यह सार्वजनिक स्नान जरूर मुफ्त हो जाता है।

हम लोग वहा पहुचे उसके कुछ ही रोज पहले जो जल-उत्सव वहा हुआ था उसमे श्री जवाहरलाल नेहरू ने भी वाडुग जाते समय भाग लिया था। इससे वहा के लोगो मे वड़ा उत्साह था।

जल-उत्सव के पर्व पर वर्मी लोग पारस्परिक वैर-भाव भूल जाते है; और इस खुशी और मेल-मिलाप के नए वातावरण मे कई नई सगाइयां भी तय हो जाती है। जितना वडा यह उत्सव है, उतने ही अधिक उत्साह और हर्ष से वर्मी लोग इसे मनाते है।

: २ :

रंगून से याकोहामा

जकार्ता—रगून से हम लोग हवाई-जहाज से सीधे इडोने-शिया की राजधानी जकार्ता पहुचे। यहाका अनुभव बहुत सुखद नही रहा। भारतीय दूतावास ने किसी होटल मे हम लोगो के ठहरने का इतजाम किया था, लेकिन हमारे पहुचने के कुछ रोज वाद वाडुग-कान्फ्रेस होनेवाली थी, इसलिए वहाकी सरकार ने बिना किसी सूचना के हमारा कमरा ले लिया। जकार्ता के और किसी भी होटल मे जगह का मिलना असभव था। हम लोग वडे पसोपेश मे पड गये। आखिर भारतीय दूतावास के एक कर्म-चारी के यहा हम लोगो को रात बितानी पडी। दूसरे रोज के० एल० एम० हवाई जहाजवालो ने वडी कठिनाई से अपने यहा हम लोगो के लिए जगह कर दी। सभी जगह के० एल० एम० का अनुभव हम लोगो को अच्छा रहा।

जकार्ता शहर खास दर्शनीय नही लगा। वहाके लोग भी वहुत साफ-सुथरे नही थे। शहर के वीच से एक लवी नहर जाती है, जो कि काफी गदी है, शहर का नाला भी उसीमे जाता है। उसमे ढोर पानी पीते है, लोग कपडे धोते है और कुछ लोगो को हमने नहाते हुए भी देखा। देश मे अत्यधिक गरीवी होते हुए भी चीजो के दाम और रहन-सहन का खर्च वहुत अधिक है। रिक्शा आदि भी वडे महगे थे। एक हाथी-दात का सिगरेट-होल्डर, जिसे हम लोग यहासे दो रुपये मे ले गये थे, उसके लिए वहाका

एक दूकानदार ४०-४५ रुपये तक देने को तैयार था और आग्रह-पूर्वक माग रहा था।

यहा के लोगो मे हमने एक विशेषता देखी। आज कमाया और कल खर्च दिया। जेब मे पैसे होगे तो कल की फिक्र नही करेगे। छोटे-से-छोटे कर्मचारी भी, जिनकी तनख्वाह कम ही होती है, रुपया जमा करने की कोशिश नही करते। थोड़े-से पैसे जमा हुए कि क्लब, सिनेमा, नाटक-घर, होटल आदि मे जाकर नाचगान मे और खाने-पीने मे उड़ा देगे। घर के नौकर-चाकर भी हमेशा छुट्टी लेने की फिराक मे रहते है। छुट्टियो के दिनो मे बहुत

मुसलमान है। इसलिए वहा भारत और पाकिस्तान को लेकर खीचातानी चलती है कि इडोनेशिया किसके साथ रहे। मुसलमान के नाते उसको पाकिस्तान के साथ रहना चाहिए, ऐसा वहा के एक-दो राजकीय पक्षो का जोर है, लेकिन हिदुस्तान की अतर्राष्ट्रीय नीति का भी वहा अच्छा प्रभाव है और उसकी तरफ भी काफी लोग आकर्पित है।

सिगापुर व पैनांग—जर्काता से हम सोराविया शक्कर का का कारखाना देखने जाना चाहते थे। लेकिन हम पहुचे उन दिनो छुट्टिया थी, इस कारण हम लोगो को हवाई जहाज मे जगह नही मिली और वहा नही जा सके। वहा से अपने कार्यक्रम के दो रोज पहले ही सिगापुर पहुच गये। चूकि दो दिन पहले सिंगापुर पहुचे, इसलिए वहा से पैनाग घूम आये। पैनाग मलाया के दक्षिण मे वडा ही सुदर वदरगाह है। वहाकी जलवायु स्वाथ्य के लिए वडी अच्छी है। शहर मे ही एक ऊची पहाडी है जिसपर करीव तीन हजार फुट ऊचे रस्सी के रास्ते (रोप-वे) से जाना होता है। कोई २५ मिनट मे पहाडी की चोटी पर पहुच जाते है। वहा से सारे शहर की सुदरता अच्छी तरह से दिखाई देती है।

सिगापुर वापस आकर दूसरे रोज सुवह हम लोगो ने पी० एंड० ओ० कम्पनी का नया जहाज 'चूसान' पकडा। यह जहाज करीव २२ हजार टन का था। जहाज की वनावट वहुत ही सुदर और व्यवस्था कुछ कडी, लेकिन अच्छी थी। हम लोगो को सौभाग्य से वहुत अच्छा कमरा मिल गया और पढने की मेज पर से तथा सोने के विस्तर से भी समुद्र वहुत अच्छी तरह दिखाई देता था। खाने का कमरा वडा, सुदर और सजा हुआ

था। रहने और खाने के कमरे एयर कंडिशन किये हुए थे। खाने-पीने की इफरात थी। हम लोग शाकाहारी थे, फिर भी खाने मे हम लोगों को किसी तरह की कोई दिक्कत नही हुई। दिन भर खेल-कूद, तालाब मे तैरने और डेक पर टेनिस आदि खेलने मे समय कब बीत जाता था इसका पता ही नही चलता था। खाने के कमरे मे जो परोसनेवाले थे वे विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करते थे। देखने मे बहुत तेज-तर्रार और बड़े कार्यकुशल थे। उनके कपड़े भी बहुत चुस्त और अच्छे लगते थे। १२ अप्रैल को हम लोग सिगापुर से रवाना हुए थे। हागकाग होते हुए २३ तारीख को जापान के बदरगाह याकोहामा पहुचे। हागकाग मे हमारा जहाज दो दिन के लिए रुका था।

हांगकांग—हागकाग का इतिहास ही ऐसा है जिससे इस स्थान का व्यापारिक महत्व प्रतिपादित होता है। इसकी भौगोलिक स्थिति ने इसे विशेष महत्व का नगर बना दिया है। वास्तव मे इसकी ख्याति १८३९-४२ के 'अफीम-युद्ध' के बाद बढी है। उस युद्ध मे यह बदरगाह उजाड़-सा था, पर अग्रेजो ने उसे अपने व्यापारिक जहाजो का अड्डा बनाकर विकसित करना शुरू किया। पहले यह चीन के कब्जे मे था, पर १८४२ की नानकिन-सधि के अनुसार यह अंग्रेजों के कब्जे मे आगया। ५ अप्रैल १८४३ से यह ब्रिटिश उपनिवेश का एक भाग बन गया। पहले यहां मुख्यत: अफीम का व्यापार चलता था, पर १८६९ मे स्वेज नहर खुल जाने के कारण यूरोप के जहाज यहा भाति-भाति की व्यापारिक चीजे लाने लगे। १८६० से १८७० तक यहा गत दस वर्षो से दूना माल आया और अगले दस वर्षो मे वह चौगुना होगया,

कौलून का द्वीप भी अग्रेजो को १८६० मे मिल गया। उसके भी हागकाग के अतर्गत आ जाने से इस नगर का महत्व और भी वढ गया। वाद मे तो ब्रिटेन ने चीन के मीरखाडी और गहरीखाडी तथा लानताओ का टापू ९९ वर्ष के पट्टे पर लेकर लगभग आसपास का सारा इलाका हागकाग मे मिला लिया। इस प्रकार जहा हागकाग का क्षेत्रफल पहले केवल ३२ मील था वहा १८९८ मे इसका विस्तार ३९१ वर्गमील होगया। अग्रेजो की साम्राज्य-लिप्सा और उनके व्यापार-प्रसार के प्रयत्नो का हागकाग एक जीता-जागता उदाहरण है।

जो हो, हागकाग नगर की आबादी इस समय १५ लाख से ऊपर है। गत युद्ध मे जापान का अधिकार हो जाने पर यहा की जन-सख्या केवल ७॥ लाख रह गई थी, पर वाद मे अग्रेजो का कब्जा फिर हो जाने पर आवादी तेजी से वढी। वडी सख्या मे चीनी वहा आगये और इस समय तो ववई, कलकत्ते की तरह वहा भी रहने तथा व्यापार के लिए खाली मकान मिलना एक वडी समस्या होगई है।

यहा की वस्तीप चमेल है। अधिकाश जन-सख्या तो चीनियो की ही है। अग्रेज तो यहा एक प्रतिशत से भी कम होगे। कुछ पोर्चुगीज, भारतीय और अमेरिकन भी है। इस वडी आवादी मे से पौन लाख से एक लाख तक लोग तो पानी पर तैरनेवाले घरो में रहते है, जो इच्छानुसार एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाये जा सकते है।

हागकाग मे वदरगाह से लेकर भीतरी भाग, वाजार, हाट तक देखने की वहुत चीजे है। शहर के वीच मे ही एक सुदर

पहाड़ी है। जिन यात्रियों के पास समय अधिक नही होता वे मोटर से या रोप-वे द्वारा विक्टोरिया पीक पर जाकर वहा से सारे शहर का दृश्य आसानी से देख सकते है। मोटर का रास्ता लंबा तो पडता है पर है एकदम पक्का और सुदर बना हुआ। यहा नावो की सर्विस सराहनीय है। हागकाग और कौलून के बीच "बालावाला" या वाटर-टैक्सियो की भरमार है। बहुत बड़ी-बड़ी मोटरबोट, जो एक बार मे ५०० से ७०० यात्रियो को ले जाती है, हर पाच-सात मिनिट के अतर से बड़ी तत्परता से बिना जरा भी समय खोए नियमित आती-जाती रहती है। यात्रियो का इतना आवागमन रहता है और बोट इतनी जल्दी-जल्दी छूटती है कि यात्रियों को करीब-करीब दौड़ते हुए ही बोट पकड़नी पड़ती है। शहर की मुख्य सडकों की सैर तो मोटर द्वारा सिर्फ डेढ घटे मे ही पूरी हो सकती है। बदरगाह से पहाड़ी की आखरी बस्ती तक यह नगर आइने की तरह साफ नजर आता है। सबसे ऊची पहाड़ी पर सरकारी इमारते और बडे-बड़े व्यापारिक पेढियो के सचालको के बगले है और निम्न स्तर पर बाजार तथा मजदूरों के अनगिनत छोटे-छोटे घर है। यहा का टाइगर-बाम-गार्डन और उसमे स्थित पगोड़ा दर्शनीय है।

हागकाग एक खुला बदरगाह है। यहा किसी वस्तु पर टैक्स आदि न होने से अमेरिका और यूरोप की चीजे बहुत सस्ते दामो मे मिल जाती है। यात्रियो के लिए वहाका विशेष आकर्षण अलग-अलग तरह के सामानो की खरीदी है।

हागकाग की काठ की वनी हुई अलमारिया व सदूक प्रसिद्ध है। काठ के ऊपर सुदर, गहराई तक खुदाई का काम किया रहता है। भीतर कपूर की लकडी लगी रहने के कारण कपूर की सुगध वरावर आती रहती है और इसके अदर गरम कपडे रख देने से उनमे कीड़े नही लगते। कई वर्षो तक इनमे कुछ खरावी नही आती। दाम भी अधिक नही होते। हम लोगो ने भी वहा से एक सदूक व एक अलमारी खरीदी।

: ३ :

जापान की राजधानी में

योकोहामा बदरगाह पर उतरकर मोटर से जब हम लोग टोकियो पहुचे तो वहा की ऊची-ऊची इमारतो को देखकर बडा ताज्जुब हुआ। हम लोगो ने सुन रखा था कि जापान मे बार-बार भूकंप आने की वजह से मकान छोटे और लकडी के बनाये जाते है, लेकिन हमने देखा कि वहा सात-सात, आठ-आठ मजिलो की इमारते तो सैकडो की सख्या मे थी। यह मालूम हुआ कि इमारतो पर भूकप का कोई असर न पडे, इस तरीके से पत्थर के वडे मकान बनाने का तरीका यहावालो ने खोज लिया है।

टोकियो आज, दुनिया मे आबादी की दृष्टि से, तीसरे नबर का शहर है। सबसे वडा लदन, फिर न्यूयार्क। टोकियो न्यूयार्क से बराबरी करने की कोशिश कर रहा है और सभवत उससे आगे भी बढ सकता है।

टोकियो जाते ही सबसे पहली चीजे जो लोगो को आकर्पित करती है वे है वहा के वस्तु-भडार (डिपार्टमेट स्टोर)। टोकियो मे करीब सात-आठ वडे-बडे स्टोर है। सबसे बडे डिपार्टमेट स्टोर मे करीब बारहसौ लडकिया व अन्य कर्मचारी काम करते है। वह स्टोर करीब सात-आठ मजिल की बहुत वडी इमारत मे है, जहा छोटी-से छोटी चीजो से लेकर वड़ी-से-वडी चीजे मिल जाती है। अदर ही रेस्तरा है, मजे से खाना खाइए या नाश्ता कीजिए। फोटो स्टूडियो के अलावा वडे-से-वडे मडप भी है। वहां शादियां,

सभा, जलसे आदि भी बरावर हुआ करते है। बीच-बीच मे वडी-वडी प्रदर्शनिया भी होती रहती है। स्टोर की छत पर वच्चो के लिए खास व्यवस्था होती है। जानवरो का छोटा 'जू' होना है, 'मेरी गो राउड', बिजली से चलनेवाली रेले, आदि वच्चो के लायक अन्य खेल-कूद की सामग्री रहती है। वच्चो को ऊपर छोडकर माता-पिता स्टोर के अदर अपनी खरीदी आसानी से कर सकते है। आने-जाने के लिए बडे-वडे लिफ्ट और एस्कलेटर (चलती सीढिया) लगी होती है।

हरेक डिपार्टमेट स्टोर गर्मियो मे एयर-कडिशन होता है और सर्दियो मे गरम हवा की मदद से गरम रहता है। अदर की हवा ताजी, साफ व शुद्ध रखने का भी वरावर इतजाम रहता है।

टोकियो के एक वडे डिपार्टमेट स्टोर के, जिसका नाम डायामारू है, कुछ आकडे नमूने के तौर पर यहा देता हू, जिससे इसके कार्य की विशालता का कुछ अदाज पाठको को मिल सकता है।

इसकी पूजी ७३,००,००० रु० है और अपने शेयर होल्डरो को साधारणत कोई २० प्रतिशत डिविडेड हर साल देता है। इसकी मासिक बिक्री १५० करोड रुपये के लगभग हो जाती है। सिर्फ टोकियो के सारे डिपार्टमेट स्टोर्स की रोज की औसत बिक्री करीव २ करोड २५ लाख रुपयो की है।

जापान मे आम तौर से चीजो के दाम निश्चित रहते है। मोल-भाव करने का वहा रिवाज नही है। छोटी दुकानो मे कभी आठ-दस प्रतिशत भाव कम हो भी सकता है, लेकिन वडी दुकानो मे व डिपार्टमेट स्टोर मे तो मोल-भाव होता ही नही। हर चीज पर उसका दाम लिखा रहता है। स्टोर सदा लोगो से भरा रहता

है। जैसे अपने यहा प्रदर्शिनियों मे लोग जाते है उसी तरह से जिनको कुछ खास खरीदना न हो, वे शौकिया भी डिपार्टमेट स्टोर्स मे समय विताने चले जाते है। आप बिना रोक-टोक के मजे से चारो तरफ घूमिए। चीजो का दाम देखते रहिए और जो चीज पसंद आवे उसके लिए पास खड़ी लड़की को बुलाकर कह दीजिए तो वह आपको तुरत वह चीज वहुत अच्छी तरह से डव्वे मे बाधकर दे देगी। आपका सामान अधिक हो तो आप उसीके पास छोड़ दीजिए। वह उसे नीचे भेज देगी, जहा से जाते समय आप लेजा सकते है। यदि आप चाहे तो सामान आपके घर पर या होटल मे भी पहुचाने की व्यवस्था कर दी जाती है। छोटी-से-छोटी चीज को जिस सुदरता से डव्वे या कागज मे बाधकर दिया जाता है, वह देखने व अनुकरण करने-जैसी चीज है।

हमलोग खरीदारी को निकले। हमे चीजों की कीमत वाजिब है या नही, इसका पता नही था। हांगकाग के अनुभव के वाद इसका भी भरोसा नही था कि वहा भाव पूर्व-निर्धारित रहते है या नही। इससे जानकारी करने के लिए हमने दो-चार दुकानो मे चीजे पसद करके उनके दाम कम कराने की कोशिश की। दुकानदारो को इससे वड़ा ताज्जुव हुआ। वे भाव-ताव के आदी नही थे। या तो साफ ना कह देते या हम कुछ थोडा-वहुत ही कम करने को कहते तो उसे विना विवाद के मान लेते।

एक वार घूमते-घामते एक छोटी-सी खिलौने की दुकान देखकर हम आकर्षित हुए और उसमे घुस गये। कुछ चीजे पसद की और देने को कहा तो वह देने से इन्कार करने लगा। भापा

की दिक्कत थी ही। बाद मे पता चला कि वह थोक बिक्री की दुकान है, खुदरा सामान नही बिकता। लेकिन हमे तो कई चीजे इतनी पसद आई और उनके दाम इतने सस्ते लगे कि विमला कहने लगी कि हमे तो ये चीजे लेनी ही है। उनको बताने लगी कि यह भी दे दो और वह भी दे दो। बच्चो के लिए खिलौने सचमुच सुदर और सस्ते थे। काफी बढे आकार के रेल के इजन, मोटर आदि चार-चार, पाच-पाच रुपये मे मिल रहे थे। हमने कहा कि हम भारत से आये है, अगर दे सके तो कृपया दे दे, तो दुकानदार का दिल पसीजा और उसने कहा—"अच्छा, ले लो।" भाव तो वही थोक-बिक्री के लिए जो लिखे हुए थे, उसमे फेरफार करने का विचार हो उसके मन मे नही आया।

बस, उसका इशारा होते ही विमला शिकारी की तरह चीजो पर टूट पडी। बड़े-बडे तीन-चार पार्सल होगये। उन्होने कहा कि हम खुद ठीक से बाधकर इन्हे आपके होटल मे पहुचा देगे। सारी चीजो का बिल कुल मिलाकर करीब १५०) रुपये ही हुआ।

जापान अपने उपयोग की करीब-करीब सारी चीजे अपने-आप बना लेता है। आम जरूरत की चीजो मे बडी मोटर गाडिया और अच्छे फाउटेनपेन के अलावा करीब-करीब सभी चीजे वे खुद्द बना लेते है। बडे-बडे लिफ्ट, छोटी मोटरे, मोटर बसे, स्कूटर, ट्रक्स, एस्कलेटर, इजन, ट्रेन आदि चीजे तो बनाते ही है, लेकिन बडे-बडे समुदरी जहाज भी न केवल अपने लिए बल्कि विदेशो के लिए भी बनाते है। कुछ यूरोप और दक्षिण अमेरिका मे भी ये जहाज निर्यात होते है।

घडिया भी यहा बहुत अच्छी बनने लगी है। देखने मे काफी सुदर होती है। चलने मे कितनी मजबूत होगी, यह तो कुछ वर्षो के बाद ही पता चल सकता है। ये लोग घड़िया स्वीजरलैंड की भाति ही विकेंद्रित ढग पर बनाते है। कैमरे और दूरबीन बनाने मे भी इन्होने बहुत प्रगति की है। इनके निक्कन और केनन कैमरे दुनिया के अच्छे-से-अच्छे जर्मन कैमरे कॉन्टेक्स और लायका की बराबरी करते है। भाव मे उनसे काफी सस्ते है। ये कैमरे काफी मात्रा मे वहासे निर्यात भी होते है। कैमरे और दूरबीन पर विदेशी लोगों को खरीदते समय बिक्री-कर नही देना पडता। इसलिए काफी सस्ते मिल जाते है।

जापानी लोग स्वभावतः टेकनिकल मनोवृत्ति के होते है। टेकनिकल उन्नति उन्होने काफी की है और यूरोपीय देशों से बराबर टक्कर लेते रहते है। इसीसे काफी चीजे ये अमेरिका को भी बेचते है।

जापान के नकली मोती सारी दुनिया मे प्रसिद्ध है। हम लोग उस टापू पर भी गये, जहा ये मोती निकाले जाते है। उस टापू का नाम है टोबा। नकली मोती निकालने की शुरू से आखिर तक की क्रिया हमे विस्तार से दिखाई गई। यह बहुत ही दिलचस्प है। असली मोती से यह मोती काफी अच्छा और सुदर होता है; और सस्ता तो है ही। इनपर भी विदेशियो को बिक्री-कर नही देना पड़ता। खास करके अमेरिका और दूसरे देशो को भी यह मोती काफी मात्रा मे निर्यात होता है।

चीनी मिट्टी के बरतन भी पर्याप्त मात्रा मे सुदर और सस्ते बनते है और उनका भी निर्यात होता है। इसके लिए बडी-बड़ी

फैक्टरिया है और ग्रामोद्योग ढग से भी यह काम होता है। चीनी मिट्टी के वरतन बनाने की एक वडी फैक्टरी हमने नागोया मे देखी।

खिलौने हर तरह के, वहुत बडी तादाद मे और काफी सस्ते मिलते है, खासकर रवर के खिलौने तो बहुत बनते है। फोटो-अल्वम कई तरह के और वहुत ही कम दामो मे मिल जाते है।

दुनिया मे कोई नई चीज वनी तो उसकी नकल करने मे जापानी लोग उस्ताद है। ये लोग मुझे शक्कर की रिफाइनरी दिखाने ले गये थे। वहा इसका एक अच्छा उदाहरण देखने को मिला। कुछ वर्प पहले इन्होने 'हाई स्पीड ओटोमैटिक सेट्री-फगल मशीन' अमेरिका से मगाई थी। उसके पास अब इन्होने जापान की बनी मशीन लगा ली है। इनका दावा है कि इसकी कार्य-क्षमता अमरीकन मशीन से ज्यादा है। अमरीकन मशीन जहा ५०० हार्स-पावर खर्च करती है वहा इनकी मशीन ४० से ही काम चला लेती है। हर तरह की छोटी-मोटी चीजो की ये लोग नकल करते है और साथ-ही-साथ उनमे एक या दो नई चीजे भी जोड लेते है।

ये लोग विजली का काफी उपयोग करते है। छोटे-से-छोटे गाव मे भी विजली है। बिजली के सहारे ही छोटी-वडी बहुत-सी मशीने व कारखाने चलते है। छोटी-वडी जिस तरह की मशीन की जरूरत हो तुरत वना लेगे। छोटे-से-छोटे गाव से भी आप गुजरे तो आपको विजली से चलती मशीने मिलेगी। शहरो म निओन् की वत्ती से दुकाने सजाते है और विज्ञापन भी काफी करते है। यहा के हिसाव से वहा विजली का दाम कम नही है,

तो भी लोग व्यापारी व घरू कामो मे बिजली का खूब उपयोग करते है।

जापान मे लोगो को फोटो खीचने का बडा शौक है। बड़े-बूढे, स्त्री-पुरुष और बच्चे सभी लोग अक्सर कैमरा रखते है और हर मौके पर फोटो लिया करते है। स्कूल के कई बच्चे कैमरे रखते है और खुद फोटो खीचते रहते है। जापान-जैसे छोटे-से देश मे कैमरा बनाने की कम-से-कम सात-आठ कम्पनियां होगी, जो एक-दूसरे से स्पर्धा करती रहती है। इस स्पर्धा की वजह से हर कम्पनी को अपना माल बेचने मे बडी कठिनाई का सामना करना पडता है। सब लोग मेहनत करके अपने माल को अच्छे-से-अच्छा बनाने की कोशिश करते है और सस्ते-से-सस्ता भी देते है। जहातक मेरा खयाल है इसी स्पर्धा की वजह से इनके कैमरा व दूरवीन बनाने के उद्योगो ने इतनी जल्दी इतनी प्रगति की है कि दुनिया मे ऊचे-से-ऊचे स्तर पर पहुच गये है। उन लोगो को हरदम जागरूक रहकर बराबर प्रगति करते रहना लाजमी होगया है। ऐसा वे न करे तो उनका बाजार मे टिकना ही असभव हो जायगा। माल की बहुतायत होने पर अपने-आप उसको सुधारने की तरफ ध्यान जाता है और स्पर्धा हुई तो वह जल्दी ही सुधर भी जाती है।

हमे निक्कन कैमरा बनाने का कारखाना देखने का मौका मिल गया। कारखाना सचमुच बडा अच्छा था। उनके नये-नये प्रयोग करने की व सुधार करने की प्रवृत्ति देखकर हम लोग बडे प्रभावित हुए।

: ४ :

यात्रियों के लिए सुविधाएं

जापान जाने के लिए सबसे अच्छा समय मार्च के मध्य से मई के अंत तक का है। इस समय ठंड धीरे-धीरे कम होने लगती है। न ज्यादा जाड़ा रहता है, न ज्यादा गरमी। शुरू में तो कुछ गरम कपड़े पहनने पड़ते हैं, लेकिन बाद में सूती कपड़ों से भी काम चल जाता है। जापान का प्रसिद्ध 'चेरी ब्लोसम-सीजन' अप्रैल के पहले सप्ताह में आता है। 'चेरी' नाम के सफेद फूलों से झाड़ लद जाते हैं। ये फूल दस से पंद्रह दिन तक ही रहते हैं। हम लोग कुछ देर से पहुंचे, इसलिए उन फूलों की बहार नहीं देख सके। लेकिन लोग कहते हैं कि यह दृश्य देखने योग्य होता है। ये झाड़ यहां लगे भी बहुतायत से हैं। कई जगह सड़कों के दोनों तरफ इनकी कतार लगी होती है। घरों में और बाहर भी जब ये झाड़ फूलते हैं, तब बहुत ही सुंदर दिखाई देते हैं। जापान की जलवायु आमतौर से ठंडी है। इसलिए भी यहां थकावट कम आती है और अधिक काम करने की ओर स्वाभाविक वृत्ति रहती है। दिनभर कितना ही काम करने पर थकावट नहीं होती। बर्फीले मौसम में भी सारा जापान बड़ा दर्शनीय होता है। चारों तरफ समुद्र और बीच में छोटे-बड़े अनेक पहाड़, पहाड़ भी हरियाली से भरे हुए। इनपर बड़े-बड़े पेड़ भी बहुत हैं। पहाड़ों के बीच-बीच में छोटे-छोटे नगर बसे हैं, इसलिए इन

प्रदेश से जब रेल द्वारा गुजरते है तो बडा अच्छा दृश्य दिखलाई देता है। यहा प्राकृतिक नदी-नालो का पूरा उपयोग किया गया है और मेहनत करके उनको अधिक सुदर बना दिया गया है।

यहा की जलवायु अधिकतर ठंडी होने से स्वास्थ्यप्रद है। काम करने मे काफी चुस्ती व स्फूर्ति रहती है। लोग आमतौर पर स्वस्थ होते है। बच्चे मोटे-ताजे रहते है। उनके गुलाबी गाल बडे प्यारे लगते है। बच्चे तृप्त रहते है, इससे रोते बहुत कम है। मुसाफिरी मे, सडको पर, मित्रो के यहा हमने इतने बच्चे देखे, फिर भी उनको रोते हुए शायद ही पाया। विमला तो कहने लगी कि यहा के बच्चो के रोने की आवाज सुनने का मन करने लगा है। देखे तो सही कि वे रोते कैसे है ! लोगों के स्वास्थ्य पर, खास करके लड़ाई के बाद, यहाकी सरकार विशेष ध्यान देने लगी है। अब यहा भी मृत्यु का अनुपात बहुत कम हो गया है और करीब-करीब अमरीका और इग्लैड के बराबर आ गया है।

जापान मे रेलवे का इतजाम बडा व्यवस्थित और अनुकरणीय है। जापान नेशनल रेलवे यहाकी मुख्य सरकारी कम्पनी है, जिसकी रेले देश मे फैली हुई है। उसकी लाइनो की कुल लबाई १२,४३२ मील है। सरकारी व गैर-सरकारी सारी लाइने मिलाकर कुल लबाई ३४,००० किलोमीटर यानी करीब २१,९२५ मील हो जाती है।

बड़ी लाइने सरकारी होती है, छोटी-छोटी लाइने लोगो की व्यक्तिगत। व्यक्तिगत लाइने सरकारी स्टेशन से जुड़ी रहती है। दोनो के प्लेटफार्म आदि एक ही होते है। गाड़िया ठीक

समय पर चलती है और वडे शहरो मे ६०-७० मील के अदर कही भी जाना हो तो हर १५-२० मिनट के भीतर गाडिया मिल जाती है। सारे जापान मे मीटर गेज होने पर भी गाडिया ५०-६० मील की रफ्तार से चलती है। आम तौर पर सव लोग तीसरे दर्जे मे ही घूमते है, क्योकि तीसरे दर्जे की सीटे काफी आराम-देह वनी है। दूर के सफर के लिए दूसरे दर्जे का उपयोग होता है। रात को सोने के डव्वे अलग से जुड जाते है। तीसरे दर्जे का किराया काफी सस्ता होता है। थोडे फासले के लिए तेज गाडियो मे जाने का भाडा वहुत ज्यादा होने के कारण साधारणत लोग धीमी गाडियो से जाते है। इससे लवे सफर कीगाडियो मे भीड अपने-आप कम हो जाती है।

आप यदि तेज व धीमी गाडियो के भाडे को ध्यान से देखे तो आपको पता चलेगा कि उनमे कितना अतर है।

गाड़ी का नाम	दूरी	तीसरा दर्जा	दूसरा दर्जा	पहला दर्जा
		रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
लिमिटेड एक्सप्रेस[1]	३७५मील तक	८- ०-०	१९- २-०	२८-१२-०
लिमिटेड एक्सप्रेस	७५० ,,	१३- ४-०	३२- ०-०	४८- ०-०
साधारण एक्सप्रेस	३७५ ,,	४- ०-०	९- ९-०	१४- ६-०
साधारण एक्सप्रेस	७५० ,,	६-१०-०	१६- ०-०	२४- ०-०
धीमी एक्सप्रेस	३७५ ,,	२- ०-०	४-१२-६	७- ३-०
धीमी एक्सप्रेस	५६२मील के ऊपर	३- ५-०	८- ०-०	१२- ०-०

१ यह सबसे तेज चलनेवाली गाड़ी है, जो कुछ ही स्टेशनो पर रुकती है।

इससे आप देखेगे कि ७५० मील तक के प्रवास मे धीमी एक्सप्रेस व लिमिटेड एक्सप्रेस के भाड़े मे करीब-करीब चौगुना फर्क है। पहले दर्जे के लिए उतनी ही दूर के लिए धीमी एक्सप्रेस से जहा १२ रुपए लगते है, वही लिमिटेड एक्सप्रेस से ४८ रुपये लगते है। तीसरे दर्जे मे ३-५-० की जगह १३-४-० लगते है।

हर प्लेटफार्म पर, कितने बजे किस-किस जगह के लिए गाडिया जायगी, लिखा रहता है। स्टेशन के ऊपर उस स्टेशन का नाम और अगले व पिछले स्टेशन के नाम भी लिखे रहते है। दूसरे दर्जे का डब्बा कहा खड़ा रहेगा, उसकी निश्चित जगह होती है। कुली कही बहुत कम होते है और कही बिल्कुल ही नही होते। इसलिए अधिक सामान लेकर वहा कोई नही घूमता। हर स्टेशन पर सामान रखने का कमरा होता है, जहा अपना सामान रखकर आराम से घूमिए। हर स्टेशन पर भाड़ा कम या अधिक दिया हो तो उसके ठीक करने का दफ्तर रहता है। यदि भाडा अधिक दिया हो तो तुरत वापस मिल जाता है। यदि कम दिया हो तो वहा फर्क देने से बाहर जाने की इजाजत मिल जाती है। यदि किसी वजह से आप जहा से सफर करते हो वहा टिकट नही ले सके तो उतरने के स्टेशन पर आप कह दीजिए कि हम फला स्टेशन से आये है। भाड़ा लेकर आपको बिना हिचकिचाहट के बाहर जाने दिया जायगा।

एक बार हम लोगो ने गलती से एक-एक की जगह दो-दो टिकट ले लिये। नियम यह है कि गलती से अधिक टिकट ले ले तो उतरनेवाले स्टेशन के बाहर जाने से पहले ही अधिक दिये

हुए पैसे वापस ले ले। लेकिन हमको स्टेशन के वाहर जाने पर पता चला कि अधिक टिकटे भूल से ले ली गई है। इसलिए हम फिर स्टेशन पर आये। हम लोगो ने बाहर जाते समय वहा के टिकट जमा करनेवाले से यह सर्टिफिकेट भी नही लिया था कि हमने उन दो टिकटो का उपयोग नही किया है। ऐसी हालत मे स्वाभाविक रूप से उन टिकटो पर रुपया वापस करना वडी मुश्किल बात थी। लेकिन जब हमने अपनी वात वहा के अफसर को वताई तो उसने कहा—मै कोशिश करके देखता हू। उसमे थोडा समय लगने का डर था, इसलिए उसने कहा—अभी तो आप जाइए, यदि पैसे वापस मिले तो मै फोन करके आपको इत्तिला कर दूगा। उस समय जो टिकट जमा करनेवाला था वह भी चला गया था। वह वेचारा खोजता-खाजता उसके पास पहुचा, उससे सर्टिफिकेट लिया और पैसे वापस लेकर हम लोगो के होटल पर जोकि वहा से पास ही था, पैसा देने खुद ही चला आया! यात्रियो की सुख-सुविधा का कितना ध्यान रखते है! उसको इतनी दिक्कत उठाने की कोई आवश्यकता नही थी। उसके किसी वडे अधिकारी ने उसे ऐसा करने का हुक्म नही दिया था, लेकिन उसने अपना फर्ज समझकर ही यह काम किया। उसमे टालने की भावना के वजाय लोगो को सचमुच मदद पहुचाने की भावना की प्रधानता थी। इसका यात्रियो पर वहुत अच्छा असर पडना स्वाभाविक ही है।

टोकियो मे जमीन के नीचे भी रेले चलती है। साधारणतः सारे डिव्वे एक-दूसरे से जुडे रहते है और चलती गाडी मे भी हम एक डिव्वे से दूसरे डिव्वे मे जा सकते है। दूर की

मुसाफिरीवाली गाडियो मे रेल की तरफ से ही तरह-तरह की खाने-पीने की चीजे बिकती रहती है। जो कडक्टर होता है वही टिकट भी चैक करता है, और साथ ही गाडी मे बराबर हर पद्रह-बीस मिनट बाद झाडू भी लगाता रहता है, जिससे डब्बे एकदम साफ रहते है। कोई भी आदमी बडा-छोटा काम करने मे हिच-किचाहट नही करता। 'मै अफसर हू और यह काम छोटा है, इसके करने मे मेरी प्रतिष्ठा को धक्का पहुचेगा' आदि व्यर्थ की भावना उनमे नही है। एक स्टेशन पर कुछ सामान अधिक था और कुली नही था तो टिकट कलेक्टर खुद हमारा सामन स्टेशन के बाहर ले गया और जब हम उसे कुछ देने लगेतो उसने लिया ही नही। इनाम आदि लेने का न रिवाज है, न कोई अपेक्षा रखता है। होटलो मे जो बिल रहता है उस पर १० प्रतिशत आमतौर पर टिप के लिए जुडा रहता है। उसके अलावा को कुछ नही देता। टैक्सी आदि मे भी टिप देने का रिवाज कही नही है।

हर जगह पर, चाहे जगह छोटी हो या बडी, यदि वहा विदेशी यात्रियो के जाने की सभावना हो और उनके लिए कोई दर्शनीय वस्तु हो तो, वहा अच्छे-से-अच्छा पाश्चात्य ढग का होटल जरूर होगा। यात्रियो से उनको काफी फ़ायदा होता है, इसलिए उनकी सुख-सुविधा का पूरा इतजाम रहता है। दर्शनीय स्थानो पर पहुचने और उनको अच्छी तरह से दिखाने के लिए बहुत खर्च करके भी अच्छा इतजाम करते है। यदि जमीन के भीतर जाकर कोई जगह अच्छी तरह से देखना चाहे तो खूब गहराई तक जानेवाले लिफ्ट लगे होगे। हर तालाब आदि मे

तेज रफ्तार से जानेवाली मोटरवोट होगी। जहा भी जाना चाहे वही के लिए जगह-जगह से वसे मिल जाती है।

यात्रियो से भी उनको काफी आय होती है। यात्रियो के लिए हर जगह पहुचने का, अच्छे-से-अच्छे रहने के स्थान का व गाइड आदि का समुचित प्रबध है। हर जगह जाने के वारे मे यात्रियो के लिए विस्तृत साहित्य उपलब्ध रहता है। जापान की 'ट्रेवलव्यूरो' नाम की सस्था घूमने आदि की पूरी व्यवस्था कर देती है। यात्रियो को जिस स्थान मे दिलचस्पी हो वहा जाने-कार्यक्रम, टिकटे, देखने योग्य स्थान, होटल, गाइड आदि का प्रवध वे अपने दफ्तर मे वैठे-वैठे सारे जापान के लिए कर सकते है।

कार्यक्रम वनाते समय इस बात का जरूर खयाल रखना चाहिए कि उसमे मौका पडने पर कुछ फेरफार करने की गुजाइश रहे। घूमते समय एक वगाली महाशय भी दो-चार जगह हमारे साथ थे। इससे उनसे अच्छा परिचय होगया। उन्होने टोकियो से रवाना होने से सारी जगह घूमने का करीव एक माह का कार्यक्रम जापान के ट्रेवलव्यूरो से बनवाकर सब जगह की रेल का रिजर्वेशन, होटल मे ठहरने की व्यवस्था आदि पहले ही करवा ली थी। इससे उनके मन को सतोप रहा होगा, लेकिन उन्हे वडी तकलीफ भी रही। कही एक दिन की गडवडी हो जाती तो सारा कार्यक्रम विगड जाने का डर हमेशा वना रहता। वीमार होगये या गाडी चूक गई तो आफत। कही एक-दो दिन कम-ज्यादा रहने का मन होगया या कार्यक्रम मे कुछ फर्क करने की इच्छा होगई तो असभव हो जाता है। वनर्जी महोदय का वीच मे मन होगया कि हमारे साथ कुछ और घूमे और हमारे कार्यक्रम के

अनुसार चले, क्योंकि वह अधिक सुविधाजनक था। इस प्रकार उन्हें साथ भी मिल जाता। पर उन्होंने तो पहले से ही अपने-आपको इस तरह बांध लिया था कि उसमें जरा भी फेरफार करने की गुंजाइश नहीं रही थी।

: ५ :

जापानियों की विशेषताएं

जापानी लोग साधारणत काफी ईमानदार होते है। वहा चोरी वगैरा बहुत ही कम होती है। छोटी-मोटी चोरी हो भी गई तो वहाकी पुलिस बडी सतर्कता और मेहनत से काम करती है और चोरी का माल असली मालिक के पास जल्द-से-जल्द पहुच जाय इसके लिए हमेशा प्रयत्नशील रहती है। हम लोग वहा थे, उन्ही दिनो की एक घटना है। किसी लडके ने एक कैमरा चुरा लिया। कैमरा के विदेशी मालिक ने सोचा कि रेल मे चोरी होगया है, सो उसका क्या पता चलेगा ? इसलिए उसने पुलिस मे रिपोर्ट भी नही की। इस बीच पुलिस ने चोर को पकडकर कैमरा बरामद कर लिया। चूकि, उनके पास कोई रिपोर्ट नही आई थी, इसलिए कैमरा असली मालिक के पास कैसे पहुचे, यह समस्या उनके सामने थी। सयोग से कैमरा मे फिल्म लगी हुई थी। उन्होने उसको धुलवाया और चोर से पूछा कि उन तस्वीरो मे कैमरा के मालिक की तसवीर भी है क्या ? चोर ने एक फोटो मे कैमरा के मालिक को पहचान लिया। पुलिसवालो ने वह फोटो अखवारो मे छपवाया और मालिक की तसवीर के चारो तरफ गोल घेरा डालकर नीचे लिखा कि यह कैमरा जिस व्यक्ति का हो, वह आकर पुलिस-दफ्तर से ले जाय। इसी तरह, एक विदेशी महिला की घडी रेल मे खो गई थी। उसने पुलिस मे रिपोर्ट की। पुलिस का आदमी रेलवे मे पूछताछ करने गया तो रास्ते

मे ही रेल का आदमी घडी लिये हुए मिला और वोला कि किसी-की यह घडी पडी मिली है, जिसकी हो उसके पास पहुचा दे।

डिपार्टमेट स्टोर या छोटी-बडी दूकानो से भी हम लोग सामान खरीदते तो उन लोगो से कह दिया करते कि भाई, यह सामान हमारे होटल मे पहुचा दे। हमारे पास रसीद आदि नही होती थी तो भी सामान बरावर होटलो मे पहुचा देते थे। न भेजनेवाले की तरफ से, न होटल के कर्मचारियो की तरफ से कभी कोई गफलत हुई।

कही बाहर दूसरे गाव जाते तो होटल के 'वैगेजरूम' (सामान रखने के कमरे) मे बिना रसीद के सामान छोड देते थे, यहातक कि स्टेशन के उपर भी सामान रखने के कमरे मे, बिना ताला लगाये, समान छोडने मे झिझक नही होती थी। हमे भरोसा होगया था कि उसमे से कोई चीज गायब नही होगी।

यहाके लोग जो बात कहते है उसको निभाते भी है। एक-दूसरे पर पूरा भरोसा रखते है। किसीकी नीयत पर शका नही करते। कोई व्यक्ति कुछ कह रहा है तो, जवतक वह गलत साबित न हो जाय, यही मानकर चलेगे वह सच ही कह रहा है।

यहाके लोगो के रहन-सहन का स्तर काफी ऊंचा है। रहना, खाना-पीना वडा महगा है। पश्चिमी ढग के अच्छे होटलो मे दो आदमियों के कमरे के लिए करीब ४०-४५ रुपये सिर्फ एक दिन के देने पड़ते है। दोपहर के मामूली खाने के ६-७ रुपये, और रात के खाने के ६-१० रुपये प्रति व्यक्ति अलग से लग जाते है। टैक्सी का भाडा कम-से-कम एक रुपये से शुरु होता है। यदि पश्चिमी ढग का शाकाहारी खाना चाहिए तो टोकियो के अलावा

और मामूली शहरो मे भी होटल और खाने-पीने की सामग्री इतनी ही महगी होती है। जापानी होटलो मे उनके ढग का खाना खाया जाय तो जरूर बहुत सस्ता होता है, पर विदेशियो को इन होटलो मे रहने मे दो-तीन तरह की कठिनाइया होती है। सवसे पहले तो यहा अग्रेजी जाननेवाला कोई मुश्किल से मिलता है। दूसरे, शाकाहारी खाना भी ठीक से नही मिलता। तीसरे, जापानी रिवाज के अनुसार वहा नहान-घर अलग-अलग नही होते है। स्त्री-पुरुष सब एक ही नहान-घर मे सग-सग नहाते है। यह चीज हम लोगो के लिए अजीव थी और इस तरह से स्नान करना सभव नही था। यद्यपि यहाके लोगो के लिए एकदम स्वाभाविक वात है।

यहाके लोग सफाई का वहुत ध्यान रखते है। होटल हो या खुद का मकान, दिनभर भाड-पोछ करते ही रहेगे। जापानी घरो मे जाय तो भारतीयो के समान ही घर मे घुसते समय जूते खोल देने पडते है। घर मे इस्तेमाल करने के लिए एक खास तरह के कपडे की चप्पल होती है। कमरो के भीतर पहनने के लिए अलग चप्पल होगी। पैर साफ हो तो नगे पैर भी रह सकते है। कमरो मे सभी जगह लकडी के फर्श पर चटाइया बिछी रहती है और उनके कोनो पर कीले ठुकी रहती है। चटाइया एकदम साफ रहती है। असली जापानी घर मे मेज-कुर्सी नही होती। खाना खाने के लिए एक चौकी होती हे। पलथी मार-कर खाने वैठते है और चौकी पर लकडी की तश्तरिया रखकर 'चाप स्टिक्स (दो लकडियो) से खाते है। सोने के लिए पलग नही होता, वल्कि एक-के-ऊपर-एक पाच-छ. गादिया रखकर उनपर

आराम से सोते है।

रहने का मकान आमतौर पर छोटा और लकडी का बना होता है। चोरी का विशेष डर न होने से उनको बहुत मजबूत बनाने की फिक्र नही रहती। मकान काफी सस्ता बन जाता है। पहनने के कपडे भी साफ-सुथरे होते है। पुरुष तो आमतौर पर पश्चिमी लिवास पहनने लगे है। जापानी स्त्रियो के लिबास को 'किमोनो' कहते है। उसको पहनना बडा मुश्किल होता है, देर भी बहुत लगती है और पहनने मे दूसरे की मदद की भी जरूरत पडती है। उसे पहनकर तेजी से चला नही जा सकता और काम करने मे भी असुविधा होती है, इसलिए सुविधा की दृष्टि से भी उनको अपना पहनावा वदलने की आवश्यकता हुई। किमोनो देखने मे काफी सुदर लगता है और जापानी स्त्रिया पश्चिमी कपडो की नकल करे, यह भी अच्छा नही लगता। फिर भी मेरी समझ मे पश्चिमी लिबास उनके लिए आवश्यक चीज होगई है। वैसे भारतीय साडी और किमोनो मे तुलना की जाय तो साडी किमोनो से अधिक सुदर व सुविधाजनक पहनावा है, इसमे कोई शक नही।

वहाकी लडकिया साडी पसद करती है, लेकिन साडी पहनी हुई स्त्रियो को देखने की वे अभ्यस्त थी, ऐसा नही लगा। इसलिए डिपार्टमेट स्टोर, सडक, नाटक-घर, दावत आदि सार्वजनिक स्थानो मे जापानी लोग, और लडकिया तो खासकर, मेरी पत्नी की ओर ताकने लगती थी और उसकी साड़ी को वडी कौतूहल भरी नजर से देखती थी। लड़किया कानाफूसी करने लगती और कभी-कभी हँसने भी लगती। मित्रता भी करना

चाहती। उनके चेहरे से यह लगता कि उनको यह लिबास पसद आ रहा है। जिन व्यक्तियो से हमारी जान-पहचान हो जाती, वे तो साफ तौर से अपनी राय जाहिर कर देते कि उनको साडी का पहनावा वडा अच्छा लगता है।

सामान्यतया जापानी स्त्रिया पुरुषो के साथ पार्टी या दावत मे नही जाती। जो स्त्रिया काम-काज करती है, वे अपने काम के लिए बाहर जाती है, लेकिन वैसे स्त्रिया अधिकतर घरो ही मे रहती है। घर के सारे काम-काज खुद सम्भालती है। बडे घरो की स्त्रिया भी अधिकतर काम अपने हाथ से करती है। घर मे पुरुप की बहुत इज्जत है। जापान अभी तक पुरुषो का ही देश माना जाता है। अव स्त्रिया कुछ-कुछ अपना सिर उठा रही है और उनको धीरे-धीरे राजनैतिक और सामाजिक अधिकार मिल रहे है। जव पुरुष बाहर से आता है तो स्त्रिया वडी आव-भगत से उसका स्वागत करती है। उसके जूते निकालकर चप्पल पहनाती है, तथा कोट आदि खोलने मे मदद करती है। पुरुप देर से आया, तो कहा गए थे या देर क्यो हुई, इस तरह के फिजूल के प्रश्न पूछने का रिवाज वहा नही है। पति-भक्ति काफी है, लेकिन अव पाश्चात्य सभ्यता का कुछ-कुछ रग वहा भी चढ रहा है। वैसे यह प्रसिद्ध है कि चीनी रसोइया हो और जापानी पत्नी, तो घर की व्यवस्था वडी सुदर रह सकती है। एक अमरीकन मित्र से बात हो रही थी। उसने कहा कि जापानी स्त्रिया घर-गृहस्थी और आज्ञाकारिता की दृष्टि से वडी अच्छी है। लेकिन, उनका वौद्धिक विकास कम ही हुआ है, क्योकि उनको अभी तक वाहर जाने की आजादी और समाज मे लोगो से

मिलनें की सुविधा नही मिली है। आमतौर से स्त्री-पुरुष-जब आपस मे मिलते है तो दोनों नम्रता से काफी झुककर एक-दूसरे का अभिवादन करते है।

जापानियो को फूलों से बेहद प्रेम है। कहते है, फूलो की सजावट का रिवाज भगवान बुद्ध की पूजा करते हुए शुरू हुआ, लेकिन अब तो यह रिवाज जापान के लोगों की आधुनिक आदतो मे शामिल होगया है। घर, दफ्तर, होटल, आदि कोई जगह ऐसी नही मिलेगी जहा फूल न दीखे। टैक्सी, बस आदि मे भी लोग शौक से फूल सजा लेते है। उन्हे सजाने की विशेष कला है, जिसके शिक्षण के लिए बराबर वर्ग चलते है। शादी के लायक उम्रवाली लडकियो के लिए इस कला का जानना एक बडी जरूरी बात मानी जाती है। सजावट मे फूलों के साथ-ही-साथ घास, पत्ते, बास की डालियो और टहनियो का भी समावेश होता है। विशेष मेहनत करके खास तरीके से पेड़ तैयार किये जाते है। जो ऊचाई मे बहुत छोटे रह जाते है। ऐसे पेडो को बड़े-बड़े हाल, खाने के कमरे आदि स्थानो मे सजाकर रखते है।

खाने-पीने मे शाकाहार–जैसी वस्तु यहाके लोग समझते ही नही। चावल, मछली और अन्य तरह के मास उनके खास खाद्य-पदार्थ है। खाने मे ये लोग हमारे-जैसे भाति-भाति के पकवान नही बनाते। जापानी घरो या होटलो मे शाकाहारी भोजन से पेट भरना मुश्किल हो जाता है। अग्रेजी ढंग के होटलों मे अग्रेजी ढग का शाकाहारी भोजन अलबत्ता मिल जाता है। जापानी ढग का खाना बडा सादा होता है। वे चावल खूब खाते है, पर खाते कोरा ही है। सब्जी, मास, मछली आदि बीच-

बीच मे खाते जाते है। चावल मे हमारे यहाकी तरह दाल, कढी या दही आदि मिलाकर नही खाते है।

खाने मे 'टेमपूरा' उनका एक विशेष पकवान होता है। उसकी तारीफ सुनकर खाने की बडी इच्छा हुई। लेकिन जब कहा गया कि इसमे मछली होती है, तो हमे बडी निराशा हुई। फिर किसीने कहा कि खास व्यवस्था करके शाकाहारी 'टेमपूरा' भी बनाया जा सकता है। तब एक जापानी मित्र ने हमलोगो को खास शाकाहारी 'टेमपूरा' खिलाने के लिए अपने एक मित्र के यहा व्यवस्था की और हम बडी आतुरता के साथ 'टेमपूरा' खाने पहुचे। जब वह हमे परोसा गया और हमने खाकर देखा तब तो हमे निराशा ही हुई; क्योकि वह हमारे यहा करीब-करीब सभी घरो मे बहुत आसानी से बननेवाली बैगन और आलू की पकोडिया थी। हर बडे होटल मे एक अलग कमरा होता है, जहा सिर्फ 'टेमपूरा' ही परोसा जाता है। छोटे-मोटे होटलो पर भी बडे अक्षरो मे लिखा होगा कि यहा 'टेमपूरा' मिलता है। जिस तरह से यहा व्यापार मे छोटी-से-छोटी चीज का काफी प्रचार और हल्ला-गुल्ला करते है, उसी तरह अन्य चीजो मे भी उनका यही हाल है। एक तरह से यह उनका स्वभाव ही हो गया है।

खाने-पीने व परोसने आदि के रस्म-रिवाज का इन लोगो को बडा ख़याल रहता है। वैसे देखा जाय तो जापानी ढग की चाय बनाना व परोसना मामूली-सी चीज है, लेकिन इसको उन्होने एक बडा औपचारिक रूप दे रखा है। सार्वजनिक तौर पर इसका प्रदर्शन भी करते है। देखने मे आकर्षक व सुदर

स्त्रियां अच्छे-से-अच्छे किमोनो पहनकर और बहुत ही नजाकत के साथ अतिथियो के सामने ही चाय बनाती है। यह सारी विधि वे बड़े चित्ताकर्षक रूप मे करती है। चाय बनाकर, दोनों पैर मोड़कर घुटनो के बल आपके सामने बैठकर वे बड़े ही सलीके से चाय परोसती है। उस चाय मे न तो शक्कर होती है, न दूध। कुछ हरी पत्तियों को उबालकर दे देते है, स्वाद मे यह कड़वी होती है। इसे गरम काढा ही समझिए। हो सकता है कि स्वास्थ्य के लिए यह काढा लाभदायी हो, पर उसका स्वाद ऐसा बेस्वाद था कि एक बार से दूसरी बार उसको पीने की हमारी तो हिम्मत नही हुई। ठंडा देश था, इससे कोई गर्म चीज पीने मे अच्छा तो जरूर लगता, पर आखिर स्वाद भी तो कोई चीज होती है!

लड़ाई के बाद सारे जापान मे, खासकर टोकियो आदि शहरों मे, अमरीका का काफी असर है। कहते है, जापान मे अभी भी ऐसे २०० से अधिक अमरीकी अड्डे है जहा जापानी लोग नही जा सकते। अमरीकनो की वजह से वहाका रहन-सहन काफी मंहगा होगया है। अमरीकी सिपाही वहां बहुत संख्या मे है और खुलेहाथो खर्च करते है। टोकियो को तो उन लोगों ने एक तरह से एशिया का पेरिस ही बना डाला है। नाइट-क्लबों की भरमार है। खाना-पीना, मौज-शौक रात देर तक चलता है। पेरिस के समान ही नाच-घर भी अनेक है। 'स्टेज रिव्यूज' भी अब वे करने लगे है, जहा सैकड़ों लड़किया एक साथ सज-धजकर मच पर नाचती है। मच की बनावट और नाच-गाने काफी मनमोहक होते है। इस तरह के

'स्टेज-रिव्यू' यहा बराबर प्रसिद्धि पा रहे है। इस प्रकार टोकियो मे पाश्चात्य सभ्यता की पूरी तरह से नकल हो रही है।

यहा के नाटको मे 'काबुकी' ढग का नाटक बहुत प्रसिद्ध है। इसके लिए खूब बडा मच होता है और उसमे बडे आकर्षक ढग से सजावट की हुई होती है। कपडे आदि पुराने ढग से पहनकर पुरानी लोक-गाथाओ से इसकी कहानी चुनी जाती है। 'काबुकी' नाटको मे सोगा भाइयो के अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने की कहानी अलग-अलग रूप मे बताने का अधिक रिवाज है। कहानी पुराने जमाने की वृत्ति को बतानेवाली व हृदयस्पर्शी होती है। प्रसिद्धि सुनकर हम लोग भी एक दिन इस नाटक को देखने पहुच गए। जब हम पहुचे, नाटक शुरू हुए कुछ देर होगई थी। इसमे बातचीत ही ज्यादा होती है। सारे नट व कलाकार एक अजीब ढग से पेट के भीतर की गहराई से जोर की आवाज निकालकर बोलते है। अर्थ नही समझ पा रहे थे, इसलिए हमको तो वह आवाज बडी ही कर्णकटु लगी। लेकिन जब आस-पास के दर्शको पर हमारा ध्यान गया, तो स्पष्ट था कि कहानी व आवाज दोनो का ही उनपर गहरा असर हो रहा था। सारा वातावरण गभीर था और नाटक-घर मे एकदम निस्तब्धता छाई हुई थी। कोई दुखद प्रसग था। आसपास बैठे हुए सब लोग सिसकिया ले रहे थे। वातावरण इतना भारी था कि हम लोगो का वहा अधिक बैठना असभव होगया। हम लोग कानाफूसी करके एक-दूसरे के साथ बात भी नही कर सकते थे। धीरे-से भी बात करते तो सबकी आखे हम पर गड़ जाती। भाषा न समझने की वजह से हम

लोग उस वातावरण से एकरूप नही हो सके। इस कारण दस-पाच मिनट के भीतर ही हम लोगो को वहासे उठकर चला आना पडा। इस ढंग के नाटक जापान की अपनी विशेषता है।

एशिया के देशों मे जापान हमेशा आजाद और ताकतवर देश रहा है, इसलिए किसी तरह की गुलामी वहा के लोग पसद नही करते। जापानियो की एक विशेषता यह है कि वे आपके अच्छे-से-अच्छे दोस्त हो जायगे, फिर भी राजनैतिक दृष्टि से उनके मन मे क्या विचार है, इसका आपको पता नही चल सकेगा। यह एक बडा राष्ट्रीय गुण है। हमे भी यह चीज उनसे सीखनी चाहिए। हमारे यहा तो लोकतत्र के नाम पर इतनी आजादी होगई है कि हर व्यक्ति खुले तौर पर देशवासियो और विदेशियों से भी राजनैतिक चर्चा और आलोचना करता रहता है। हम लोग विदेशियो के सामने भी अपनी सरकार की बुराई करते है और इसमे हमको कुछ हिचकिचाहट नही होती।

जापानी लोग स्वाभिमानी तो है ही, साथ ही देशभक्त भी है। जापान में ही विदेशियों के ऐसे अड्डे हों जहां उन लोगो का प्रवेश भी निषिद्ध हो, यह उन लोगों को कैसे सहन हो सकता है? और फिर मनाही कोई सैनिक या मिलिटरी की गोपनीयता को कायम रखने के लिए नही है, बल्कि वहा अमेरिकन लोग परिवार-सहित रहते है, इससे एशियाई लोग, जिन्हे वे अपने से नीचा समझते है, वहा नही जावे, इसलिए है। अमेरिकन लोगो को रहने-सहने मे किसी तरह की कठिनाई पैदा न हो, उनकी स्त्रियो और बाल-बच्चों को आने-जाने मे किसी तरह का सकोच और असुविधा न हो, इसीसे यह नियम बना दिया गया है।

स्वाभाविक ही है कि इससे जापानियो के स्वाभिमान को बहुत धक्का लगा है और मन-ही-मन भीतर से वे बहुत असतुष्ट और नाराज है। पर करे भी तो क्या ? लडाई मे उनकी हार हुई। हारे हुए देश के स्वाभिमान की कौन परवाह करता है ? इसलिए अभी तो वे चुपचाप वैठे है, लेकिन पहला मौका मिलते ही जापानी लोग इस तरह के अमरीकी आधिपत्य से जल्द-से-जल्द छुटकारा पाना चाहेगे, इसमे कोई शक नही।

जापान के एक प्रमुख बुजुर्ग व्यवसायी से बात हो रही थी। वह कई वर्ष पहले भारत मे भी रह चुके है। वे पिताजी के मित्रों मे से थे और उनका परस्पर व्यापारिक सबध भी था। पिताजी को बहुत छुटपन मे ही रायबहादुरी और ऑनरेरी मजिस्ट्रेटी मिली थी, तब उन्होने पिताजी से कहा था कि अग्रेजो की पदवी क्यो स्वीकार करते हो ? अग्रेज तो तुमको गुलामी मे रखकर लूट रहे है। उनकी इज्जत तुम्हे नही करनी चाहिए। पिताजी अग्रेज अफसरो को दावत आदि देते थे तब भी ये उसमे शामिल नही होते थे। मुझसे कहने लगे—"तुम्हारे पिताजी तो बाद मे गाधीजी के साथ होकर अग्रेजो से बराबर लडे। तुम्हारा देश आजाद होगया, लेकिन हम अब गुलामी मे फस गए।" उस समय जापानी सिक्का 'येन' से हमारे रुपये की कीमत अधिक नही थी। लेकिन अब एक रुपये मे ७५ येन आते है ! उनके मन के भीतर गहराई मे जो दुःख था वह इन उद्गारो से साफ जाहिर होता है।

अपने राजा का मान अब भी यहा बहुत ज्यादा है। पुराने लोग तो अभी भी राजा को 'ईश्वर का अवतार' मानते है। नई

पीढ़ी यद्यपि राजा को मान की दृष्टि से देखती है और चाहती भी है, तथापि अवतार की वह भावना नही रही। राजा भी भले और मिलनसार है। वहाकी सरकार राजा के लिए बहुत खर्च करती है। राजा को अवतार मानने की जो भावना जापानी लोगो मे रही है, उसकी वजह से लोगो को आपस मे भी मीठा सबध कायम रखने मे मदद मिलती है। नौकर अपने स्वामी के प्रति काफी आदर और भक्ति का भाव रखते है और अपना काम ईमानदारी से करना कर्त्तव्य समझते है, इसलिए वहा के मजदूर मेहनती है। हडताल पहले तो होती ही नही थी और अब भी बहुत कम होती है। मजदूर, मिल-मालिक, सरकार, व्यापारी, आदि सब मिलकर देशहित की बाते सोचते है। एक-दूसरे की तकलीफ समझकर उसे दूर करते है और मिलकर काम करते है। वे समझते है कि इसीसे उनका देश ताकतवर हो सकेगा। उनकी प्रगति तेजी से हो रही है, उसका एक कारण यह भी है।

मदिर वगैरा यहां कोई खास नही है। निक्को मे एक अच्छा मदिर जरूर है, पर यह भी हिंदुस्तान के दक्षिण के मदिरो की तुलना मे बहुत मामूली है। फिर भी सारी दुनिया मे उसका नाम व प्रचार है। यहा यह कठिनाई जरूर रही है कि भूकंप आदि की वजह से पुराने जमाने मे लकडी के मकान बनवाने पड़ते थे। उनमे हमेशा आग लगने का डर रहता था और कभी-कभी आग लग भी जाया करती थी। इसलिए प्राचीनता की दृष्टिसे यहा विशेष ऐतिहासिक चीजे यहा देखने को नही मिलती है। लेकिन यहा की छोटी-से-छोटी जगह को भी ये लोग अच्छी तरह से सुरक्षित रखते है, यात्रियो को वहा ले जाते है और

उनको उसका पूरा साहित्य देते है। यद्यपि यहा देखने लायक वहुत जगहे नही है, फिर भी प्रचार करके उस कमी को कुछ हद तक पूरी करने की कोशिश करते है।

जब हम लोग जापान पहुचे, उस समय वहा के बच्चो की छुट्टिया थी। जहा-कही छोटे-से-छोटा दर्शनीय स्थान देखने हम पहुचे, वही कोई चारसौ-पाचसौ विद्यार्थी (लडके-लडकिया) स्कूल की वर्दी मे अध्यापको की देख-रेख मे घूमते मिले। स्कूल के अधिकारियो के मार्गदर्शन मे छुट्टियो मे जापान के सारे बच्चो को देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक घुमाया जाता है। जापान मे शायद ही कोई विद्यार्थी होगा जिसने जापान के राजनैतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और प्राकृतिक दृष्टि से देखने योग्य स्थान अपनी आखो से न देखे हो। बच्चो के लिए विशेष प्रबध होता है। खास बसे होती है, जिनमे लाउड स्पीकर, मार्गदर्शक आदि की व्यवस्था होती है। मार्गदर्शक सब बाते उनको समझाते है और फिर समय मिलने पर खूब गाते-बजाते है। बच्चो मे अनुशासन बहुत रहता है, यहातक कि कही-कही ऐसा भी अनुभव होता है कि वह जरूरत से अधिक है। बडे वच्चो को भी इतना शात और अनुशासनशील देखकर कभी-कभी यह आशका होने लगती है कि कही इसकी वजह से उनके जीवन मे उत्साह की कमी न पैदा होजाय! वच्चो से भरी हुई खास रेलगाडिया जाती है और इसमे उनका खर्च वहुत कम आता है। होटलो मे भी वहुत सस्ते दामो मे उनको रखने की हिदायत है। सरकार होटलो से ऐसे वच्चो को ठहराने पर कर नही लेती।

सारे वच्चे एक ही पोशाक मे एक साथ घूमते है—एक अनु-

शासन एक तरह का खान-पान, एक तरह का रहन-सहन, इस-लिए ऊच-नीच की भावना अपने-आप निकल जाती है और राष्ट्रीय भावना जागृत होती है। सारे देश के बारे मे उनको व्यक्तिगत जानकारी रहती है और किसीसे कभी चर्चा करे, तो अपने स्वत. के अनुभव की बात वे सुना सकते है।

हमारे देश मे तो वहा की अपेक्षा सैकड़ो चीजे बहुत सुदर और देखने योग्य है। सास्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से भी उनका महत्व कुछ कम नही है। मेरे खयाल से हमारे स्कूली बच्चो को जापानी बच्चों की तरह देश-पर्यटन कराना हमारी दूसरी पचवर्षीय योजना का एक आवश्यक अग होना चाहिए। पचवर्षीय योजना के अतर्गत जो बड़े-बडे बाध आदि बने है वे भी उन्हे बताये जा सकते है।

हम लोग जापान का ज्वालामुखी पहाड—आसो देखने गए हुए थे। वहां भी स्कूल के सैकड़ो बच्चे मौजूद थे। पहाड़ के नीचे उतरने मे हमे कुछ देर होगई। लौटकर देखा तो हमारी बस जा चुकी थी। लौटने का कोई और साधन नही था। हम लोग चिता मे पड़ गए कि अब क्या होगा। सिर्फ बच्चोवाली एक खास बस रह गई थी। उसमे भी बिलकुल जगह नही थी। फिर भी विदेशियो को संकट मे देखकर उन्होने हमे भी साथ मे बैठा लिया। बस चली और बच्चो का गाना शुरू हुआ। गाइड एक लड़की थी। वह और बच्चो के साथ के मास्टर आदि भी गा रहे थे। गाइड को इसकी विशेष शिक्षा मिली थी, ऐसा लगता था। बीच-बीच मे कहानी व हँसी-मजाक भी चलता। बच्चे सब खूब खुशमिजाज थे। कुछ ही देर

मे उन्होने हम लोगो से दोस्ती कर ली और हम भो भारत के कुछ गाने गाने को बाध्य किया। जब हम उनसे जुदा हुए तो खूब जोरो से हाथ हिला-हिलाकर सबने हमको बडे प्रेमपूर्वक विदा दी। यह बच्चो के साथ अनपेक्षित यात्रा बडी मजे की रही और कई बार उसकी याद आ जाती है। पहले तो बस चूक जाने पर हमे बडी फिक्र होगई थी, पर बाद मे लगा कि अच्छा ही हुआ, नही तो बच्चो के साथ इस तरह से यात्रा करने का मौका कैसे मिलता ।

: ६ :

जापानियों की मिलनसारिता

जापानी लोग स्वभाव से बहुत मिलनसार और मीठे लगे। ताज्जुब होता है कि इतने अच्छे लोग लडाई मे इतने कठोर और बर्बर कैसे हो जाते हैं ! किसी जापानी से सडक पर भी कुछ पूछना चाहे तो वे नम्रता से आपका अभिवादन करेगे और जो चीज आप पूछेगे उसको अच्छी तरह से समझाने की कोशिश करेगे। सभव होगा तो आपके साथ जाकर आपकी जगह पर पहुंचा भी देगे। हमारे एक मित्र ने बताया कि कठोर-से-कठोर भापा का प्रयोग करने पर भी जापानी यही कहते है कि 'तुम मूर्ख हो।' इससे अधिक कठोर शब्द उनकी भापा मे ही नही है। एक-दूसरे से वे लोग मिलते है तो बड़े आदर और नम्रता से। स्त्रिया भी पुरुषो के प्रति आदर और नम्रता रखते हुए काफी झुककर मिलती है। यूरोप के समान सिर्फ पुरुषों का ही स्त्रियो के प्रति इकतरफा नम्रता रखने का रिवाज यहा नही है।

एक बार जब हम चूजनजी झील देखने गए हुए थे तो एक मजेदार बात हुई। लिफ्ट से नीचे सार्वजनिक रेडियो लगा हुआ था। लाउड स्पीकर के द्वारा उसकी आवाज सब जगह पहुच रही थी। कोई भाई जापानी भापा मे कुछ बोल रहा था। इससे हम लोगो का उस ओर कोई ध्यान नही गया। पर इमाईजी[1] दौडकर रेडियो के नजदीक पहुचे और हमे भी पास बुलाने लगे।

१ एक जापानी साधू जो वहां हमारे साथ आए हुए थे।

पास पहुचने पर उन्होने कहा कि इसमे तो ग्राप लोगो का ग्रौर ग्रापके पिताजी का नाम लिया जा रहा है। कोई ग्राप लोगो के बारे मे ग्रपने सस्मरण सुना रहा है। हम लोगो को बड़ा ताज्जुब व कौतूहल हुग्रा कि यह कौन व्यक्ति होगा। साथ ही खुशी भी हुई कि विदेश मे कोई रेडियो पर हमारी बात कर रहा है ग्रौर ग्रनायास ही हमे उसे सुनने का मौका मिल गया, नही तो हमे उस वारे मे क्या पता चलता।

वाद मे हमे मालूम पडा कि पिताजी के एक पुराने जापानी मित्र श्री सुकाडा, जो वहुत वर्षो पहले भारत मे रह चुके थे, रेडियो मे ग्रपने सस्मरण सुना रहे थे। ग्राजकल वह जापान की सवसे वडी कपडे की मिल के ग्रध्यक्ष है। हम लोगो से मिलकर वह वडे प्रसन्न हुए थे ग्रौर उनको ग्रपने उन दिनो की याद, जब वह भारत मे रहे थे, ताजा होगई थी। पिताजी के प्रति उनका वडा प्रेम था। वह भी उन्हे वार-वार याद ग्रा रहा था। इसलिए इसीको उन्होने उस दिन के वोलने का विषय वना लिया था।

वह उम्र मे पिताजी से वहुत वडे है। हम लोग तो उनके सामने वच्चे-जैसे है, पर उन्होने हमारी इतनी खातिर की कि हम गद्गद् होगए। खुद दो-तीन वार हमारे होटल मे ग्राये। हमे ग्रपने घर ले गए ग्रौर वहा ग्रपनी पत्नी, वच्चो, वहुग्रो व उनके वच्चो से परिचय कराया। ग्रपना सारा घर घूमकर वताया ग्रौर जापानी लोग कैसे रहते है यह ग्रच्छी तरह से समझाया। हमारे सम्मान मे एक खासा भोज भी दिया। वहा के वडे-वडे व्यवसाइयो से हमारी मुलाकात करवाई। इतना ही नही, जव-

तक हम जापान मे रहे, हमारी बराबर देख-भाल करते रहे। उनसे मिलकर हम लोगों को सचमुच बड़ा अच्छा लगा और उनके सारे परिवार से हम लोग घुलमिल गए।

यहाके कुछ मित्रो के मार्फत एक जापानी लडकी से हमारा अच्छा परिचय होगया था। जापान मे भाषा की कठिनाई काफी होती है, इसलिए हम एक मार्गदर्शक मित्र की खोज मे थे। टोशिको नाम की एक लड़की ने, सिर्फ इतना जानने पर कि हम लोग भारत से आये है, हमारा मार्गदर्शक बनना सहर्ष स्वीकार कर लिया। बडी खुशी के साथ अपना सारा समय हमारे साथ व्यतीत करने को वह तैयार होगई। भारत के प्रति उसके प्रेम का यह एक दिग्दर्शन था। हीरोशिमा के पास एक देहात मे रहनेवाली यह लड़की अपनी कालेज की शिक्षा के लिए टोकियो मे रहती थी। न जाने क्यो, शुरू से ही भारत के प्रति उसका बडा आकर्षण रहा है। अग्रेजी जानती है और भारत के प्रति उसका विशेष प्रेम होने से वहा के कुछ व्यक्तियों ने महात्माजी की अहिसा पर लिखी किताब का जापानी अनुवाद करने का काम उसको सौपा था। अनुवाद करते-करते उसको इस किताव का गहरा अध्ययन करना पड़ा। उसपर महात्माजी के विचारो का बहुत प्रभाव पड़ा। जापान मे शाकाहार-जैसी कोई वस्तु नही है, फिर भी वह बहुत प्रयत्न कर रही है कि मांसाहार त्याग दे। अपने व्यक्तिगत जीवन मे भी गाधीजी के सिद्धातो पर चलने की बडी कोशिश कर रही है। भारत पर कोई भी किताब या अन्य साहित्य मिले तो बड़ी प्रसन्नता से पढ़ती है। भारत आने के लिए वड़ी उत्सुक है और राह देख रही है कि कब यहां पहुंच सके।

एक जापानी लडकी, जिसकी उम्र कोई २१-२२ वर्ष से अधिक नही होगी, भारतवर्ष के प्रति क्यो इतनी आकर्षित हुई, यह आश्चर्य की बात है। गाधीजी और उनके पहले भी जो तपस्वी और महर्षि अपने यहा होगए है, उनकी तपस्या का ही यह फल है। जिस समय हम लोग जापान से जहाज मे वापस आने के लिए रवाना हुए, उस रोज वह खूब रोई, मानो किसी निकट व्यक्ति का बिछोह हो रहा हो।

कुछ ही रोज मे मेरी पत्नी विमला और मेरा उससे इतना निकट परिचय होगया कि हमे यह खयाल ही नही आता कि वह हमारे स्वजनो मे नही है। एक इतनी दूर के विदेश की रहने-वाली लडकी, उससे हमारा क्या लेन-देन ! फिर भी हम लोगो का विदा होने पर जी भर आया।

इसी तरह से वहा दो जापानी बौद्ध भिक्षुओ से भी मिलना हुआ। उनमे से बडे साधु श्री मारूयामा कई दिनो तक वर्धा तथा सेवाग्राम मे बापूजी व पिताजी के पास रह चुके थे। उनके दूसरे साथी श्री इमाई भी भारत मे करीब दो वर्ष रह चुके है और बहुत अच्छी हिदी लिख और बोल लेते है। श्री मारूयामा तो पिताजी को अच्छी तरह जानते थे। मै भी उनसे मिला था, लेकिन इमाईजी से तो यही मुलाकात हुई थी।

श्री मारूयामा के कहने से इमाईजी हम लोगो के साथ काफी घूमे। टोकियो मे हर तरह की सास्कृतिक और धार्मिक प्रवृत्तियो से उन्होने हमे परिचित कराया। वे हमको लेक चूज-नजी व निक्को ले गए, जहा जापान का सर्वोत्तम मदिर है। यह भी बड़े मजे के आदमी है। हम तो पहले समझते थे कि ये केवल

साधु है। इनमे रूखापन होगा। साथ रहने पर कोई हँसी-मजाक या आनददायक वातावरण नही रहेगा, लेकिन वह तो ठीक इससे उल्टे निकले। खूब रसिक है। दुनियादारी की सारी चीजो से जानकार, उनको अच्छी तरह से समझते हुए भी उनसे निर्लिप्त। इमाईजी को भारत से विशेष प्रेम है। भारत बुद्ध भगवान का जन्मस्थान है, इसका तो आर्कषण है ही, पर वैसे भी उनको बीच-बीच मे यहा आना अच्छा लगता है। अभी भी वह यहा आगए है। विनोबाजी का भूदान का काम उन्हे बहुत पसद है और उन्हे इसमे बहुत रस है।

भूदान की भूमिका और कार्य-प्रणाली अच्छी तरह से समझ लेने पर जापान मे भी वह इसका प्रचार करना चाहते है। बापू व विनोबा पर इनकी बड़ी श्रद्धा है। इनके साहित्य का जापान में निरतर प्रचार करते है। बुद्ध भगवान पर इनकी असीम आस्था है। यहा के बौद्ध भक्तो को भी इनकी पूरी मदद रहती है। इनका यह भी विचार हो रहा है कि बौद्ध गया मे विनोबाजी द्वारा चलाये गए समन्वय-आश्रम मे ही क्यो न बस जायं। कुछ समय ये पद-यात्रा मे विनोबाजी के साथ थे। तब विनोबाजी इनसे जापानी भापा सीखते थे।

इस बारे मे, हाल ही मे विनोबाजी की यात्रा मे से लिखा हुआ उनका मेरे नाम से एक पत्र आया है, वह बडे मार्के का है। इससे उनकी मनोदशा का स्पष्ट चित्र मिलता है। उस पत्र का कुछ अश नीचे दे रहा हूं। पत्र हिंदी मे ही लिखा हुआ है।

"तारीख २० दिसबर से पू० विनोबाजी के साथ बेजवाडा से यात्रा शुरू की। मै गांव-गाव घूमकर भारत का सच्चा दृश्य

देख रहा हू । शहर मे सच्चे भारत का दर्शन नही होता । सच्चे भारत का दर्शन तो गाव मे ही है, ऐसा मेरा खयाल है ।

"मै पू० विनोबाजी के आदोलन को सिर्फ भूमि-क्राति और सपत्ति के समान बटवारे की दृष्टि से नही देखता हू । बौद्ध धर्म मे बोधिसत्व का सबसे बडा चरित्र है दान-पारमिता[1] और बोधिसत्व के नियमो मे सबसे बडा नियम है 'अहिसा परमो धर्मः' । इसलिए सिर्फ अहिसा नही चल सकती । अहिसा के साथ दान-पारमिता भी चलनी चाहिए ।"

"ये बाते हमारे गुरुजी हमेशा कहा करते है । इसलिए मै विनोबाजी के आदोलन को इस दृष्टि से देखता हू और मुझे बडा आनद आता है ।"

---

१ दान, शील, शान्ति, वीर्य, ध्यान तथा प्रज्ञा की उत्कृष्टता ।

: ७ :

गीशा लड़कियां

गीशा लडकियो के बारे मे जापान के बाहर काफी सुना जाता है। गीशा उन लडकियो को कहते है जो बड़े सुरुचिपूर्ण ढग से पुरुषो का मन-बहलाव करती है। जापान की यह एक विशे-पता है जो वहुत पुराने काल से चली आ रही है। शाम को थके-मादे लोग मानसिक विश्राति के लिए इनके यहा चले जाते है।

हमने भी इनके बारे मे काफी सुना तो स्वाभाविक रूप से वहा जाने का मन हुआ। प्राय वहा पुरुष ही जाते है, स्त्रियो को ले जाने का रिवाज नही है। लेकिन हम लोगों को तो मन-बहलाव के अलावा कौतूहल अधिक था। इससे विमला और मैं दोनो ने साथ-साथ ही वहा जाने का तय किया।

जव हम लोग वहा पहुचे तो चार-पाच गीशा युवतियो ने सुदर किमोनो पहनावे मे नम्रता और मिठास से अभिवादन करते हुए हम लोगो का स्वागत किया। एक ने अपने हाथो से हम लोगो के जूते खोले और चप्पल पहनाकर भीतर ले गई। एकदम साफ-सुथरा मकान था। जिस कमरे मे वे हमे ले गई वह वहुत ही सुरुचिपूर्ण ढंग से, पर वहुत कम चीजो द्वारा, सजाया गया था। कमरे मे लकडी के फर्श पर चटाइया विछी थी और उनके कोनो पर कीले ठुकी हुई थी। उसीपर छोटी-छोटी गद्दियों पर हमें वैठाया गया। हमारे सामने एक छोटी मेज थी, जिसपर हम लोग खाना खानेवाले थे। हम लोग शाकाहारी थे और

शराव भी नही पीते थे, यह उनके लिए मुसीवत की बात थी। फिर भी जो कुछ उनके पास था, उसे वे लडकिया बडे सुदर ढग से परोसती रही, साथ ही सुरुचिपूर्ण तरीके से मन-वहलाव की वाते भी करती जाती थी। उन्हे कोई खास अग्रेजी नही आती थी, नही तो, कहते है, वातचीत करने मे वे इतनी निपुण होती है कि हर किसीका मन प्रसन्न कर देती है। सारी थकावट काफूर हो जाती है। वात को बडे लहजे के साथ कहने और तुरंत उत्तर देने की कला का उन्हे विशेष शिक्षण मिलता है। जैसे मुगल-दरवार मे वातचीत करने का विशेष तरीका हुआ करता था और जिसे सुनकर अब भी दिल बाग-बाग हो जाता है, उसी तरह का कुछ तरीका उनका भी होता है। भोजन करते समय आम-तौर से शराब का दौर तो चलता ही है और चाहे तो उसी समय या उसके वाद नाच-गान भी होता है। शराव का तो वहा आम रिवाज है।

वडे-वडे व्यापारी अपने ग्राहको को खुश करने के लिए उन्हे ऐसी जगह ले जाते है। ऐसे घरो मे जाने मे वेइज्जती नही समझी जाती और लोग निस्सकोच जाते है। अच्छे घरो मे सीमा के बाहर कोई नही जा सकता तथा वहा जाने पर अच्छा ही लगता है। लेकिन ऐसे पेशो मे वुराइया घुस आने की सभावना तो पूरी है ही; और इसीलिए कुछ जो नीचे दर्जे के और सस्ते घर है उनमे खराबिया भी वहुत घुस गई है। ऐसे घरो की वजह से गीशा लडकियो का पेशा वडा अपमानित हो गया है। फिर भी अपने ढग की यह एक विशेप सस्था हो गई है इसमे कोई शक नही।

: ८ :

खेल-कूद

विद्यार्थी और युवक खेल-कूद के बहुत शौकीन है। बेसबॉल सबसे अधिक लोकप्रिय खेल है। हम लोगो ने भी दो-तीन मैच देखे। वैसे तो यह खेल भी क्रिकेट के ढग से ही खेला जाता है, लेकिन इसमे खेल की रफ्तार तेज होती है और देखनेवालो की दिलचस्पी बराबर बनी रहती है। वैसे यह खेल सबमे ज्यादा अमरीका मे प्रचलित है। उन्हीकी वजह से जापान मे भी चल पडा है। अमरीका मे तो अच्छे खिलाडी को साल मे डेढ-दो लाख रुपये तक की कमाई इस खेल मे खेलने से हो जाती है। मामूली खिलाडियों को भी बीस-पच्चीस हजार रुपये आसानी से मिल जाते है। क्रिकेट मे तो समय बहुत बरबाद होता है। चार-पाच दिन तक एक मैच चलता है और उसमे बहुत कम मौके ऐसे होते है जबकि खेल दिलचस्प हो। लेकिन बेसबॉल का खेल तो ढाई-तीन घटे मे ही पूरा हो जाता है और दिलचस्पी हमेशा बनी रहती है। हर शहर मे स्टेडियम बने है, जहा बराबर मैच होते रहते है। खेल अधिकतर शाम को अंधेरा हो जाने पर होता है, लेकिन स्टेडियम पर बिजली की रोशनी खूब करदी जाती है, जिससे खेल देखने मे जरा भी कठिनाई नही होती। बेसबॉल 'प्रोफेशनल' को देखने बहुत लोग जाते है। कालेजों के आपस के खेल मे भी लोग दिलचस्पी लेते है। अपने-अपने कालेज के लडके अलग-अलग बने हुए स्थानो मे एक साथ बैठते है। उनका ताली बजाना और

नारा लगाना, गाना गाना अपने-अपने मार्गदर्शको के आदेश पर होता है। उनके इशारे पर अपनी-अपनी टीम के खिलाडियो को जोश देने के लिए ये लोग बराबर एक साथ आवाज लगाते है। कभी-कभी तो कालेज के बैड को भी साथ ले जाते है। मैच बराबरी का रहा तो दर्शको मे भी बड़ा जोश आ जाता है।

कुश्ती भी यहा लोकप्रिय है। कुश्ती के मुख्य दो प्रकार है। एक को जूडो कहते है, जिसको हम लोग जिजित्सू के नाम से जानते है। इसे वे आत्मरक्षा की कुश्ती बताते है। इसके स्कूलो मे लडके हजारो की सख्या मे जाते है। इसमे सबसे पहले खुद ही गिरने का अभ्यास करना पडता है। ठीक ढग से गिरने पर बहुत कम चोट कैसे आये, यह इस कुश्ती मे सीखने की खास बात है। जब हम लोग देखने गए थे तब सयोगवश कुछ खास अतिथि आये हुए थे। उनके लिए वहा विशेष प्रदर्शन किया गया था। हमे भी अनायास ही इसे देखने का मौका मिल गया।

इस तरह की कुश्तियो की खासियत यह है कि कमजोर विरोधी अपने से अधिक ताकतवर का सामना कर सकता है। अपने विरोधी की ताकत का खुद उपयोग कर लेना, यह इसकी खूबी है। सामनेवाला जब अपनी पूरी ताकत लगा रहा हो उस समय कमजोर आदमी हट जाय, चकमा देदे, तो ताकतवर आदमी अपनी ताकत के वजन को लेकर खुद ही जमीन पर गिर पडता है।

दूसरे प्रकार की कुश्ती को सुम्मो कहते है। इसमे आम लोग भाग नही लेते। लेकिन इसे देखनेवालो की बडी भीड रहती है। हमे टिकट बड़ी मुश्किल से मिले। जिस दिन वहा के राजा गए थे उसी रोज हमे भी जाने का मौका मिल गया। वहा के

लोग तो इसे बहुत उत्तेजक मानते है, लेकिन हम लोगो को ऐसा कुछ नही लगा। इसके विपरीत हमे तो वह नीरस ही लगा। एक दिन मे करीब चालीस-पचास कुश्तिया होती है। एक छोटा-सा गोलाकार मैदान बना होता है,जिसपर कुश्ती होती है। यदि किसी पहलवान ने अपने प्रतिद्वद्वी को नीचे गिरा दिया या गोले के बाहर निकाल दिया तो वह जीत मानी जाती है। इसमे तेजी आने के पहले ही कुश्ती खतम हो जाती है। पाच-सात मिनट तो भिड़ने के पहले इधर-उधर करने मे बीत जाते है और भिड़ते है तो सिर्फ तीस चालीस सैकण्ड के लिए। कुश्ती इससे ज्यादा नही चल पाती। एक चीज जरूर दर्शनीय होती है। वह यह कि सारे पहलवान कम-से-कम ३०० पौण्ड से ऊपर के ही होते है। लेकिन ३५०-४०० पौण्ड के भी बहुत-से पहलवान होते है, और जब भिडते है तो ऐसा मालूम होता है, जैसे दो हाथी के बच्चे भिड़ गए हो। आमतौर से जापानी लोग कद मे नाटे होते है, इसलिए आश्चर्य होता है कि इतने स्थूल शरीर के पहलवान वे कैसे पैदा करते है।

बर्फ के ऊपर स्केटिग और रोलर-स्केटिग करना भी बहुत प्रचलित है। रोलर-स्केटिग करने एक दिन हम लोग भी पहुच गए। शुरू-शुरू मे सीखने मे जरूर थोडा समय लगता है, लेकिन खेल यह भी एक दिलचस्प मालूम देता है। 'बोलिग सेटर' मे भी काफी लोग जाते है। लोहे की बडी गेद को फेककर कुछ दूर पर खड़े १० डण्डो को गिराना होता है। जितनी कम गेद फेककर सारे डडे गिरा दिये जाय, उतना ही अच्छा माना जाता है।

टेबिल टैनिस तो यहा का प्रसिद्ध खेल है ही। दुनिया के

कई सर्वश्रेष्ठ खिलाडी उन दिनो वहा मौजूद थे। उनकी कोई प्रतियोगिता नही हो रही थी, इससे हम लोगो को उनका खेल देखने का मौका नही मिला। और लोग तो टेबिल टेनिस साधारण लकडी के वल्ले से खेलते है। इन लोगो ने उस बल्ले पर स्पज लगाकर एक नई तरह का वल्ला वना लिया है।

घर के भीतर के खेलो मे 'पचिको' वहुत ही प्रचलित है। आठ-दस आना देकर करीव बीस-पच्चीस इस्पात की गोलिया मिल जाती है। इनको छेद मे से डालकर स्प्रिग के हैडल से खीचकर छोड देने पर ये गोलिया अलग-अलग खानो से होती हुई किसी एक खाने मे गिर जाती है। कई बार तो वे फालतू खानो मे गिरती है और बदले मे कुछ नही मिलता। लेकिन ठीक खाने मे गिर गई तो इसी तरह की पाच-दस नई गोलिया मिल जाती है। इस तरह यह खेल विना थकान के घटो खेला जाता है। एक तरह के जुए का-सा मजा इसमे आता है। इस तरह के खेल की सैकडो दूकाने टोकियो तथा अन्य शहरो मे है। एक-एक दूकान मे साठ-सत्तर मशीने होती हे और खेलनेवालो की भीड लगी रहती है। कई वार वहुत-सी गोलिया जमा हो जाती हे, तो उनको लौटाने पर चॉकलेट आदि चीजे मिल जाती है। जापान का यह एक तरह का राष्ट्रीय खेल होगया है, यह कहा जाय तो अतिशयोक्ति नही होगी। विमला पर भी इसका खब्त सवार हो गया। थक-थकाकर रात को देर से लौटते। तव भी होटल मे आने से पहले थोडी देर के लिए पचिको खेलने का उसका आग्रह जरूर रहता। जाते थोडी देर के लिए, पर मन मेरा भी लग जाता। फिर तो दूकान वद होती तवतक खेलते रहते। विमला

का तो इसमे 'लक' भी बहुत चलता। वह बहुत जीतती। एक दिन तो वह जीतती ही चली गई, यहातक कि उसके चारो तरफ खेलनेवालो की भीड इकट्ठा होगई।

९ :

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

हम लोग जब जापान मे थे तभी अतर्राष्ट्रीय व्यापार-मेला टोकियो मे हुआ था, जिसका उन्होने बडे पैमाने पर, खासकर अपना माल विदेश निर्यात करने के हेतु, इतजाम किया गया था। उसमे छोटी-बडी हर तरह की मशीने उपलब्ध थी। बहुत जल्दी-जल्दी एक किनारे से दूसरे किनारे तक सिर्फ चक्कर लगाने मे ही दो दिन लग जाते थे। अपने यहा की प्रदर्शिनियो की तरह वहा किसी चीज की बिक्री नही होती थी, बल्कि सिर्फ साहित्य मिलता था और मशीने दिखाई जाती थी। उनके बारे मे कुछ पूछताछ करना हो तो उनका समाधान कर दिया जाता था। मेले के सिलसिले मे लाखो रुपयो का तो सिर्फ साहित्य ही छपा होगा। हर दूकान पर मशीनो की विस्तृत जानकारी देनेवाला साहित्य मुफ्त दिया जाता था। खेती करने की भी सब तरह की बडी मशीने और छोटे औजार वहा थे।

इन्ही दिनो टोकियो मे एक दूसरा अतर्राष्ट्रीय मेला लगा हुआ था। यह मोटरो का था, इसमे यात्रियो को मोटर, सामान लादने की मोटर, तीन चक्को की गाडिया, मोटर-साइकिल, स्कूटर आदि सब तरह की गाडिया शामिल थी और जापान मे कौन-कौन-सी गाडिया बनती है, इन सबका पूरा विवरण भी हर एक को बताया जाता था।

इन मेलो के साथ ही अतर्राष्ट्रीय कॉमर्स का पच्चीसवा

अधिवेशन भी टोकियो मे हुआ। महाराष्ट्र कॉमर्स चेंबर की तरफ से मै इसके भारतीय प्रतिनिधि-मडल मे शामिल था। व्यापारियो की सबसे बडी सस्था का अधिवेशन किसी एक एशियाई देश मे होने का यह पहला ही मौका था। इसका गौरव सबसे पहले जापान को मिला, और यह सब तरह से उपयुक्त ही था। इन लोगो ने इस सम्मेलन को हर तरह से सफल बनाने मे बडी मेहनत की। दुनिया के सारे देशो से करीब बारहसौ प्रतिनिधि इकट्ठे हुए थे। प्रतिनिधियो के साथ लगभग तीनसौ स्त्रिया भी पहुच गई थी। सारे टोकियो मे सम्मेलन की बडी धूम रही। जहा कही जाते, हम लोगो का विशेष रूप से स्वागत होता। वहा के बडे-बड़े नेताओ ने हम लोगो को खाने के लिए बुलाया। जापान के बारे मे विदेशो से आये हुए अतिथि लोग अच्छा असर लेकर जाय, इसकी अधिकारियो के अलावा, आम जनता ने भी पूरी कोशिश की। ससार के सारे व्यावसायिक नेता वहां से बहुत खुश होकर गए। उनको अनुभव होगया कि एशिया मे भी इतना बडा अतर्राष्ट्रीय सम्मेलन अच्छी सफलता के साथ किया जा सकता है।

भारत से कोई ४९ प्रतिनिधि यहा पहुचे थे। दस प्रतिनिधियो के साथ उनकी स्त्रिया भी थी। भारत से ऐसे सम्मेलन के लिए इतनी अधिक सख्या मे प्रतिनिधि पहली ही बार गये थे। यह ठीक भी था, क्योकि यह पहला ही अवसर था जबकि ऐसा सम्मेलन किसी एशियाई देश मे हो रहा था।

कान्फ्रेंस का मुख्य विषय बहुत सोच-समझकर रखा गया था—"एशिया की समस्या—दुनिया की प्रगति।" सब लोगो ने

इसे मान लिया था कि एशिया की समस्याओं को हल किये विना और उसकी प्रगति के बगैर दुनिया की प्रगति होना सभव नही है। यह बात सबकी समझ मे आ रही थी कि एशिया के उन देशो की तरफ, जो गरीब है और जहा औद्योगिक उन्नति कम हुई है, धनवान देशो को अधिक ध्यान देना चाहिए। इन सव बातो की जानकारी होते हुए भी उनमे से कई लोगो के दृष्टिकोण मे कुछ फर्क था, जो स्वाभाविक रूप से हम लोगो को नही रुचा। उनका कहना था कि आपको मदद की जरूरत है, यह ठीक है और हम मदद करना भी चाहते है, पर आप हमसे मदद मागिये और हम खुशी से देगे। आप उसे वरावरी के नाते या अधिकारपूर्वक कैसे माग सकते है ? आखिर आप तो मागनेवाले ठहरे और हम बिना किसी वदले के मुफ्त मे आपको देनेवाले! देनेवाले और लेनेवाले मे फर्क तो रहेगा ही! उनकी समझ मे यह बात नही आरही थी कि गरीब देशो की मदद करना उनके ही स्वार्थ मे है। जवतक गरीब देशो मे रहनेवालो का जीवन-स्तर ऊचा नही होगा, उन देशो मे कम्युनिस्ट तानाशाही आने का डर हमेशा वना रहेगा। इसके अलावा गरीब देशो का जीवन-स्तर वढे तभी उन देशो की पैदावार की खपत वहा हो सकती है। हम लोगो ने इसे समझाने का काफी प्रयत्न किया, लेकिन गरीबो के प्रति धनवानो की जो वृत्ति होती है, उससे उन्हे वचाना वहुत कठिन होता है।

भारत के प्रतिनिधि-मडल के नेता श्री लालजी मेहरोत्रा थे। दूसरे सदस्य थे ववई से श्री आर० जी० सरैया, श्री एम० ए० मास्टर, आध्र से श्री सोमयाजुलू, कलकत्ता से सर विजयसिह

राय और श्री जी० एल० वसल, भारतीय समिति के मत्री। श्री लालजी मेहरोत्रा कई वर्षो से इस सस्था का काम कर रहे है, इसलिए मुख्य सम्मेलन की पहली सभा का अध्यक्ष-पद ग्रहण करने के लिए उनसे कहा गया तो सभी एशियावासियो का मन प्रफुल्लित हो उठा। बाद मे फिलिपाइन के प्रतिनिधि-मडल के नेता ने जब यह कहा कि पिछडे हुए देशो के प्रतिनिधि को ऐसी सभा की अध्यक्षता करते देखकर उनका दिल गद्गद् होगया और उनकी आखो से आसू वहने लगे, तो सव लोगो को और भी अच्छा लगा।

सम्मेलन मे करीब ४७ प्रस्ताव पास हुए। अधिकतर तो सर्वसम्मत ही थे। जिन देशो के प्रतिनिधि सम्मेलन मे भाग लेते है उन देशो की राष्ट्रीय सरकारो, सयुक्त राष्ट्-सघ तथा उससे सवधित अतर्राष्ट्रीय सस्थाओ को ये प्रस्ताव भेजे जाते है और यह उम्मीद रखी जाती है कि वे लोग, जहातक हो, इनपर अमल करे। इस दृष्टि से इन प्रस्तावो का बडा महत्व है। अमरीका व यूरोप के वड़े-से-वडे व्यावसायिक नेता यहा मौजूद थे। इस सम्मेलन मे जेनरल इलेक्ट्रिक, टी० डब्ल्यू० ए०, इपीरियल केमिकल इडस्ट्रीज तथा लॉयड्स वैक के चेयरमैन भी उपस्थित थे।

एक देश से दूसरे देश जानेवाले माल पर चुगी कैसे कम हो, सामान ले जाने मे जो असुविधाए है वे कैसे दूर हो, इस तरह के प्रस्तावो पर भी विचार होता था। मतलव यह कि अतर्देशीय व्यापार कैसे अधिक-से-अधिक वढे यह भावना इन प्रस्तावो मे रहती थी। कभी-कभी कुछ मतभेदवाले प्रस्ताव भी होते थे। समुद्री जहाज चलानेवाली कपनियो के वारे मे

एक ऐसा ही प्रस्ताव था। प्रस्ताव यह था कि जिस देश की कपनी के जहाज चलते हो उस देश को ही ऐसी कपनिया अपनी कमाई पर इनकमटैक्स दे, न कि उस देश को जहा के व्यापार से उनको लाभ होता हो। जहांतक हमारा सवाल है इसका मतलब यह हुआ कि यूरोप की कपनिया भारत के व्यवसाय से तो कमाई करे पर उसपर टैक्स अपने देश को देवे, भारत को नहीं। स्वाभाविक ही था कि अपने राष्ट्र के हित मे न होने के कारण इसका हमने विरोध किया।

: १० :

अर्थ-व्यवस्था

जापानी लोग स्वभावत विक्रेता बहुत अच्छे है। आपसे बडी नम्रता से पेश आवेगे और जिस तरह की सुविधा आपको चाहिए वह देने को तैयार रहेगे। जापान की सारी अर्थ-व्यवस्था इसीपर निर्भर करती है। उनके यहा कच्चा माल बहुत कम पैदा होता है। कच्चा माल बाहर से लाकर उससे चीजे बनाकर फिर विदेशो मे बेचना, यही उनका मुख्य पेशा है। चीन का बडा बाजार उनके हाथ से निकल जाने से उनके सामने बड़ी समस्या उपस्थित होगई है। फिर भी बडी हिम्मत व मेहनत से काम करके, एक हारा हुआ देश होते हुए भी, एशिया के राष्ट्रों में वह आज भी बडा उन्नतिशील देश होगया है।

विदेशियो को इनसे कोई चीज खरीदनी हो तो इनके यहा जो पाच-छ बडे व्यापारिक संगठन है, उन्हीके पास जाना पडेगा। छोटी संस्थाए आपको न भाव बतायगी, न कुछ और। ये ५-६ संस्थाए ही वस्तुओ के भाव आदि पहले ही आपस मे बैठकर तय कर लेती है, जिससे आपको, उनके आतरिक व्यवहार मे प्रतियोगिता होते हुए भी, उसका लाभ नही मिल पाता। उनकी यह बात हमारे लिए भी सीखने योग्य है।

जापानी लोग जो चीजे बनाते है, उनको बेचने का भी उनका विशेष तरीका है। हरएक जिले मे बिक्री की एक केंद्रीय संस्था (मार्केटिंग सोसाइटी) होती है। उस जगह की बनी हुई

सारी चीजो का देश-विदेश मे प्रचार करना और हर जगह उसकी बिक्री करना, इस सस्था का मुख्य काम होता है। जो माल बनानेवाले है, उनको अपने माल को बेचने की फिक्र बहुत कम हो जाती है और चीज का दाम भी ठीक मिल जाता है। हर जिला अपनी-अपनी विशेष चीजो का खूब जोर से प्रचार करता है। उनके लिए विशेष साहित्य छापता है और विदेशो मे आयात करनेवालो से, सब निर्माताओ की तरफ से, बराबर पत्र-व्यवहार करता रहता है। कारखानेदारो और व्यवसाइयो मे मित्सूबिसी सगठन सबसे बडा है। छोटी से लेकर बडी-बडी मशीने तक यहा बनती है और आयात-निर्यात का भी काम होता है। इनके यहा छोटी-बडी इतनी चीजे बनती है कि उनकी सूची देखी जाय तो बहुत कम ही ऐसी चीजे होगी, जो ये न बनाते हो।

यद्यपि जापान ने औद्योगिक प्रगति बहुत बडे परिमाण मे की है, तथापि आज उसके सामने बहुत बडी समस्या उपस्थित है। उनको कच्चा माल मुहमागे दाम पर बाहर से मगाना पडता है। दूसरे महायुद्ध के बाद उनके यहा मजदूरी की दर भी बढ गई है। इसलिए मशीनरी व अन्य वस्तुए लडाई के पहले वे जितने सस्ते दामो मे अन्य देशो को बेचा करते थे आज उतनी आसानी से नही बेच पाते। चीन का बडा बाजार भी उनसे निकल गया है। ऐसी हालत मे जबतक किसी भी सूरत से वे चीजो के दाम घटाते नही, दुनिया की प्रतियोगिता मे ठहरना उनके लिए मुश्किल होगा। जापानी चीजो के बारे मे अन्य देशो मे यह राय रही है कि मशीनरी व अन्य चीजो की किस्म

यद्यपि बहुत ठीक नही होती फिर भी सस्ती बहुत होती है। लडाई के बाद उनकी किस्म मे सुधार हुआ है, फिर भी इस पुराने खयाल को दूर करने मे उन्हे बडी कठिनाई पड़ती है। इसलिए पूरी कोशिश करके उनको अपनी चीजो के दाम कम करना है। जापानी लोग बहुत व्यवस्थित और मेहनत से काम करते है, इसमे कोई शक नही, लेकिन मुझे उनके काम करने के ढग मे कुछ शिथिलता व धीमेपन का आभास हुआ। जहा हमारे यहा बीस आदमियो से काम हो जाता है वहा उनके यहा पच्चीस-तीस आदमी रखते है। इस वजह से भी उनकी चीजो का उत्पादन-मूल्य अधिक हो जाता है। इसकी उनको आवश्यकता पडती है इसलिए वे करते है या ऐसा वहा रिवाज-सा ही पड गया है यह कहना कठिन है। इससे यह लाभ जरूर होता है कि देश के पढे-लिखे नौजवानो मे बेकारी कुछ कम हो जाती है। कारखाने चलानेवालो के पास कुछ अधिक लोग होने की वजह से विदेशियो की देखभाल करने और खुशामद करने के लिए भी वे इन लोगो का लाभ उठा लेते है। व्यक्तिगत सबध हो जाने से व्यापार प्राप्त करने मे कुछ सुविधा तो जरूर होती है; पर इस तरह से उनका खर्चा वहा की बनी हुई चीजो पर पडे यह कहातक उचित है, यह प्रश्न विचारणीय है।

यह सब होते हुए भी आज एशिया मे भारत और जापान ये दोनो देश ही बहुत तेजी से उन्नति कर रहे है, यह स्पष्ट है। दुनिया की राजनीति मे इनकी आवाज की कद्र बढती जा रही है। यह आवाज अधिकाधिक बुलद होनेवाली है, इसमे भी कोई शक नही। हम लोगो को चाहिए कि पश्चिम पर इतना निर्भर

न रहे, वल्कि एक-दूसरे को सहयोग दे और एक-दूसरे को मज-बूत बनावे। भारत और जापान के वीच अधिक व्यापारिक सह-योग व वस्तुओ का आदान-प्रदान होने की आवश्यकता है। इससे दोनो देशो की ताकत वढेगी। जबतक एशियावासी पश्चिम पर निर्भर करेगे, पश्चिम हमारी कद्र कभी नही करेगा। दुनिया का यही रिवाज है कि जो अपने पैरो पर खडा होता है, उसीकी इज्जत होती है।

'सुम्मो' कुश्ती

गीशा लड़किया

प्रसिद्ध लोकनृत्य की एक मुद्रा मे कलाकार

मनोरंजन

समुद्र-स्नान

कला-चातुरी

सेव की वहार

कागज के कदील

किमोनो की छपाई

फूलो का सजाना
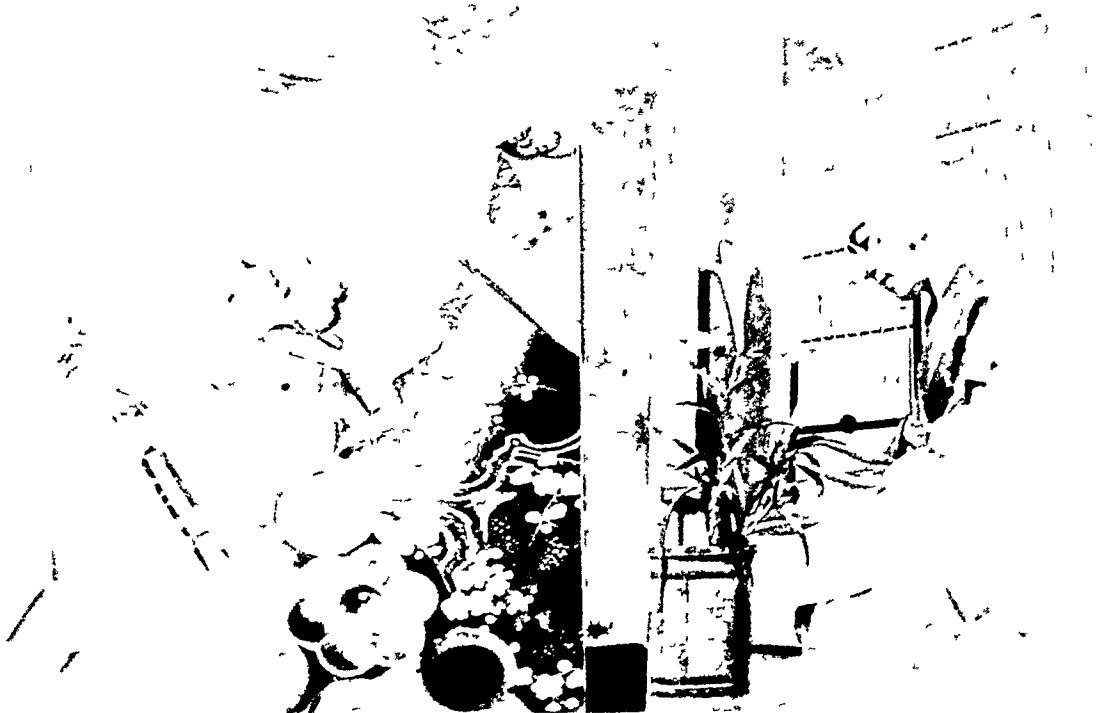
सूत
कताई
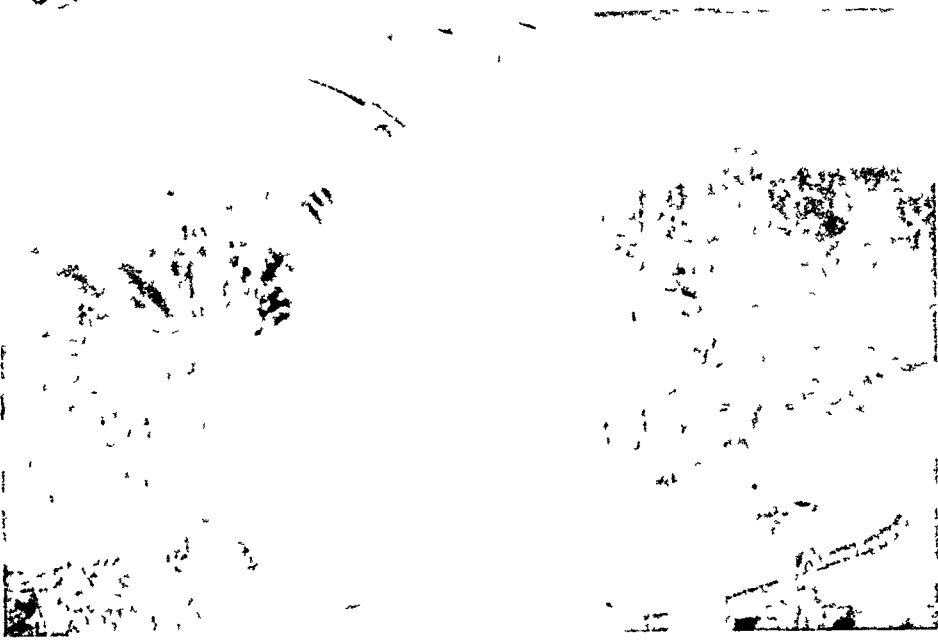
उद्योग-
मय
जीवन

चीनी
के
बर्तन

चाय
की
चुनाई

पेनाग (मलाया) का एक पेगोडा

केगन जल-प्रपात

प्रकृति-दर्शन-१

एयर रेलवे से दाइया नदी का दर्शन
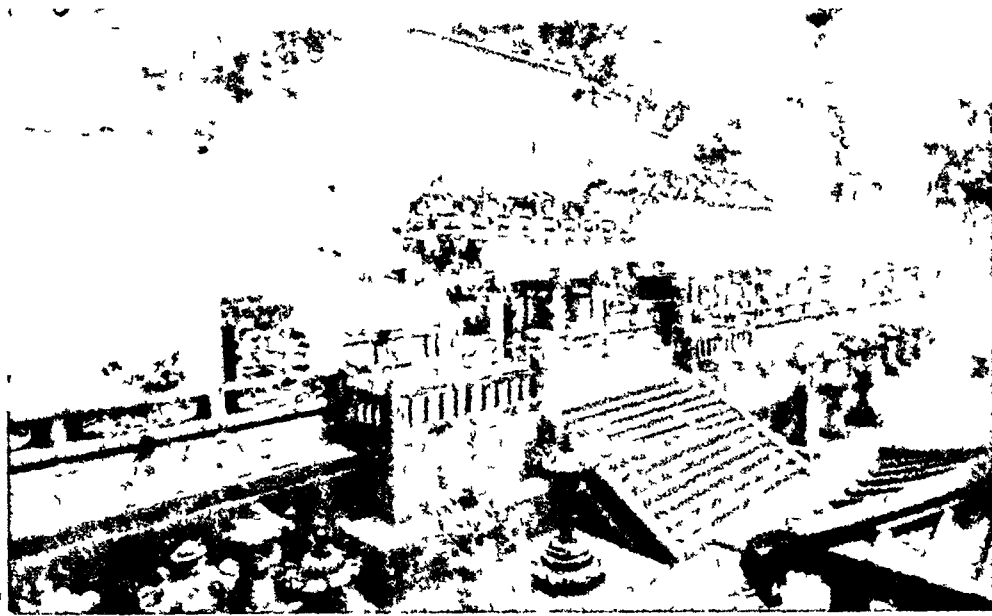
निक्को मठ का प्रवेश-द्वार

प्रकृति-दर्शन-२

आशी झील से फूजी पर्वत का दृश्य

आसोका ज्वालामुखी पर्वत

जापानी परिवार के बीच लेखक और उनकी पत्नी

पारिवारिक जीवन

जापानी परिवार में भोजन-पद्धति
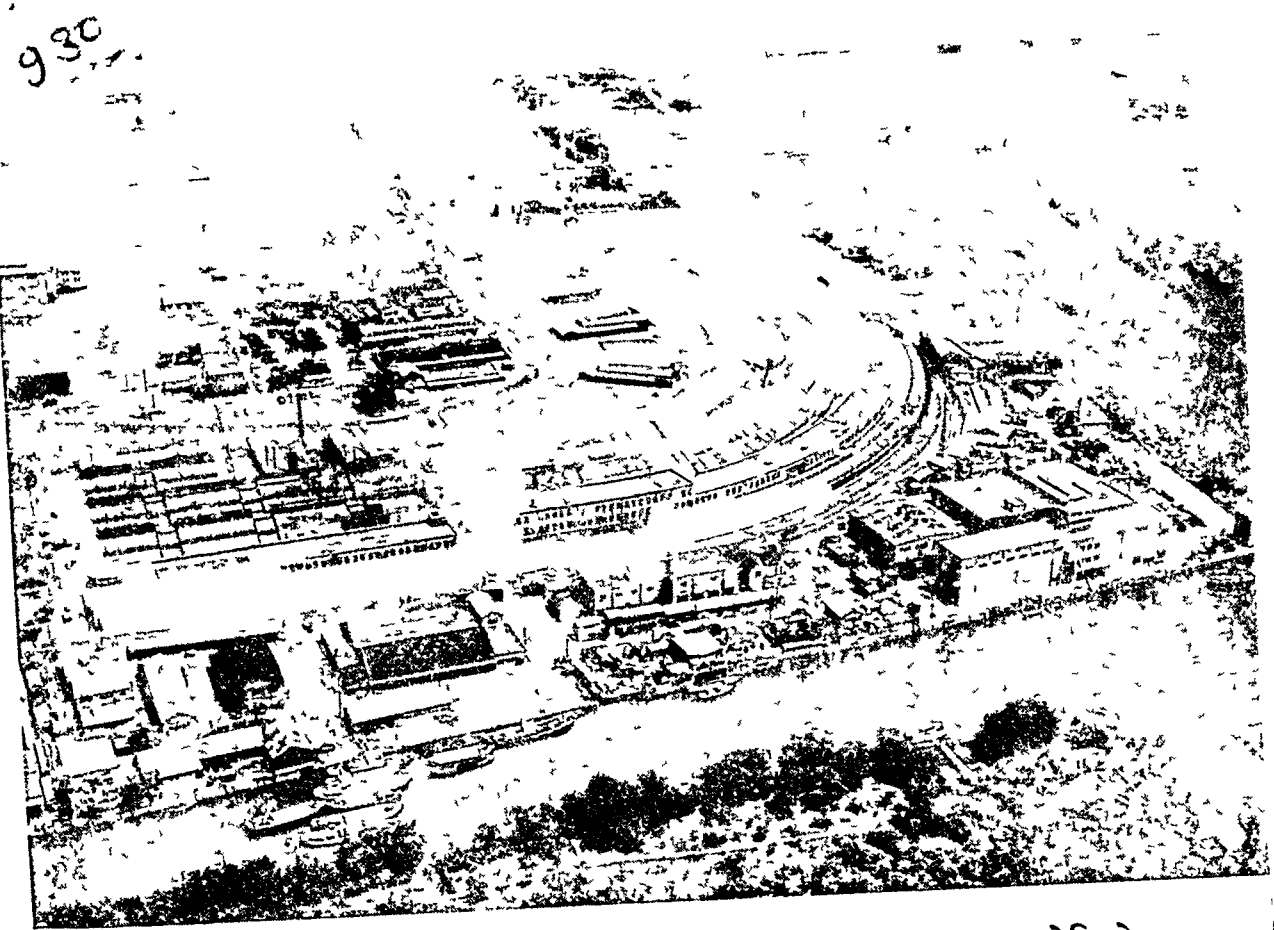
टोकियो

नगर-दर्शन

हांगकांग

अणु बम की विनाशलीला
का शिकार हिरोशिमा

: ११ :
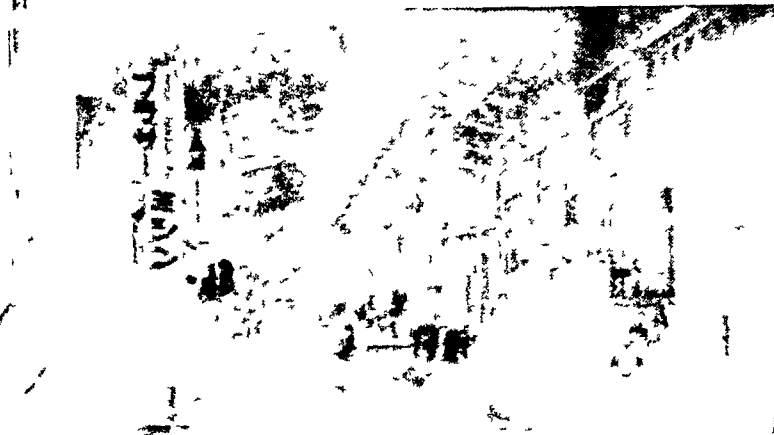
विविध जानकारी

जापान बहुत-से टापुओ का देश है। इनमे होकाइडो, होनशू, इकोकू और क्यूशू, ये चार टापू मुख्य है। टोकियो, ओसाका आदि मुख्य शहर होनशू टापू मे स्थित है। इसलिए जापान का सबसे महत्व का टापू यही है। यद्यपि ऐसा लगता है कि जापान छोटा-सा देश है, लेकिन यदि क्षेत्रफल की दृष्टि से देखा जाय तो केवल होनशू टापू ही इग्लैड, स्काटलैड और वेल्स तीनो के क्षेत्रफल से भी बडा है। सारे देश के समुद्र से घिरे होने के कारण उसकी सुदरता बहुत बढ गई है। बीच-बीच मे पहाड, बडे-बडे जगल और नदिया है। हरियाली खूब है और पहाडो पर इधर-से-उधर तक कतारो मे लगाये हुए वृक्ष बडे भले मालूम देते है। पहाडो की तराई मे बसे हुए छोटे-छोटे गाव भी बडे सुहावने लगते है।

जापान के अनेक पहाडो मे वहा का फूजी पहाड़ बहुत प्रसिद्ध है। इसकी ऊचाई १२,३९७ फुट है और उसकी चोटी हिमाच्छादित है। ऊपर से कटोरीनुमा होने के कारण इसकी अपनी अनोखी छटा है। जापान का यह सबसे ऊचा पहाड है और राष्ट्र का प्रतीक माना जाता है। यहा के अधिकतर पहाड ज्वालामुखी क्षेत्र मे है। फूजी पहाड भी उसी क्षेत्र मे है, लेकिन दो-ढाईसौ बरसो से सुप्त है और उसमे लावा आदि निकलना बद होगया है। भारत के पहाडों की तुलना मे ऊचाई और

विस्तार दोनो ही दृष्टियो से जापान के पहाड वहुत छोटे हे। फिर भी उनके लिए तो फूजी पहाड ही सबकुछ है। इसे देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते है। वहा देखने के लायक स्थानो मे इसका खास महत्व है।

गरम सोते जापान के प्राय हर भाग मे पाये जाते है। इनमे करीब ११०० से अधिक सोते ऐसे है, जिनके जल मे विशेप धातु मिली होने के कारण उनका पानी खास-खास वीमारियो के लिए विशेप लाभदायी माना जाता है।

दूसरे महायुद्ध मे जापान का ४५ प्रतिशत भू-भाग और ३० प्रतिशत आवादी कम होगई। बचे हुए जापान का विस्तार २,३०,६२५ वर्गमील रह गया है और आवादी साढे आठ करोड। यहा आवादी काफी घनी वसी है। १ वर्गमील मे ३७१ आदमी रहते है, जो वेल्जियम और हॉलैड के वाद सवसे अधिक है। यहा पहाड अधिक होने से आवादी की जगह और भी कम होगई है।

१ जनवरी १९४६ से यहा के सम्राट ने स्वय ही अपनेको ईश्वर का अवतार मानना छोड दिया है। इसका वहा की जनता पर अच्छा असर हुआ। जापान का सविधान वताता है कि लडाई के वाद सव राजनैतिक अधिकार अव यहा की जनता को मिल गये है। सम्राट वहा के लोगो व राज्य की एकता का प्रतीक-मात्र रह गया है। अवतक आम जनता की अपने सम्राट तक पहुच ही मुश्किल थी, लेकिन अव सम्राट खुद इस वात के लिए उत्सुक रहता है कि जनता से सीधा सपर्क कायम रखे। ईश्वर के अवतार के वजाय पहली वार राजा मनुष्य के रूप मे जनता

के सामने आया और इसलिए लोगो का प्रेम उसके प्रति बढा ही है। वर्त्तमान सम्राट व्यक्तिगत रूप से जीव-विज्ञान मे खूब रस लेते है और दुनिया मे इस विषय के खास विशेषज्ञ माने जाते है। इन्होने इस विषय पर कई उपयोगी पुस्तके भी लिखी है।

हमारे यहा की तरह जापान मे भी पार्लमेंट के दो सदन है—लोक-सभा और राज्य-सभा। लोक-सभा मे ११७ जिलों से ४६७ चुने हुए सदस्य होते है। इनकी अवधि चार साल की है। राज्य-सभा मे २५० सदस्य होते है।

नये सविधान के अनुसार सब लोगो को समान अधिकार मिल गये है। जाति, धर्म, सामाजिक स्तर, शिक्षा, लिग, गरीबी-अमीरी की वजह से राजनैतिक अधिकारो मे कोई अंतर नही रह गया है। स्त्रियो को पहली बार समान अधिकार व वोट मिले है।

जापान मे चार मुख्य राजनैतिक दल है—लिबरल पार्टी, प्रोग्रेसिव पार्टी, वामपक्षीय सोशलिस्ट पार्टी व दक्षिण पक्षीय सोशलिस्ट पार्टी। कुछ समय पहले कम्यूनिस्ट पार्टी के ३५ सदस्य वहा की लोक-सभा मे थे, लेकिन अब सिर्फ एक सदस्य लोक-सभा मे और एक सदस्य राज्य-सभा मे रह गया है।

हमारे यहा की भाति सारी सत्ता वहा के मत्रि-मडल मे निहित है, जिसका कार्य प्रधान-मत्री अपने मंत्रि-मडल की सहायता से करता है।

जापान मे कच्चा माल और खनिज पदार्थ बहुत कम है और आबादी बहुत अधिक। इसलिए वहा की अधिकतर आर्थिक व्यवस्था विदेशी व्यापार पर अवलंबित है।

लडाई के वाद एशिया के करीव-करीव सारे देशो मे राष्ट्रीय भावना की वृद्धि होने के कारण वहा भारी व गृह-उद्योग दोनो मे वहुत विकास हुआ है, खासकर छोटी-मोटी चीजो मे तो वे स्वावलवी होते जा रहे हैं। इससे जापान को अपना पक्का माल वहा वेचने मे काफी कठिनाई होती है। इसलिए उन्हे धीरे-धीरे मशीने, लोहे और इस्पात आदि के भारी सामान वनाने की तरफ अधिक ध्यान देना पड रहा है। १९५२ मे जापान का निर्यात करीव ५७० करोड रुपयो का था और आयात ९५० करोड रुपये का। लडाई के पहले के हिसाव से देखा जाय तो १९५२ मे निर्यात ३० प्रतिशत कम हुआ है और आयात कुछ वढा है। १९५४ मे निर्यात ८३० करोड रुपयो तक पहुच गया। यह लडाई के वाद के वर्षो मे निर्यात की दृष्टि से सवसे अच्छा साल रहा।

अव जापान को हल्के से भारी उद्योग की तरफ प्रगति करनी पड रही है। इससे वहा के उत्पादन-क्षेत्र व आयात-निर्यात की सारी व्यवस्था मे अनेक परिवर्तन हो रहे हैं। लडाई के पहले जापान के सवसे वडे ग्राहक चीन व अमरीका थे, लेकिन चीन का वाजार तो अव खत्म-सा होगया है। इस समय सवसे अधिक खरीद अमरीका करता है, इण्डोनेशिया व पाकिस्तान को भी काफी निर्यात होता है।

कोयला और विद्युत-शक्ति इन दो ही चीजो मे जापान आत्मनिर्भर है। जल-विद्युत-शक्ति का विकास जापान ने खूव किया है। हर छोटे-से-छोटे देहात मे भी विजली है। लडाई के वाद जापान की विद्युत-शक्ति की माग करीव-

करीव दूनी होगई है। फिलहाल पानी से करीव ६० लाख किलो-वाट व थर्मल शक्ति से ३० लाख किलोवाट—इस तरह कुल ६० लाख किलोवाट शक्ति पैदा करते है। लेकिन यह भी उनकी आवश्यकता से वहुत कम है। १९५७ तक करीव ५५ लाख किलोवाट अधिक पैदा करने का कार्यक्रम उन्होने वनाया है।

उद्योग-धधो मे इतनी प्रगति करते हुए भी जापान अभी-तक मुख्यत कृषि-प्रधान देश है। ४५ प्रतिशत लोग आज भी खेती मे लगे है। इतना वडा उद्योग-प्रधान देश होते हुए भी उद्योग मे सिर्फ १६ प्रतिशत लोग है। करीव १२ प्रतिशत लोग व्यापार के काम मे लगे है।

ये लोग खेती मे विशेपकर चावल की पैदाइश करते ह। चावल काफी मात्रा मे पैदा होता है, फिर भी वहा की वडी आवादी को देखते हुए सिर्फ खेती के वल पर जीना जापान के लिए सभव नही है। अन्य आवश्यक चीजो का उत्पादन लडाई के वाद काफी वढ गया है, इसलिए उन चीजो पर नियत्रण रखने की आवश्यकता नही रही, लेकिन चावल की कमी अव भी महसूस होती है। कई वार चावल वाहर से मगाना पडता है और उसपर किसी-न-किसी तरह के नियत्रण की भी आवश्यकता रहती है। जमीन कम होने से उतनी ही जमीन से अधिकाधिक चावल की पैदावार करने मे जापान के किसान वहुत पटु है और दुनिया के किसानो मे वहुत ऊचा स्थान रखते है। खेती के लायक जहा भी जमीन मिली, वहा वे खेती कर लेते है। जरा-सी जमीन को भी वरवाद नही करते। चावल की खेती के वारे मे तो इन

वर्षो मे हमने भी जापान से बहुत सीखा है और इसके फलस्व-रूप हमारा प्रति एकड चावल का उत्पादन भी काफी बढा है।

लडाई से पहले और लडाई के जमाने मे भी जापान मे शुरू के ६ वर्ष की पढाई अनिवार्य थी, लेकिन अब ९ वर्ष की पढाई अनिवार्य कर दी गई है। जापान मे इस समय करीब ३,४२२ किडर गार्टन स्कूल, १९,७३४ प्राइमरी स्कूल, १२,४४५ मिडिल स्कूल, ३,२३१ हाईस्कूल, ४६१ कालेज है। इनके अलावा विशेष उद्योग-धधो के लिए स्कूल अलग है। करीब ७,७०,००० शिक्षक और दो करोड विद्यार्थी है। पहली बार जापान मे सहशिक्षण प्रारभ हुआ है। अब लडकियो को भी लडको के साथ आजादी मिलनी शुरू हुई है। वहा के शिक्षण-क्षेत्र मे यह एक बडी क्राति है।

: १२ :

दर्शनीय स्थान

जापान मे हम लोग करीब पौने दो महीने रहे। इस बीच वहा काफी घूमे-फिरे। जिन-जिन जगहो पर गये वहा की कुछ झलक ही दी जा सकती है।

याकोहामा—टोकियो से करीब १७ मील पर स्थिति जापान का सवसे बडा बदरगाह है। जहाज से टोकियो आते है तो यही उतरना पड़ता है। यह खुद भी बडा शहर और उद्योग का केंद्र होगया है।

याकोहामा की आवादी १०,६६,८२८ है। यह बंदरगाह १८५९ मे विदेशी व्यापार के लिए खुला और ६० वर्ष के अदर यह जापान का ही नही सारे सुदूर-पूर्व का सवसे बडा वंदरगाह वन गया। यहा समुद्र का किनारा सपाट और वहुत दूर तक फैला हुआ है जिसके एक ओर यामाशीता उद्यान दूर तक फैला हुआ है। दूसरी ओर सुदर दफ्तरो की इमारते वनी हुई है।

याकोहामा नगर का सकीन वाग बहुत प्रसिद्ध है। नोगीयामा उद्यान भी बहुत सुदर है।

हम जापान सवसे पहले यही पहुचे थे। इसलिए जव हम यहा के ईसेजेकीचो नामक खास बाजार मे खरीदी करने गये तो हमे एक नया ही अनुभव हुआ। सड़क चौड़ी नही थी। उसके दोनो तरफ छोटी-छोटी दूकानो मे रोजमर्रा की हर तरह की हजारों चीजो बहुत परिमाण मे बिक रही थी। यह चीज ले, या

वह चीज ले, इसका निर्णय करना एक वडी समस्या होगई। भाव-ताव का भी तो हमे अदाज न था। टोकियो पहुचने पर हमे पता चला कि वहा की अपेक्षा याकोहामा मे चीजे सस्ती मिलती है। इसलिए खास खरीदी करने के लिए एक रोज के लिए हम फिर यहा चले आये थे।

टोकियो—इसकी आबादी ७८ लाख है और क्षेत्रफल करीब ८०० वर्गमील। दुनिया मे यह तीसरे नवर का सबसे बडा शहर है और सन् १८६९ से जापान की राजधानी है।

टोकियो नगर २३ हिस्सो मे विभक्त है, जिसमे एक तो स्वय टोकियो नगर है। यह नगर राजधानी टोकियो का एक भागमात्र है क्योकि इसके अतर्गत तीन उप-नगरीय देहाती इलाके, पाच नगर और ईजू के सात छोटे-छोटे टापू भी है, जो टोकियो खाडी से दक्षिण की ओर स्थित है।

यहा की शीतोष्ण दशा सामान्यतः अप्रैल मे ५८ अश, अगस्त मे ७८ अश और अक्तूबर मे ६१ अश रहती है। जनवरी मे यह घटकर ३७ अश पर आ जाती है।

वडे-बडे शहरो मे घुमाने के लिए व हर चीज का महत्व वरावर समझाने के लिए रोज ही निश्चित समय पर दिन मे कई वार वसे जाती हे। इनमे मार्ग-दर्शन व लाउड स्पीकर आदि की व्यवस्था रहती है। हम भी टोकियो देखने ऐसी ही एक बस मे रवाना हुए। वस वडी आराम-देह बनी थी। एक लडकी हमारी मार्गदर्शक थी। सारे दर्शनीय स्थान वह वताती जाती थी। साथ ही बीच-बीच मे अच्छे मजाक भी करती रहती थी, जिससे यात्री-दल मे हँसी के फव्वारे छूट जाते थे। चार घटे की

यात्रा जरा भी थकावट-भरी नही हुई। दर्शनीय स्थानो को देखने के अलावा जो समय मिलता उसमे जापान की राजनैतिक अवस्था, स्त्रियो के अधिकार, भौगोलिक स्थिति आदि न जाने कितने ही विषयो की वह जानकारी देती जाती थी। बडी मिलनसार व नम्र होने से लोग चाव से उसकी बाते सुनते थे। जापान के बारे मे विदेशी लोगो की राय अच्छी बने इसका वह बराबर प्रयत्न करती और उसमे काफी सफल भी होती थी। एक जगह सारे यात्रियो की तसवीर भी ले ली गई जो यात्रा पूरी होने के पहले ही तैयार होकर आगई और उनकी तरफ से हर यात्री को भेट मे दी गई। ऐसी सह-यात्रा सस्ती तो होती ही है। करीब प्रति व्यक्ति दस रुपया लगता है। उसमे चाय-पानी भी शामिल होता है।

गत महायुद्ध मे टोकियो के करीब ८,५०,००० घर जल गये या नष्ट होगये थे। लेकिन बडी तेजी से वहा पुर्ननिमाण का काम चला और आज तो टूटे घरो की जगह नये बने घर दिखाई देते हे, जो पहले की अपेक्षा अधिक बडे व सुदर है। हम लोगो को वहा लडाई का कोई चिह्न नजर नही आया। टोकियो की आबादी मे हर साल करीव ३ लाख की वृद्धि होती है। इस परिमाण मे तो नही, फिर भी सब लोगो के रहने के लिए मकान आदि का इंतजाम तेजी से हो रहा है। पानी, गैस व बिजली का यहा अच्छे-से-अच्छा इतजाम है। यहा करीव १२ दैनिक पत्र निकलते हे, जिनकी बिक्री करीब १० लाख से ऊपर है। चार रेडियो स्टेशन है और तीन टेलीविजन कपनिया काम करती है। ७५ कालेज है और करीब ४०० से अधिक सिनेमा-घर,

नाटक-घर व दूसरे क्रीडास्थल है।

यहा का राजमहल शहर के वीचो-वीच करीव २५० एकड भूमि पर स्थित है। इसमे कई मकानात है और तरह-तरह के वगीचे लगे हुए है। सिर्फ सम्राट के जन्म-दिन व नये वर्ष के दिन आम लोगो को भीतर जाने की इजाजत रहती है, अन्यथा विशेप इजाजत लेकर ही भीतर जा सकते है। इतना वडा व्यावसायिक व औद्योगिक शहर होते हुए भी शहर के बीच मे इतनी जगह विना उपयोग के पडी हुई है, यह इस बात का द्योतक है कि यहा की प्रजा अपने राजा को कितने सम्मान और इज्जत की दृष्टि से देखती है। इस जमीन का बहुत कम हिस्सा उपयोग मे आता है और सारी जमीन की व्यवस्था रखने मे हरसाल करोडो रुपयो का खर्च भी होता है। लेकिन अपने राजा के प्रति प्रेम व सद्भावना होने के कारण वहा की जनता इसे विना किसी उज्र के खुशी-खुशी सहन करती है।

टोकियो का व्यावसायिक व अन्य व्यापारिक प्रवृत्तियो का केंद्र मारूनोची है। टोकियो का मुख्य रेलवे स्टेशन, वैक, इश्योरेस कपनियो आदि के वडे-वडे मकानात इसी जगह है।

मारूनोची से नजदीक ही गिंज नाम की सडक है। टोकियो की वडी-वडी दूकाने इसी सडक पर है। वडे लोगो के लिए खरीदी करने का यह केंद्र है। रात मे विजली की तरह-तरह की रोशनियो से दूकाने जगमगाती रहती है। कई डिपार्टमेट स्टोर भी इसी सडक पर वने है।

युइनोपार्क—टोकियो मे सवसे विशाल यह वाटिका २१० एकड जमीन मे फैली है। यह १८७३ मे निर्मित हुई थी और इस

मे संग्रहालय, चित्रागार, राष्ट्रीय विज्ञान अद्भुतालय, यूइयो पुस्तकालय तथा चिडियाघर आदि है। इसीमे तोशोगू नामक पवित्र स्थान भी है जो १७ वी शताब्दी मे आइमासू द्वारा स्थापित किया गया था। इस पवित्र स्थान मे पाच मजिल का एक पगोडा भी है।

कुदान पहाडी पर युद्ध मे मरे हुओ का एक स्मारक ४० फीट ऊचा बना हुआ है जिसे यासूकूनी कहते है। यहा साल मे दो बार अप्रैल और अक्तूबर मे मेला लगता है।

मेजी मंदिर—यह योयोगी मे स्थित एक पवित्र स्थान है जो सम्राट मेजी और सम्राज्ञी को समर्पित किया गया है। इसका निर्माण १९२० मे हुआ था और इसके लिए देश की जनता ने एक लाख वृक्षों का दान दिया था। कुछ खास-खास त्यौहारो पर इस स्थान के सामने प्राचीन सगति 'बुगाकू' सुनाया जाता है।

इस स्थान से सबद्ध एक १२० एकड क्षेत्रफल की विशाल वाटिका है। इसीमे स्मारक, चित्रागार भी है और कई प्रकार के खेलो की व्यवस्था है जिसमे तैराकी के लिए एक कुण्ड और बेसबॉल खेलने का मैदान भी है। क्रीडागार मे एक साथ ६०,००० दर्शको के बैठने की व्यवस्था है। इसका निर्माण-कार्य १९१७ मे ही आरभ हुआ था जिसका पूरा खर्च जनता ने दिया है।

निहोमबासी—यह पत्थर का वना एक पुराना पुल है जिसके आस-पास बडी-बडी दूकाने, बैक आदि है। यह टोकियो का प्रसिद्ध केद्र है। इस पुल का निर्माण १६०३ ई० मे हुआ था और इसका नया रूप १९११ मे बना है। पुराने टोकियो मे यह पुल एक प्रकार का चौक-सा माना जाता है और इस पुल से ही

सारे देश के नगरो की दूरी नापी जाती थी। 'बैंक ऑफ जापान' और 'मित्सुकोशी डिपार्टमेंट स्टोर' इस पुल के पास ही स्थित है।

सौ एकड जमीन पर स्थित टोकियो-विश्वविद्यालय यहा की सबसे वडी शिक्षण-सस्था है। इजीनियरिग, कानून, विज्ञान, भूकप का अनुसधान, अर्थशास्त्र, समाज-विज्ञान, डाक्टरी, कृषि आदि सारे विषयो की उच्च पढाई यहा होती है। पास ही खेलने के लिए मैदान, जिमनाशियम, तैरने का तालाब, क्लब आदि भी बने हुए है।

टोकियो मे विद्यार्थी बहुत ही बडी सख्या मे है। यहा बडे-बडे विश्वविद्यालय है—कुछ सरकारी है और कुछ व्यक्तिगत रूप से भी चलाए जाते है। टोकियो विश्व-विद्यालय मे ही करीब दस-बारह हजार विद्यार्थी होगे। यह सरकारी विश्वविद्यालय सबसे सस्ता है और पढाई भी इसमे अच्छी होती है, इसलिए इसमे भर्ती होने के लिए हरेक विद्यार्थी कोशिश करता रहता है। लेकिन गैर-सरकारी विश्वविद्यालय भी काफी लोकप्रिय है।

टोकियो विश्व-विद्यालय का मुख्य द्वार काष्ठ-निर्मित है और लाल रग से पुता हुआ है। यह है तो पुराना, पर देखने मे सुदर है। सारे जापान मे शिक्षा की दृष्टि से यही सबसे बडा विश्व-विद्यालय है। यह १०८ एकड भूमि पर बना हुआ है और इसका सचालन स्वय जापान-सरकार करती है। यहा अनेक इमारते है जिनमे स्थिति महाविद्यालयो मे कला, साहित्य, शिक्षण, कानून, अर्थशास्त्र, विज्ञान, औषधि, शिल्प-विज्ञान (इजीनियरिग) और कृषि आदि विषयो की विधिवत शिक्षा दी जाती है।

आसाकुसा टोकियो का प्रधान क्रीडा-स्थल है। इसमे लोगो की भीड लगी रहती है। इस जगह पर बहुत ही बडी सख्या मे रेस्तरा तथा सिनेमा-घर है। एक जगह तो सडक के दोनो ओर एक-के-बाद एक सटे हुए करीब १५ सिनेमा-घर है। आस-पास नाइट-क्लब व नाच-घर आदि की भरमार है। पहले से सूचित किये बिना भी लोग वहा चले जाते है। जिसकी जैसी रुचि है उसको अपने मन के मुताबिक मनोरजन के साधन वहा मिल जाते है।

टोकियो दुनिया के वडे व्यस्त हवाई अड्डो मे से एक है। इस हवाई अड्डे पर करीब सौ हवाई-जहाज रोज यात्रियो को लाते और ले जाते है।

टोकियो स्टेशन का निर्माण १९१४ मे हुआ था और यह इस देश का सबसे बडा रेलवे स्टेशन है। यहा से प्रतिदिन दूर जानेवाली सभी दिशाओ के लिए लगभग १३० गाडिया छूटती है। गाडिया ५ मिनट से आधे घटे तक के अंतर से छूटती है। इस स्टेशन पर प्रतिदिन ३,७०,००० यात्री आते-जाते है।

इस शहर मे टैक्सियो की इतनी भरमार रहती है जितनी मैंने और कही नही देखी। किसी भी मकान से या दूकान से से वाहर निकले कि सामने से टैक्सी गुजरती हुई नजर आवेगी। शहर के सारे मुख्य-मुख्य स्थान रेल, टूरिस्ट कार व वस से जुडे है। जमीन के अदर के रास्तो से भी इधर-से-उधर बहुत जल्द और आसानी से पहुचा जा सकता है। टोकियो शहर मे ही करीव-करीब ९०० टूरिस्ट कारे चलती है। चाहे जितनी दूर हो एक वार का सफर-खर्च दो-ढाई आने से ज्यादा नही पडता।

बस और टूरिस्ट कार किस जगह कितने वजे पहुचेगी वह भी निश्चित रहता है और हर बस-स्टेशन पर दिनभर का वक्त लिखा रहता है, जिससे बस के लिए कहा कितना रुकने की आवश्यकता है इसका पहले से अदाज लग जाता है।

टोकियो मे अच्छे-से-अच्छे पश्चिमी ढग के व जापानी ढग के भी अनेक होटल है। विदेशी ढग के एक होटल मे सैकडो कमरे एयर-कडिशन होते है, जिनके साथ अपने अलग स्नानागार होते है। छोटे-छोटे होटलो मे भी हरेक कमरे मे टेलीफोन तो होता ही है। सारे जापान मे ही टेलीफोन का बहुत अधिक रिवाज है, और टेलीफोन कपनियो का इतजाम भी अच्छा है। होटलो मे वीच के वडे कमरे, खाने के कमरे, नाश्ता आदि के कमरो के अलावा कॉफी पीने के कमरे, शराव के कमरे आदि अलग होते है। कई होटलो मे तो भीतर-ही-भीतर बडे-बडे वाजार भी लगे होते है। टेलीविजन का कमरा अलग होता है। नाश्ता करने के कमरो मे भी टेलीविजन की व्यवस्था रहती है।

जापानी ढग के होटल, जिन्हे इस कहते है, उनका भी वहा वहुत प्रचार है। कहते है कि जापान मे ५० हजार से भी अधिक इस तरह के इस है। इनमे रहना खाना-पीना एकदम जापानी ढग से होता है और काफी सस्ता होने के कारण अधिकतर लोग इन्हीमे ठहरते है। जो लोग एक जगह से दूसरी जगह काम से जाते है वे भी मित्रो के यहा न ठहरकर इंस मे ठहरना अधिक सुविधाजनक समझते है। इस तरह के इस मे अधिकतर घरू वातावरण होता है और व्यक्तिगत ध्यान भी ज्यादा

दिया जाता है। वहा की परिचारिकाए हरेक कमरे मे खाना पहुचा देती है और खुद ही बडी आवभगत से परोसती है। विदेशियो को वहा दो-तीन तरह की दिक्कतो का सामना न करना पडे तो मै तो पश्चिमी होटलो के बजाय ऐसी इंस में ठहरना अधिक पसद करू। वहाके लोगो के रहन-सहन और रीति-रिवाज का तभी ठीक से अदाज लग सकता है। उन लोगो मे घुलने-मिलने का और उनसे व्यक्तिगत परिचय करने का भी यह आसान और अच्छा मार्ग है। भाषा की दिक्कत, अच्छे निरामिष भोजन का न मिलना और स्त्रियो के लिए स्नान करने की स्वतत्र व्यवस्था के न होने की वजह से इच्छा होते हुए भी कहीपर भी ऐसी इस मे ठहरने की हिम्मत हमे नही हुई।

सिनेमा-घर, नाइट-क्लब आदि के अलावा और भी तरह-तरह के मनोरजन के कार्यक्रम इस बडे शहर मे बराबर हुआ करते है। टकाराजुका कपनी का वडा प्रसिद्ध स्टेज रिव्यू 'यू मी एन' काफी दर्शनीय था। इसमे चीन की करीब २२०० वर्ष पहले की एक प्रसिद्ध कहानी का चित्रण बड़े मनेमोहक ढग से किया गया था। यद्यपि खेल जापानी भाषा मे था, फिर भी हम लोगो को बहुत पसंद आया। इसी तरह टोकियो 'ओ डो री' नाम का स्टेज रिव्यू भी बहुत प्रसिद्ध और दर्शनीय था। इसमे करीब तीनसौ सुदर-सुदर लडकिया आकर्षक वस्त्र पहनकर, सज-धज-कर, एक साथ नाच-गाकर दर्शको का मनोरजन करती है। इन खेलों मे काम करने के लिए अच्छे-अच्छे घरो की होनहार लड-किया भी बडी उत्सुक रहती है। इतनी अधिक माग होने से खास-खास लड़कियो को ही शिक्षण के लिए भर्ती करना सभव

होता है।

'दिस इज सीनेरामा' नाम की अमरीकन फिल्म टोकियो के एक ही सिनेमा-घर मे लगातार करीब साल भर से चल रही थी। हम लोगो के लिए यह एकदम नये ढग की फिल्म थी। इसको दिखाने के लिए एक विशाल और नई तरह का पर्दा चाहिए। पर्दा बहुत बड़ा होता है और सीधा न होकर अर्ध गोलाकार के रूप मे होता है। इसमे चौडाई के साथ गहराई भी दीखती है। पर्दा तीन भागो मे बटा रहता है और तीन कैमरो से उनपर अलग-अलग, पर एक साथ, फिल्म दिखाई जाती है। खूबी इसीमे है कि तीनो पर्दो पर दृश्य मिलकर एक ही दृश्य दिखाई देता है। फिल्म दिखाने मे जरा भी आगे-पीछे हुआ कि गडबडी हो जायगी। तीनो फिल्मे बिल्कुल एक साथ चलनी चाहिए। गहराई के भी दीखने की वजह से फिल्म बहुत जीती-जागती लगती है। ऐसा मालूम देता है मानो फिल्म नही, कोई नाटक या प्रत्यक्ष दृश्य ही देख रहे हो। नाटक दिखाने मे जो कठिनाइया व रुकावटे आती है उनके न होने की वजह से आकार मे छोटे स्टेज पर भी बहुत बडे-बडे दृश्य दिखाये जाते है। इससे देखनेवालो को विशेष आनद आता है। सिनेमास्कोप तो अब हमारे यहा भी आने लगे है। उनमे भी दृश्यो की गहराई दीखती है। यद्यपि यह फिल्म १९५२ मे ही बन गई थी, तथापि अभी तक भारत मे नही आ सकी। जिस पर इसको प्रदर्शित किया जा सके इतना बडा पर्दा बनाने की व्यवस्था अभी तक हमारे सिनेमागृहो मे नही है।

हम लोग वहा थे तभी जापान के जगत्-प्रसिद्ध योगियो

शीराई और अर्जेंटाइना के पासकल पीरोज का बॉक्सिंग-दंगल भी हुआ। शीराई दुनिया का पुराना सर्वश्रेष्ठ खिलाडी रह चुका है तो पीरोज आज का चैपियन है। काफी उत्सुकता से हम यह दगल देखने पहुचे। इसे देखने के लिए बडी भीड इकट्ठी होगई थी। करीब पच्चीस-तीस हजार दर्शक रहे होगे। शीराई के जापानी होने के नाते वहा उसके प्रशसकों की सख्या अधिक होना स्वाभाविक ही था। जापानी लोग बहुत चाहते थे कि वह जीत जाय। कुछ कमाल दिखाए। वह जरा-सा भी कुछ हाथ दिखाता तो बडी तालिया पिटती थी। पर वह बेचारा कुछ कर ही नही पाया। यह उसका आखिरी मौका था, ताकत आजमाने का। पर उसके दिन लद चुके थे। उम्मीद थी कि दगल बडा आकर्षक, उत्तेजनात्मक एव चढाव-उतारवाला होगा। लेकिन निराश होना पडा। पीरोज ने शीराई को बडी आसानी से हरा दिया। दर्शक बडे सुस्त और ढीले नजर आते थे, क्योकि उनके घर के मैदान पर ही उनके ही 'हीरो' को एक विदेशी ने आकर पछाड दिया था।

टोकियो मे नहाने, तैरने, बोटिग करने आदि के भी अलग-अलग स्थान है। बहुत रफ्तार से चलनेवाली मोटरबोट मे बैठकर समुद्र मे जाने पर बडा मजा आता है। छोटी-छोटी मोटर-बोटे, जिनपर तीन-चार आदमी बैठ सकते है, पचास-साठ मील की रफ्तार से पानी पर जाती है, तब एक तरह की सनसनी-सी सारे बदन मे हो जाती है। हवा का जोर इतना रहता है कि आखो का खुला रहना मुश्किल हो जाता है। खासकर जब बोट किसी छोटी-मोटी लहर को पार करते समय उडान लेती है तब तो

सनसनी के साथ-साथ डर भी लगने लगता है। पर वैसे खतरे-जैसी कोई वात नही होती है।

टोकियो मे शुरू मे तो हम लोग सिर्फ तीन-चार दिन रहे, फिर दक्षिण की तरफ घूमने चले गए। वहा से लौटने पर जब दुवारा टोकियो आये तब करीब बीस-पच्चीस दिन वहा और रहे। कुल मिलाकर टोकियो मे हम लोग करीब चार-पाच हफ्ते रहे। फिर भी वहा देखने, घूमने-फिरने, खरीद करने व खेल-कूद, नाटक, सिनेमा आदि के इतने कार्यक्रम होते थे कि समय कव निकल गया, इसका कुछ पता ही न चला। मन-बहलाव के लिए क्या किया जाय, समय कैसे काटा जाय, यह सवाल ही कभी पैदा न हुआ। नई जगह थी, भाषा की पूरी दिक्कत थी, फिर भी मन वरावर लगा रहा। यहातक कि वापस आते समय टोकियो छोडने का मन नही करता था। अव यहा आने के वाद तो, खैर, वहा फिर से जाने का मन करता ही रहता है, जबकि यूरोप के और वहुत-से शहरो के लिए इतना नही करता।

टोकियो से हम लोग रेल द्वारा ओसाका के लिए रवाना हुए। इस रेल मे काच के वने हुए खास डव्वे होते है, जिनमे बैठने के लिए सोफे लगे होते है। यात्री वडे आराम से चारो तरफ के सुदर दृश्यो को देखने का मजा लूटते हुए यात्रा करते है। यह भी एक नया और मजेदार अनुभव था। हुकुम देने भर की देर है, खाने-पीने के लिए जो चीज चाहिए, हाजिर कर दी जायगी। इस खास डव्वे को "आवजरवेटरी-कार" कहते है। इस डव्वे के साथ ही लगा हुआ एक छोटा-सा, ऊपर से वद पर चारो तरफ से एकदम खुला हुआ,

बरामदा भी होता है। यात्री लोग इसमे खडे होकर भी शुद्ध वायु का सेवन करते हुए प्राकृतिक दृश्य, नदी नाले, छोटे-बड़े गाव, सबको निहारने का आनद ले सकते है। इस डव्बे मे मुसाफिरी करने के टिकिट महगे तो काफी जरूर होते है, लेकिन फिर भी दिन मे मुसाफिरी करने का मौका मिले तो इससे जरूर जाना चाहिए। रेल मे ही बैठे-बैठे वहा के प्रसिद्ध पहाड 'फूजी' के भी दर्शन हो गये।

ओसाका व कोबे—ओसाका जापान मे टोकियो के बाद दूसरे नबर का सबसे बडा शहर है। साथ ही उद्योग तथा व्यवसाय का बडा केंद्र भी है। यह शुरू से ही विदेशी तथा देशी व्यापार का अड्डा रहा है। ओसाका से जल व थल दोनों मार्गों से यातायात के पूरे साधन मौजूद होने के कारण यहा का औद्योगिक विकास बहुत हुआ है। जापान के विदेशी व्यापार मे ओसाका का स्थान कितने महत्व का है, इसका अदाज इसीसे लगाया जा सकता है कि सारे जापान के विदेशी व्यापार का आधे से अधिक व्यापार सिर्फ ओसाका से ही होता है।

यहा समुद्री जहाज बनाने के तथा लोहे के कारखाने अधिक है। सूती तथा रेशमी कपडे की मिले भी है। हम लोगो ने यहा जहाज बनाने के, इस्पात के कारखाने व शक्कर बनाने की रिफायनरी भी देखी। सिर्फ मिसुबिशी कपनी का जहाज बनाने का एक कारखाना अपने यहा के विशाखपट्टनम के काम से दूना काम कर लेता है। इसके अलावा वहा और भी कई कारखाने है जो जहाज बनाते है।

कोबे ओसाका से बीस मील पर स्थित एक बदरगाह है।

जैसे टोकियो और योकोहामा है, इसी तरह से ओसाका और कोवे है। टोकियो के समान ही ओसाका भी समुद्र से दूर स्थित एक औद्योगिक नगर है। समुद्र के रास्ते जो काम-धाम होता है वह कोवे के मार्फत ही होता है। अधिकतर लोग, और भारतीय तो करीव-करीव सभी, कोवे मे रहते है और दिन मे ओसाका मे काम करने के लिए आते है। ओसाका व्यापारिक केद्र है, अत सारे दफ्तर वही है, लेकिन रहने के लिए कोवे की आबहवा अधिक अच्छी मानी जाती है। कोवे मे करीब तीनसौ भारतीयो के घर होगे। जापान मे सबसे अधिक भारतीयो के घर यही है। भारत-वासियो का जापान मे जितना भी व्यापार होता है, वह मुख्यत यही से होता है। टोकियो के समान ही यहा स्टेज रिव्यू होता है, जगमगाती बिजली की वत्तियो (नियोन साइस) से सडके भरी पडी है। सिनेमा, नाटक, नाइट-क्लब का काफी प्रचार है। हर साल निश्चित तारीखो पर पद्रह दिन यहा 'चेरी व्लोसम' का नाच दिखाया जाता है। यह नाच सचमुच दर्शनीय है। सद्भाग्य से हम ओसाका उन्ही दिनो मे पहुचे जब यह खेल वहा हो रहा था। चालीस-पचास लडकिया अलग-अलग ढग से आकर्षक वस्त्र पहनकर स्टेज पर आकर मीठे सगीत के साथ नाचती है। कपडे और स्टेज की सजावट और पीछे के पर्दे खूब रगीले और आकर्षक होते है। हा, एक वात जरूर कहनी पडेगी कि सगीत और नृत्य की गति हम लोगो के हिसाव से वहुत धीमी होती है। भारतवासी काफी तेजी से नाच करते है जिससे वे और भी अच्छे लगने लगते है, लेकिन सामूहिक नृत्य, उनकी वेशभूषा, सजावट यह सव जरूर जापानियो से सीखने लायक है। उनके

सगीत से अभ्यस्त न होने के कारण हमे वह कही-कहीपर एक-जैसा और नीरस भी लगता रहा।

ओसाका मे वहा के किले के अलावा और कोई विशेष सास्कृतिक स्थान दर्शनीय नही है। बेसवॉल का यहा भी बहुत शौक है। इसके लिए यहा भी एक वहुत बडा स्टेडियम है। हम लोग वहा के अपने एक साथी के साथ एक अच्छा मैच देखने गए। लोगो की काफी भीड थी। नवयुवको मे इस खेल को खेलने और देखने का बडा शौक होगया है।

ओसाका की आबादी करीव साढे बाईस लाख है और कोबे की आठ लाख।

टकराजा—ओसाका के नजदीक एक छोटा-सा गाव है। जापान मे जो स्टेज रिव्यूज होते है, उनका वहा वहुत बड़ा स्कूल है। उनका अपना नाटक-घर भी है। नाटक-घर बहुत बड़ा होते हुए भी हमेशा ठसाठस भरा रहता है और टिकिट मिलने मे बडी कठिनाई रहती है। वहा का नाटक देखने भी हम लोग एक दिन गए। नाटक सुदर एव चित्ताकर्षक था।

आराशीमा—ओसाका के आसपास और भी काफी देखने लायक स्थान है। टकराजा से ओसाका आकर हम लोग आराशीमा गए। वहा एक छोटी, लेकिन बहुत तेज, पहाडी नदी बहती है। उसमे लकडी की नाव मे बिठाकर यात्रियो को ले जाते है। यहा एक नया ही अनुभव मिलता है। चारो तरफ सुदर हरे-भरे पेड और पहाडियो के बीच से उछलते हुए पानी मे, तेज रफ्तार से नाव पर जाने मे अज़ीब आनद आता है। पानी इतने जोर से बहता है कि नाव को उसी रास्ते से वापस ऊपर नही लाया जा

सकता। बड़ी नावो को नदी मे से निकालकर मोटर लारियो पर चढाकर वापस ले जाया जाता है।

कियोटो और नारा—ये ओसाका से नजदीक ही है। टोकियो से पहले कियोटो जापान की राजधानी थी। ऐतिहासिक दृष्टि से इसका वडा महत्व है। जापान मे यह सबसे महत्व का सास्कृतिक केंद्र माना जाता है। आस-पास पुराने मदिर आदि बडी सख्या मे है। छोटे-बडे सब मिलाकर करीव चौदहसौ मदिर होगे। बौद्ध काफी बडी सख्या मे है और अनेक शिटोमठ भी है।

यहा का राजप्रासाद देखने योग्य है। उसके चारो तरफ दोसौ बीस एकड का बगीचा है, जो जापान के सुदर बगीचो मे से एक माना जाता है। चूकि नए राजा का राज्याभिपेक इसी राजमहल मे आकर करने की प्रथा अभी भी कायम है, इसलिए इसको ठीक ढग से रखा जाता है। इसके अलावा निजी किले के भीतर जो मकान है, वे भीतरी सजावट और चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध है। इसके अलावा यहा 'हिग्रान', 'चियोन इन' व कियोमीजू मदिर आदि भी देखने लायक हे।

जापान जाने पर कियोटो तो जाना ही चाहिए, ऐसा कहा जाता है। लेकिन कियोटो को देखकर हमपर कुछ ऐसा असर नही हुआ। राजप्रासाद के अलावा और कुछ खास नही लगा। यहा लाख या चमडे पर वडी सुदर कारीगरी का काम होता है। यह सब हमने देखा, लेकिन फिर भी सभव है कि थोडे समय मे हमलोग वहा की देखने योग्य सारी चीजे न देख पाये हो। इस स्थान की जितनी ख्याति है, उस हिसाब से वहा की चीजे देखकर, हमे कुछ निराशा हुई। हमलोग वहुत ही सुदर मदिर

और सास्कृतिक केंद्र देखने की उत्सुकता लेकर वहा गए थे। शायद इसीलिए कुछ निराश होना पडा हो।

नारा—जापानी लोग अपने यहा की छोटी-छोटी चीजो को बहुत अधिक प्रचारित करने व उनका हो-हल्ला मचाने मे प्रसिद्ध है, यह बात नारा नाम के छोटे-से गाव के लिए ठीक निकली। जापानी लोग नारा के लिए 'जगत्प्रसिद्ध' विशेषण का प्रयोग करते है। यद्यपि यह ठीक है कि वहा का जलवायु स्वास्थ्य के लिए बहुत ही उत्तम है, वहा कुछ रोज रहने को मिल सके तो अच्छा लग सकता है, लेकिन देखने योग्य कोई भी विशेष वस्तु वहा नही है। कुल दो-तीन घटे से अधिक वहा रहने की आवश्यकता नही प्रतीत होती। फिर भी यात्री लोग एक बार तो वहा जाते ही है।

नारा का पार्क करीब बारहसौ एकड़ मे फैला हुआ है और जापान का सबसे बडा पार्क कहलाता है। कासुगा वाकाकूसा और कामुनो पहाडो से घिरा हुआ यह पार्क अच्छा लगता है। इसमे पालतू हिरन बहुत ह और ये यात्रियो के बिल्कुल पास तक, मित्रतापूर्ण ढंग से बिना डर एव सकोच के चले आते है। इसलिए इस बाग को 'हिरन-बाग' भी कहते है। कामुगा व तोडाइजी के मदिर भी देखने लायक है। कामुगा मदिर मे पहुचने के पहले, पत्थर की करीब दो हजार बड़ी-बड़ी कदीले रास्ते के दोनो ओर बडी अच्छी लगती है। मदिर के भीतर भी करीब एक हजार ताबे की कदीले टगी हुई है। जब यहा उत्सव होता है तब ये सारी बत्तिया जलाई जाती है। उस समय यहा का दृश्य बड़ा ही भव्य रहता होगा।

बेप्पू—ओसाका से हमलोग जापान के एकदम दक्षिणी किनारे की तरफ एक छोटे-से समुद्री जहाज मे चले। अनेक टापुओ के बीच, समुद्र मे से गुजरते हुए, रात भर सफर करके वेप्पू पहुचे। यह स्थान कुदरती गरम सोतो के लिए सारे जापान मे प्रसिद्ध है। अनेक स्थानो मे अलग-अलग रगो के गरम पानी के प्राकृतिक सोते जमीन मे से निकलते है। इन सोतो मे गधक की मात्रा अधिक है। इनमे स्नान करना स्वास्थ्य के लिए आम तौर पर और विशेष बीमारियो मे तो बहुत ही लाभदायक माना जाता है। बहुत-से सोतो मे तो जमीन के भीतर से ही खौलता हुआ पानी निकलता है। इनसब जगहो पर कुड, मकान, बगीचे आदि बनाकर यात्रियो के देखने लायक और उपयोगी जगह वना दी गई है।

बेप्पू के पास ही एक पहाड है, जिसपर 'रोप वे' से जाना होता है। इस पहाड के ऊपर ही बच्चो के लिए खेल-कूद का विशाल मैदान तथा चिडियाघर बना हुआ है।

जिस होटल मे हम ठहरे हुए थे वह छोटा ही था। शाम को वहा एक दावत थी। पद्रह-बीस लोग होगे। स्त्री और पुरुप दोनो ही थे। हम होटल मे पहुचे तो ऊपर से मधुर सगीत की ध्वनि आई। हमने पुछवाया कि हम लोग भी थोडी देर के लिए सगीत सुन सकते है क्या, तो उन्होने वडे शौक और आग्रह से हमलोगो को ऊपर वुला लिया। दावत जापानी ढग की थी। हम ऊपर पहुचे उस समय लोग खाना खत्म कर रहे थे, फिर भी साथ मे खाने का आग्रह करते रहे। उन्हीमे से एक-दो वहने गा-वजा रही थी। वडा अच्छा लग रहा था। फिर धीरे-धीरे स्त्री-पुरुप

दोनो ही उठकर सगीत के साथ जापानी ढग से नाचने लगे। थोडी देर के बाद उन्होने हमे भी नाच मे शामिल होने के लिए आमन्त्रित किया। यद्यपि हमलोग उनकी भाषा नही समझते थे और उनका नाच भी नही आता था, तथापि वातावरण इतना घरू था और निनत्रण इतने स्वाभाविक और सहज ढग से दिया गया था कि मै अपने-आप उठकर उनके साथ नाच मे शामिल होगया। किसीको सकोच नही हुआ। सभीको खूब आनद आया। हमलोगो के लिए तो यह एक नया अनुभव था। जापान की यादगारो मे इस घटना की याद भी बनी रहेगी। विदेशियो का इस प्रकार मनोरजन करने की कला मे ये लोग निपुण है।

ज्वालामुखी आसो—बेप्पू से कुछ दूर पर ही जापान का सबसे बडा ज्वालामुखी आसो पहाड है। हमलोग वहा भी पहुचे। इसके पहले हमने कोई ज्वालामुखी नही देखा था, इसलिए इसे देखने की उत्सुकता स्वाभाविक थी। यद्यपि इसमे से अनेक वर्ष हुए लावा नही निकलता हे और यह ज्वालामुखी सुप्त होगया है, फिर भी इसके पेट में से बडी मात्रा मे धुआ बराबर निकलता रहता है। इस पहाड के चारो तरफ की बनावट और प्राकृतिक दृश्य विशेष प्रकार के है, जो देखने लायक है। ज्वालामुखी पहाड होने की वजह से पेड, पत्ती या हरियाली का तो कही नामोनिशान तक नही था। फिर भी गोलाकार मे कटा हुआ वह पहाड़, जिसमे अलग-अलग रग के पत्थर और मिट्टी के स्तर प्राकृतिक रूप से ही बने हुए थे, एक नया व अलग ढग का दृश्य उपस्थित करते थे।

हिरोशीमा—वहा से दूसरी लडाई के सबसे सतप्त और क्षत-विक्षत नगर हिरोशीमा पहुचे। यद्यपि यहा देखने को विशेष कुछ नही है, तथापि ऐतिहासिक दृष्टि से यह एक महत्व का स्थान होगया है। गत् महायुद्ध मे १९४५ मे जब अमरीका ने हीरोशीमा और नागासाकी पर अणु बम गिराये थे तो वहा ऐसा प्रलयकारी दृश्य उपस्थित होगया था कि प्रत्यक्षदर्शियो के शब्दो मे उसकी नारकीय यातना का वर्णन करना असभव है। उस भयानक काड से अगणित आबाल वृद्ध क्षणभर मे काल के गाल मे समा गये—जो बचे उनका जीवन भी नष्ट होगया। उन का मास-पिड तो क्या हड्डिया तक टेढी-मेढी और बेकाम होगई और पक्षाघात के रोगी की तरह वे बेकार होगये। कष्ट का तो कोई ठिकाना ही नही रहा—मनुष्य, पशु, पक्षी तो क्या वनस्पति और धरती के भीतर स्थित खनिज पदार्थ भी उससे झुलस गये और यह शहर खडहर बन गया। अणु बम के एक ही विस्फोट ने सिर्फ हीरोशिमा शहर मे ही एक लाख से अधिक जाने ले ली। लोग कहते है कि अणु बम से इतने लोग नही मरे, जितने कि उसके फटने के बाद निकली गैस से चारो तरफ आग लग जाने के कारण। इस एक बम के फटने से, वहा के सारे क्षेत्र मे, लगभग दो लाख चालीस हजार से भी अधिक व्यक्ति मरे। उनमे करीब ७० हजार सैनिक भी थे। बम गिरने के पहले धक्के से ही करीब सात हजार मकान तो एकदम नष्ट होगये और करीब-करीब पौने चार हजार मकानो को भारी क्षति पहुची। इसके बाद जो आग लगी उसमे करीब ५६ हजार मकान और भस्मसात होगये।

बम गिरने के पहले यहा की आबादी डेढ लाख थी। आज उससे दूनी है। शहर करीब-करीब नया बस गया है। सड़के आदि फिर से बन गई हैं। सिर्फ एक तरफ कच्चे घर और दूकाने बनी हुई है, जिनसे हमे अपने यहा के शरणार्थियो की बस्ती का स्मरण हो आता है। जहा बम गिरा था वह जगह सुरक्षित रखी गई है। उसके पास ही का एक तिमजिला मकान यादगार के रूप मे ज्यो-का-त्यो रखा गया है। बम के प्रहार से इसकी दीवारे तो करीब-करीब गिर गई है, लेकिन लोहे का भीतरी ढाचा खड़ा है। दुनिया के सारे देशो से पैसा जमा करके, जो लोग वहा मर गये उनकी यादगार मे, एक बहुत सादा-सा लेकिन अच्छा स्मृति-स्तभ बना दिया गया है।

ऐसी छोटी-सी जगह मे भी एक खासा बडा डिपार्टमेट स्टोर देखकर हमे ताज्जुब हुआ। यहा इतने बड़े स्टोर को देखने की उम्मीद नही थी। अदर गये तो चीजे भी बडी अच्छी-अच्छी मिल रही थी। यद्यपि हमारे पास समय बहुत कम था, फिर भी इतनी सुदर चीजे मिल रही थी कि खरीदी किये बिना मन नही मानता था। बात-की-बात मे बहुत-सी चीजे इकट्ठी हो गई। यह तो अच्छा था कि उन्होने सारे विभागों से इन चीजो को एकत्र करके तुरत हर चीज को अलग-अलग अच्छी तरह से बाधकर उनके दो पार्सल बना दिये, नही तो उनको लादकर साथ ले जाना मुश्किल हो जाता।

चीजे तो मनपसद मिल गई और पार्सल भी होगये; पर इनको टोकियो तक ले जाने मे कितनी कठिनाई होनेवाली थी इसका हमे बाद मे पता चला। हम लोग सीधे तो टोकियो जा

नही रहे थे, रास्ते मे कई जगह रुकना था। हमारे पास और सामान भी था ही। कुली हर जगह मिलते नही, इससे हर जगह सारा सामान खुद ही ढोना पडता था। यहा यह अनुभव हुआ कि मुसाफिरी मे जितना कम सामान हो उतना ही अच्छा। एक सुविधा जरूर थी। स्टेशन पर हर जगह सामान रखने के कमरे मे पार्सलो को हम छोड देते थे, पर सामान को रेल से कमरे तक ले जाने और उसको इधर-से-उधर करने मे जो दिक्कत होती थी, वह तो होती ही थी।

मियाजिमा—(पवित्र द्वीप) यह जापान के आतरिक समुद्र का मणि-द्वीप कहा जाता है। यहा रेल और स्टीमर द्वारा हीरोशीमा से एक घटे से भी कम मे पहुचा जा सकता है। इस द्वीप का क्षेत्रफल केवल १९ वर्गमील है और इसके उत्तरी समुद्र तट पर प्रसिद्ध पवित्र स्थल इत्सुकुशीमा है। इस मठ की इमारत समुद्र के अदर तक फैली हुई है। ज्वार आने पर यह मठ समुद्र मे तैरता-सा दिखाई देता है। इस मठ का 'तोरी' दरवाजा कपूर की लकडी का बना हुआ है। इस द्वार की ऊचाई ५० फीट है और यह समुद्र मे कोई २०० फीट अदर जाकर बनाया गया है।

नागोया—हीरोशीमा से ओसाका होते हुए हम लोग नागोया पहुचे। यह औद्योगिक व आबादी की दृष्टि से जापान का तीसरे नबर का शहर है। टोकियो से एक्सप्रेस द्वारा पाच घटे मे और वायुयान द्वारा डेढ घटे मे नागोया पहुचा जा सकता है। यहा की जनसख्या करीब बारह लाख है। जापान मे चीनी मिट्टी के जितने सामान बनते है, उसका ७० प्रतिशत

और ऊनी माल का ८५ प्रतिशत यही तैयार होता है। यहा हम लोगो ने प्रसिद्ध 'नार्के' मार्के का चीनी मिट्टी के बर्तन बनाने का कारखाना देखा। ये लोग बहुत सुदर-सुदर बर्तन बनाते है। खाने और चाय पीने के बर्तन सुदर कारीगरी के साथ काफी सस्ते दामो मे मिलते है। नागोया के आसपास ग्रामोद्योग के ढग पर भी काफी मात्रा मे चीनी मिट्टी के बर्तन बनते है। टोकियो लौट आने पर हमने करीब सौ रुपयो मे चाय पीने का व खाना खाने का एक ही ढग का एक सेट खरीदा, जिसमे कुल मिलाकर ९५ नग थे। एक नग का करीब एक रुपया दो आना पडा। सेट बडा सुदर है और यहा के हिसाब से सस्ता भी माना जायगा।

टोबा—नागोया से हम लोग टोबा नाम के एक छोटे-से द्वीप मे पहुचे। इसे मिकीमोटो टापू भी कहते है। यह जगत्-विख्यात मिकीमोटो के नकली मोती बनाने का बडा केंद्र है। मिकीमोटो एक बहुत साधारण व्यक्ति थे। उन्होने यह सारी सस्था अपने हाथो खडी की। इसका करोडो रुपयो का माल आज अमरीका और यूरोपीय देशो को हर साल निर्यात होता है। इस टापू पर नकली मोती किस तरह से बनाये जाते है, इसकी पूरी विधि समझाने का विशेष प्रबध है। गोताखोर समुद्र के भीतर से जिदा सीप पकड लेते है। फिर किस प्रकार छोटे-से गोल सफेद नकली मोती को इजेक्शन देकर उनके पेट मे पहुचाया जाता है और उनको एक जाल मे रखकर करीब चार बरस के लिए समुद्र मे रख दिया जाता है, यह सब उन्होने हम लोगों को अच्छी तरह समझाकर बताया। तीन-चार

बरस तक समुद्र मे रहने से वे कीडे उन छोटे मोतियो को बडा वना देते है। यह मोती देखने मे असली मोती से भी अच्छा दीखता है। पालिश कैसे करते है और छेद आदि करके हार कैसे वनाते है, यह सब भी देखने लायक है। गोताखोर हजारो की सख्या मे है और विशेपता यह है कि ये सव-की-सब स्त्रिया है।

यात्रियो को दिखाने के लिए वे लोग करीब तीन रुपये लेकर इस तरह के जिदा सीप उनके सामने ही खोलते है। इनमे जितने मोती निकलते है, वे उस यात्री के हो जाते है। पहली सीप मे यदि एक् भी मोती न निकले तो वे एक और सीप भी खोल देते है। हमारे लिए सीप खोली तो उस एक ही सीप मे तीन मोती निकले, जिन्हे वहा की यादगार के रूप मे हम लोग अपने साथ मे लेते आये।

हाकुनी—अब हमारी वापसी-यात्रा टोकियो की तरफ आने के लिए शुरू हुई। रास्ते मे हम लोग मियोनोशीटा पहुचे। यह हाकुनी जिले मे स्थित है। हाकुनी मे एक बहुत सुदर झील है। उसके अदर छोटी-छोटी मोटर-वोटो मे पचास-साठ मील की रफ्तार से जाने मे बडा अच्छा लगता है। हाकुनी से जापान का फूजी पहाड भी अच्छी तरह दिखाई देता है। यहा की झील पर जव वर्फ जम जाती है तव उसपर स्केटिग आदि करने मे वडा मजा आता होगा। टोकियो से बहुत नजदीक होने की वजह से यहा गर्मियो मे वहुत लोग रहने के लिए भी आ जाते है। यह वहा का ग्रीष्मऋतु का एक प्रसिद्ध क्रीडास्थल होगया है।

फूजिया होटल—मियोनोशीटा मे तो देखने लायक कोई

चीज नही है, लेकिन उसकी ख्याति वहा के फूजिया होटल की वजह से है। सिर्फ इस होटल मे रहने के लिए ही हम लोग यहा आये थे। हम यहा सिर्फ तीन दिन रहनेवाले थे, पर चार-पाच दिन रुक गए। होटल क्या था, जैसे कोई सब्जबाग हो। खूब सुदर बगीचा, उसके बीच मे जलप्रपात, खुले मे एक बहुत बडा तैरने का तालाब। होटल के पीछे पहाडी पर हरेभरे लहलहाते हुए पेड बडे सुदर लगते है; होटल के भीतर, चार-पाच तैरने के व नहाने के तालाव अलग है। एक तो सादे पानी का बडा कुड है, जैसा बाहर है वैसा ही भीतर है। बाकी चार कुड अलग-अलग तरह से प्राकृतिक सौंदर्य से सजाकर बनाये गये है। इन सबमे नैसर्गिक गरम पानी के सोते बहते है। पानी बहुत गरम होने से उसके लिए ठडे पानी का नल अलग है। जिसे जितना गरम चाहिए, उतना गरम रखे। उसमे बैठे रहना बडा अच्छा लगता है। नहाने के बाद सारे शरीर की थकावट दूर हो जाती है और मन प्रसन्न हो उठता है। गरम पानी पहाडो के स्रोतो से आता है। इसलिए उसमे काफी धातुए होती है, जो स्वास्थ्य के लिए अच्छी मानी जाती है। खाने-पीने के कमरे, वैठने के कमरे, रहने के कमरे वडे आकर्षक ढग से बने हुए है। मै तो आज तक जितने होटलो मे ठहरा हू उन सबमे इस होटल को प्रथम स्थान दूगा। जिसने सबसे पहले इस होटल को बनाने की कल्पना की उसने मानो इसके पीछे अपनी सारी बुद्धि व हृदय उडेल दिया होगा, ऐसा लगता है। दुर्भाग्यवश इस होटल के वनने के बाद दो वार इसमे आग लग गई। दोनो बार यह पूरा-का-पूरा स्वाहा होगया था, लेकिन होटल वनानेवाले के

वारिसो ने उसको हर बार फिर से बनाकर ज्यो-का-त्यो कर दिया। यह अपने ढग का अनोखा होटल है, इसमे कोई शक नही। यहा रहकर हम लोगो को शाति मिली और इतने दिनो की भागदौड की थकावट एकदम दूर होगई।

टोकियो से सिर्फ पचास-बावन मील दूर होने से शनिवार और रविवार के दिन तथा गर्मियो मे यहा बहुत लोग पहुच जाते है। जो भी घूमने-फिरने की दृष्टि से जापान जाय उन्हे कुछ दिन इस होटल मे जरूर बिताने चाहिए।

निक्को मदिर—टोकियो के उत्तर मे करीब नव्वे मील पर निक्को और चूजनजी का तालाब देखने योग्य है। करीब दोसौ एकड से अधिक के विशाल उद्यान मे बना हुआ जापान के सारे मदिरो मे निक्को सबसे ज्यादा सुदर है। मुझे तो यहा के और सब मदिर देखकर एक तरह से निराशा ही हुई। ऐसा लगा कि यदि अपने मदिरो से, खासकर दक्षिण के मदिरो से, तुलना की जाय तो इनमे देखने को विशेष कुछ भी नही है। लेकिन निक्को मदिर जरूर दर्शनीय है। वहा की कारीगरी और आकर्षक रगो मे बना हुआ उसका दरवाजा, दीवारे आदि सभी चीजे सुदर है। यह मदिर शोगू है।

इस मदिर को इयोयासु की यादगार मे उसकी मृत्यु के बाद उसके लडके ने बनवाया था। इयोयासु ने १५वी शताब्दी के अत मे सारे जापान मे शाति व एकता स्थापित करने मे बडी सफलता प्राप्त की थी। निक्को का मदिर जापान की जनता को इतना प्यारा है कि उसके नाम पर वहा बहुत-सी कहावते चल निकली है—"सच्ची सुदरता क्या है, यह किसीको तब-

तक मालूम नही पड सकता जवतक उसने निक्को न देखा हो।" "निक्को वह खजाना है, जिसपर जापान ही नही, सारी दुनिया को गर्व हो सकता है।" 'केक्को' (याने बहुत सुदर या भव्य) मत कहो जवतक तुमने 'निक्को' न देखा हो," इत्यादि।

इस मदिर का बाहरी दरवाजा जापान के सुदरतम तथा ग्रत्यत भव्य दरवाजो मे से है। इस दरवाजे के वारे मे यह प्रसिद्ध है कि जो एक वार वहा पहुच जाता है, वह इसकी सुद-रता निहारते हुए सारे दिन वही खडा रहता है।

यद्यपि ऋतु खतम हो रही थी, फिर भी यहा हमे चेरी के कुछ भाड़ो पर फूल लदे हुए देखने को मिल गए। जब चेरी के झाड पूरी तरह से फूलते होगे तव दृश्य सचमुच वडा ही मनोहारी होता होगा।

चूज़नजी झील—यहा से पास ही चूजनजी झील वडा सुदर ग्रौर दर्शनीय स्थान है। टोकियो के नजदीक होने से छुट्टियो ग्रौर गर्मियो मे काफी लोग यहा ग्रा जाते है। इसमे मोटर-बोट ग्रौर हाथ से चलाने की नावे पडी रहती है। जिनको जैसा शौक हो उस तरह की नाव चलाने का शौक पूरा कर सकते है। झील के नजदीक ही केगन नाम का एक वडा जल-प्रपात है, जो यहा के दर्शनीय स्थानो मे एक माना जाता है। इस प्रपात को देखने के लिए जमीन के ग्रदर पत्थर के पहाड को चीरकर करीव तीन-चारसौ फीट गहरे, लिफ्ट से जाने का इतजाम किया है। लिफ्ट से उतरकर ठीक प्रपात के सामने ग्रा जाते है। यहा एक वहुत बडा चबूतरा वना दिया गया है, जहा से प्रपात ग्रच्छी तरह से देखा जा सकता है। इस प्रपात

को बहुत दूर से देखना हो तो तीन-चार मील दूर 'रोप वे' से एक दूसरी पहाडी की चोटी पर जाकर देखने का भी इतजाम है। वहा से नीचे उतरने के लिए 'रोप वे' की बस और फिर 'रोप वे' की ट्राम चलती है। हम लोगो ने वहा जाकर भी यह प्रपात देखा। इतनी दूरी से पहाडो और जगल के बीच मे घिरा हुआ यह और भी शोभायमान हो रहा था। वहा से 'रोप वे' मे ही नीचे उतरे। हम लोगो के लिए यह सभी नया अनुभव था।

कामकुरा—जापान जानेवाले के लिए कामकुरा देखना इसलिए अनिवार्य है कि वहा बुद्ध भगवान की सबसे बडी प्रतिमा है। यह स्थान टोकियो से ३० मील पश्चिम मे है। यहा की जलवायु अधिक गर्म या सर्द नही है, इसलिए टोकियो-निवासी यहा बहुत अधिक जाते और रहते है। यहा टोकियो से विजली की ट्रेन द्वारा आसानी से पहुचा जा सकता है।

यहा की वुद्ध-मूर्ति ४२ फीट ६ इच लबी है और उसका आधार ९७ फीट का है। खुले आसमान के नीचे वनी हुई भगवान वुद्ध की यह कासे की मूर्ति पद्मासन मुद्रा मे बनाई गई है। इसका निर्माण तेरहवी शताब्दी के मध्य मे हुआ था। करीव सातसौ वर्षो से धूप, वर्षा व ववडर सहते हुए आज भी यह प्रतिमा ज्यो-की-त्यो विद्यमान है। मूर्ति के पीछे से उसके अदर जाने के लिए सीढी लगी हुई है। दो मजिल का एक छोटा-सा कमरा अदर वना हुआ है। मूर्ति के चेहरे पर वडा शातिदायक एव भव्य भाव है। वैसे तो जापान मे इससे भी वडी एक वुद्ध-प्रतिमा नारा मे है, कितु कला की दृष्टि से दोनो मे कोई मुकावला नही है।

इनोशीमा— पास ही इनोशीमा का छोटा-सा टापू है। इसका समुद्री किनारा बड़े सुंदर ढंग से बसा हुआ है। गर्मियों में समुद्र में नहाने के लिए आने-जानेवालों का तांता लगा रहता है। टोकियो से नजदीक ही है। रेल व मोटर के रास्तों से जुड़ा होने के कारण यहां खूब चहल-पहल रहती है।

: १३ :

वापसी

जापान मे करीव सात हफ्ते विताकर हम लोग भारत लौटने की तैयारी करने लगे। इतने दिन जापान मे रहे, लेकिन कभी ऐसा नही लगा कि भारत छोडे बहुत दिन होगये। अपने यहा यह मान्यता है कि जापान मे अपनी रुचि का खाना-पीना, अपने ढग से न मिलने के कारण, वहा लोगो का वजन कम हो जाता है, खास करके शाकाहारियो का। लेकिन हम दोनो का वजन तो वहा उल्टा वढ गया। विमला का पद्रह पौड और मेरा पाच पौड। तात्पर्य यह है कि जापान मे रहना हम लोगो के लिए सब दृष्टि से अच्छा साबित हुआ। वहा का हवा-पानी तो अनुकूल आया ही, दिन भी बडे मौज मे कटे।

जाते समय हम लोग सिंगापुर से समुद्री जहाज द्वारा जापान पहुचे थे और वहा से लौटे भी जहाज से ही। 'अमरीकन प्रेसीडेट लाइन' का बहुत शोर सुन रखा था। उनका जहाज 'प्रेसीडेट विलसन' योकोहामा से मनीला होता हुआ हागकाग जा रहा था। उसीमे हमलोग भी सवार होगए। रास्ते मे मनीला मे डेढ रोज रुके और कोई छ दिन मे हागकाग पहुचे। जापान आते समय जब हमारा जहाज योकोहामा पहुचा था और उससे नीचे उतरने के लिए सीढिया लग रही थी तब मेरी आखों मे यह सोचते हुए पानी-सा आ गया था कि एक अपरिचित देश मे उतर रहे है। पता नही कैसे-क्या अनुभव हो ! लडाई के दिनो

मे जापानियो की वर्वरता की कहानी सुन रखी थी। कुछ डर-सा लगा कि कही यहा आकर हम लोग हैरान न हो—किसी चक्कर मे न फस जाय। न जाने क्यो, विदेशियो के वीच जाते हुए एक तरह का डर और सकोच लग रहा था। पर जापान छोडते समय भी आखे गीली होगई थी, पर पहले से बिल्कुल भिन्न कारणो से। टोशिको और अन्य मित्र पहुचाने आये थे। यद्यपि घर जाने की खुशी हो रही थी, फिर भी उनको और जापान को छोडते हुए मन मे दु ख-सा हो रहा था। जो कुछ वहा देखा, अनुभव किया दिल मे उसकी मधुर स्मृति भरी हुई थी और वह आखो द्वारा वाहर झाक रही थी .

'प्रेसीडेट विलसन' काफी बड़ा जहाज है और रहने के कमरे, वरामदे, अदर आने-जाने के रास्ते आदि सब एयर-कडीशन थे, फिर भी जेसा सुन रखा था, वैसी कोई विशेषता नही देखी। सोचा था कि यह अमरीकन जहाज है और ये लोग इतना शोर मचाते है तो जरूर कोई खासियत होगी। जाते समय हम पी०एड०ओ० के 'चूसान' जहाज से गये थे। उसकी अपेक्षा इसमे कोई अतिरिक्त विशेपता देखने मे नही आई। रहने के कमरे 'चूसान' के ही अच्छे थे। नहाने का तालाब, खाने के, वैठने के, चाय-सिगरेट पीने के कमरे आदि करीव-करीव एक-से ही थे। चुस्ती व व्यवस्था 'चूसान' मे वहुत वेहतर लगी। दोनो ही जहाजो मे खाने-पीने की चीजो की प्रचुरता थी। भाति-भाति के पकवान वनते थे और खाने मे कोई रोक-टोक नही थी। खाना इतनी वार और इतना अधिक खा लिया जाता था कि पेट हमेशा भारी रहता था। हा, 'प्रेसीडेट विलसन' मे शाका-

हारियो के लिए खाने-पीने की व्यवस्था कुछ बेहतर जरूर थी। खरीददारी के लिए दोनो मे ही करीब एक-सी दूकाने थी। ये जहाज छोटे-मोटे चलते-फिरते आधुनिक गाव के समान ही समझिए। सब तरह की सुविधाए इनमे होती है। यदि समुद्र शात रहे और जहाज अधिक हिले-डुले नही तो थके हुए लोगो को पूर्ण विश्राम मिल जाता है। जाते और आते दोनो वक्त हमलोगो को जहाज की मुसाफिरी बहुत पसद आई।

हमारा जहाज मनीला बदर के नजदीक पहुच रहा था। जब दूसरी लडाई के जगत-प्रसिद्ध टापू ओकिनावा से हम गुजरे तब जहाज के सारे यात्री, जोकि करीब-करीब सभी अमरीकन थे, बाहर इकट्ठे होगए और बडे कुतूहल से उस टापू को देखने और उसकी चर्चा करने लगे। मनीला पर कब्जा करने के लिए जापान व अमरीका मे इस छोटे-से टापू को लेकर महीनो तक लडाई चली और हजारो जाने गई। यद्यपि टापू छोटा था, तथापि इसपर कब्जा किये बगैर फिलिपाइन पर हमला करना सभव नही था। इसलिए उस युद्ध मे इस टापू का विशेष महत्व होगया था। इस टापू की हार-जीत पर हजारो, बल्कि लाखो लोगो, का भविष्य निर्भर होगया था।

मनीला—मनीला मे हमारा जहाज डेढ रोज रुका। इस बीच देखने को वहा विशेष कुछ नही मिला। मनीला से करीब दो घटे का मोटर का सफर कर 'टगायटे रिज' घूमने गये। टाल सरोवर के किनारे पहाडी पर बना हुआ यह छोटा-सा गाव सुदर प्राकृतिक दृश्यो से घिरा हुआ है। इस जगह सुबह-शाम जाने पर अच्छा लगता है मगर हम तो दोपहर को पहुचे

थे। वैसे इस तरह के सुदर प्राकृतिक स्थान हर जगह मिल जाते है, इसकी कोई विशेषता नही लगी। हा, यहा हमने पहले-पहल मुर्गो की लड़ाई देखी। लडाई मे दर्शक लोग जुआ भी खेलते है। कौन-सा मुर्गा जीतेगा, इसपर बाजी लग जाती है। वापस लौटते समय रास्ते मे हमने एक चर्च मे वास का वना हुआ पूरा आर्गन देखा व सुना। कहते है कि बास का बना हुआ पूरा आर्गन दुनिया मे एक ही है। इसकी आवाज मीठी जरूर थी।

झील से मनीला लौटते समय रास्ते मे एक जगह खेतो मे भैसो द्वारा काम लिया जा रहा था। हम लोगो मे जो अमरीकन भाई थे वे यह देखकर बहुत चकित हुए और बस को ठहराकर उन भैसो का फोटो लेने के लिए सब-के-सब उतर पडे। एक-दो व्यक्ति, जो हमारे साथ रह गये थे, उन्होने मुझसे पूछा— "क्यो भाई, तुम भी तो फोटो के शौकीन हो। तुम फोटो क्यो नही लेते ?" मैने कहा— "भैसो का फोटो लेने कौन उतरे। मै तो भैसो की फोटो लेनेवालो का फोटो लेना चाहता हू। हमारे लिए तो भैस ताज्जुब की चीज नही है। उसका फोटो लेने का विचार जरूर ताज्जुब का विषय है।"

मनीला मे चीजो के दाम वहुत ऊचे थे। खासकर जापान की तुलना मे तो यहा चीजो की कीमत वहुत अधिक लगती थी। जब हम जहाज से उतरे तभी हमे ताकीद कर दी गई कि टैक्सी लेनी हो तो पहले से तय करके टैक्सी पर वैठना, नही तो टैक्सी ड्राइवर अनाप-शनाप पैसा मांगेगे और वहुत झगड़ा करेगे। एक चीज यहा अच्छी लगी। यहा आम देखने और खाने को

मिले। जापान मे तो आम के दर्शन ही नही हुए। आम से कही कोई नई बीमारी जापान मे न घुस आवे, इसकी वे बडी फिक्र रखते है। इसलिए जापान मे किसी भी तरह के आम का प्रवेश निषिद्ध है। हम लोग बबई के हाफुस आम के दो पार्सल से जापान जाते हुए अपने साथ ले गए थे। एक को तो जहाज मे खा-पीकर खतम कर डाला। दूसरा प्रयत्नपूर्वक बचाते रहे कि भारत के ये अच्छे आम जापानी मित्रो को देगे। पर कस्टम अधिकारियो ने एक भी आम बाहर नही ले जाने दिया। मेरे कोट की जेब मे एक आम पडा था वह भी रख लिया। हमे बडी निराशा हुई। वे तो उस पार्सल को समुद्र मे फिकवा देते। पर हमने एक रास्ता निकाला। जहाज पर हमारे काफी दोस्त होगये थे। भारतीय सेना तत्कालीन के सेनापति, जनरल श्रीनागेश भी साथ ही थे। बडे मिलनसार और भले आदमी है। उनसे भी अच्छा परिचय होगया था। वह उसी जहाज से भारत लौट रहे थे। सिर्फ आराम की दृष्टि से जहाज की सैर के लिए निकले थे। हम लोगो ने उन्हीके पास ये आम भिजवा दिये।

मनीला मे कुछ मित्रो के साथ हम लोग शाम के वक्त हाइलाई का खेल देखने चले गये। यह खेल एकदम नये ढग का था। हाथ मे बेत की बनी हुई एक विशेष आकार की टोकनी पहनकर उससे गेद को खूब दूर दीवार पर बडे जोरो से मारते है। गेद कहा गिरती है और सामनेवाला उसे अपनी टोकनी से झेल सकता है या नही, यही इस खेल की विशेषता है। खेल देखने मे विशेष आकर्षक नही है, लेकिन इसमे खूब

जुग्रा होता है। इसीलिए काफी भीड़ और चहल-पहल भी हो जाती है। यहा के शौकीन तबीयतवाले लोग वडे शौक से इसे देखने जाते है।

उन्ही दिनो वहा विदेशी कलाकारो की एक टोली आई हुई थी। उन्होने बर्फ के बने हुए प्लेटफार्म पर स्केटिग आदि करके बडा सुदर खेल दिखाया। उसे भी देखने का मौका हमे अनायास ही मिल गया।

हागकाग आकर हम लोगो ने जहाज छोड दिया। जहाज वापस कोबे होकर अमरीका जाता था। हागकाग मे खरीदी की खूब चहल-पहल रहती है। हम लोग भी सुबह से शाम तक एक दुकान से दूसरी दुकान की खाक छानने मे लगे रहे। आस-पास के देशो के लोग यहा खरीदी की दृष्टि से आते रहते है। यह बहुत बडा खरीदी का केंद्र है और खुला वदरगाह होने से किसी वस्तु पर जकात नही होने से चीजो के दाम भी बहुत सस्ते है। फिर भी पता नही क्यो यहा के दूकानदारो मे जापान के दुकानदारो की-सी ईमानदारी नही है।

एक दूकान पर हमने कुछ जनानी घडिया देखी। उनमे से दो हमे पसद आई। हमारे पूछने पर दूकानदार ने हर घडी के दो-दोसौ रुपये दाम वताये। हमने डरते-डरते कुछ सकोच से कहा कि दोसौ रुपये मे दोनो घडिया दे दे तो ले लेगे। हमे उम्मीद नही थी, फिर भी वह तैयार होगया। तव हमे लगा कि शायद इतने मे भी कही हम ठगे तो नही गए! कम कहने पर, सभव था कि, वह और भी सस्ते मे दे देता। इस कठिनाई की वजह से भरोसा नही हो पाता था कि हमे

कोई वस्तु ठीक दामो मे मिल गई । इससे तो निश्चित दाम होने पर ज्यादा भी देना पडे तो अच्छा ही रहता है। खरीददारी जल्दी भी होती है और धोखा भी नही रहता ।

हागकाग मे तो विदेशी जहाज आते ही रहते है । जब जहाज किनारे लगा हो, तो चीजो के ऊपर बढे हुए दाम के लेबल लग जाते है। जब जहाज गया तो फिर पुराने लेबल! दोनो तरह के लेबल तैयार रहते है ।

मनीला से हागकाग आते हुए 'प्रेसीडेट विलसन' जहाज पर हमारी एक ऐसे चीनी-दपति से अच्छा परिचय होगया जो एक-दो पीढियो से ही हागकाग मे बसे हुए थे। दोनो ही पति-पत्नि बडे अच्छे स्वभाव के थे और जितने समय हम हागकाग मे रहे, उन्होने सारा शहर और उसकी खास-खास खूबिया हमको साथ मे लेजाकर बताई ।

हागकाग के रेस्तरा और होटल प्रसिद्ध है। पर हम लोग तो शाकाहारी ठहरे। इससे वे हमारे काम के नही थे। फिर भी हमने अपने मित्र से कहा कि हमको चीनी ढग का शाकाहारी खाना खिला सको तो खिलाओ। हमको नए-नए प्रकार का भोजन करने का बडा शौक है—बशर्ते कि वह निरामिष हो। वैसे वहा निरामिष भोजन का रिवाज बहुत ही कम है, पर वहा के बौद्ध-भिक्षुओ के एक-दो छोटे रेस्तरा भी है जो पूर्णतया निरामिष वस्तुए ही बनाते है । वहा मासाहार का कतई निषेध है। हमारे मित्र हमे ऐसे ही एक रेस्तरा मे खाने के लिए ले गए। खाना यद्यपि निरामिष ही था पर उसकी बनावट सूरत-शकल, गध व जिन पदार्थों से चीजे बनाई गई थी वह सब

हमारी रुचि से सर्वथा भिन्न थी। वस्तुए दीखने मे तो निरामिप ही लगती थी पर उनकी गध वहुत प्रिय नही थी। फिर भी हम लोगो ने चीनी ढंग से ही दो लकडियो के सहारे ज्यो-त्यो वह खाना गले के नीचे उतारा। चावल और बास का साग आदि तो खाने मे भी उतने बुरे नही लगे, इससे काम चल गया। एक नई चीज का अच्छा अनुभव रहा।

हागकाग से हम लोग हवाई जहाज से सिगापुर पहुचे। वहा दो-तीन दिन रहे। वहा हमारे एक अग्रेज मित्र थे। उन्होने हमे अपनी गाडी मे सारा शहर अच्छी तरह से घुमाया। वहा देखने लायक विशेप ऐसी कोई महत्व की चीज नही थी। सिगापुर भी वहुत-कुछ खुला बदरगाह है, लेकिन जापान और हागकाग की खरीदी के बाद यहा कुछ लेने को मन नही करता था। वहा पहुचने पर पहले ही दिन शाम को अग्रेज मित्र हमे एक दक्षिण भारतीय होटल मे ले गये। वहा दक्षिण भारतीयों की काफी आवादी होने से इडली, दोसे आदि चीजे आसानी से मिल जाती है। होटल तो छोटा-सा ही था, पर इतने दिनो के वाद भारतीय खाना देखकर हमे वड़ी प्रसन्नता हुई। जापान मे दूध की वहुतायत होते हुए भी न जाने क्यो, लोग दही नही जमाते है। कही जमाते भी है तो शक्कर डालकर उसे मीठा जमाते है। सामान्य दही तो हमे वहा कही नही मिला। इसलिए दही देखकर तो हमारा दिल खुश होगया। जबतक वहा रहे, हम सब लोग रोज उसी होटल मे खाते रहे।

सिगापुर मे भारत के तत्कालीन हाई कमिश्नर श्री आर० के० टडन और उनकी पत्नी वड़े ही सज्जन और मिलनसार

व्यक्ति है। वे लोग भी हमे घुमाने-फिराने ले गये और अच्छी खातिर की। उन्ही दिनो भारतीयो की तरफ से एक बडे भोज का आयोजन किया गया था। हाल ही मे सिगापुर मे नये चुनाव हुए थे। सीमित अधिकारोवाले नये मन्त्रिमडल मे एक भारतीय को भी उप-मत्री-पद दिया गया था। उन्हीके सम्मान मे यह भोज था। इस मौके पर वहा के सारे प्रतिष्ठित भारतीयो से मिलने का सुयोग होगया।

बैंकोक— सिगापुर से चलकर एक रोज के लिए थाईलैंड की राजधानी बैंकाक मे ठहरे। यहा जिधर जाय, उधर ही अमरीका का काफी पैसा व असर नजर आता है। एक बडा आलीशान हवाई अड्डा भी बनाया गया है। यहा अनेक बडे-बडे मदिर है, लेकिन विशेष देखने योग्य मदिर तो बुद्ध की नीलम मूर्तिवाला सुवर्ण मदिर है। इसे देखने की इजाजत बडी मुश्किल से मिलती है। यह वहा के राजा का व्यक्तिगत मदिर है। और उस दिन राजासाहब खुद उस मदिर मे पूजा करने आनेवाले थे। इसलिए मामला कठिन ही था। बडी कोशिश के बाद, विशेष अनुमति लेकर, हम लोग इसे देख सके। इसकी हमे बडी खुशी रही, क्योकि एक रोज से ज्यादा तो हम लोग वहा रुक नही सकते थे। यह मदिर सचमुच बडे ही आकर्षक ढग से बनाया गया है। बाहर भी बहुत अच्छी कारीगरी एव सुदर रगो से इसे सजाया है। मूर्ति बहुत बडी नही है, फिर भी नीलम की होने से इसका महत्व बहुत ज्यादा है। सारी दुनिया मे बने भगवान बुद्ध के मदिरो मे यह एक प्रसिद्ध मदिर है। इस मदिर के चारो ओर जो बडी

दीवार वनी है उसके ऊपर रामायण की पूरी कथा चित्रित की गई है। यह यहा की देखने योग्य एक विशेप वस्तु है। चित्रकारी बहुत वडे परिमाण मे की गई है। भारतीय सभ्यता का असर इन पडौसी देशो मे कितना अधिक था, इसका यह मदिर जीता-जागता प्रतीक है। यहा अधिकतर मदिर भगवान बुद्ध के ही है।

एक और चीज यहा अपनी विशेपता रखती है। वह है यहा का तैरता हुआ वाजार। सुबह होने के पहले ही आसपास के देहाती लोग साग-भाजी, फल, दूध, मछलिया वगैरह वीसियो छोटी-छोटी नावो मे यहा ले आते है। नावो मे ही इनकी खरीदी-बिक्री होती है। खरीदनेवाले भी वडी सख्या मे यहा पहुच जाते है और दिनभर की आवश्यक वस्तुए यही से खरीद लेते है।

यहा से निकलकर बस आखिरी उडान बाकी रह गई थी। जाते समय हवाई जहाज से कलकत्ते से रवाना होकर रगून, जकार्ता, सिगापुर, पेनाग होते हुए वापस सिगापुर गये थे। वहा से समुद्री जहाज द्वारा हागकाग होते हुए जापान पहुचे थे। लौटते समय भी समुद्री जहाज से रवाना हुए और मनीला होते हुए हागकाग पहुचे। वहा से वायुयान द्वारा सिगापुर, बैकाक होकर कलकत्ता आगये। कलकत्ते से सिगापुर वायुयान द्वारा ही आना और जाना दोनो होने से, भाडे मे हमको दस प्रतिशत की वचत भी हो गई।

इस तरह हम लोगो की यह यात्रा सानद सम्पन्न हुई।

'मंडल' के प्रकाशन

प्रार्थना-प्रवचन : (गाधीजी) दो भाग ५।।)
गीता-माता ,, ४)
पद्रह अगस्त के बाद ,, १।।), २)
धर्म-नीति ,, १।।), २)
दक्षिण अफ्रीका का सत्याग्रह ,, ३।।)
मेरे समकालीन ,, ५)
आत्मकथा (सपूर्ण) ,, २।।) ४)
आत्म-सयम ,, ३)
अनासक्तियोग ,, ।।।)
अनीति के राह पर ,, १)
आज का विचार : भाग दो ,, ।।।)
आश्रमवासियो से ,, ।=)
एक सत्यवीर की कथा ,, ।)
गाधी-शिक्षा तीन भाग,, ।।।≡)
गीता-बोध ,, ।।)
ग्राम-सेवा ,, ।=)
नीति-धर्म ,, ।=)
ब्रह्मचर्य : भाग १ ,, १)
ब्रह्मचर्य भाग २ ,, ।।।)
बापू की सीख ,, ।।)
मगल-प्रभात ,, ।=)
सर्वोदय ,, ।=)
आत्मकथा (सक्षिप्त),, १।।)
हमारी माग ,, १)
हिंद-स्वराज्य ,, ।।।)
हृदय-मथन के पाच दिन,, ।)
गाधीजी ने कहा था पाच भाग,, १।)
ईशावास्यवृत्ति (विनोबा) ।।।)
ईशावास्योपनिषद् =)
उपनिषदो का अध्ययन ,, १)
गाधीजी को श्रद्धाजलि ,, ।=)
जमाने की माग ,, =)
जीवन और शिक्षण ,, २)
भूदान-यज्ञ ,, ।)
राजघाट की सनिधि मे ,, ।।=)
विचार-पोथी ,, १)
विनोबा के विचार दो भाग ,, ३)
शाति-यात्रा ,, १।।)
स्थितप्रज्ञ-दर्शन ,, १)
स्वराज्य-शास्त्र ,, ।।)
सर्वोदय का घोषणा-पत्र,, ।)
सर्वोदय-विचार ,, १=)
आत्मकथा (राजेद्रप्रसाद) ८)
गाधीजी की देन ,, १।।)
गाधी-मार्ग ,, =)
मेरी कहानी (सपूर्ण) (नेहरू) ८)
मेरी कहानी (सक्षिप्त) ,, २।।)
राजनीति से दूर ,, २)
राष्ट्रपिता ,, २)
विश्व-इतिहास की झलक (स०) ६)
हिंदुस्तान की कहानी (स०) २।।)
हिंदुस्तान की समस्याए ,, २)
कुब्जा-सुदरी (राजगोपालाचार्य) २)
महाभारत-कथा ,, ५)
शिशु-पालन ,, ।।)
अधेरे मे उजाला (टॉल्सटॉय) १।।)
ईसा की सिखावन ,, १)
कलवार की करतूत ,, ।)
जीवन-साधना , १।)
धर्म और सदाचार ,, १।)
प्रेम मे भगवान ,, २)

वालको का विवेक „ ।।)
वुराई कैसे मिटे ? „ १)
मेरी मुक्ति की कहानी „ १।।)
स्त्री और पुरुष „ १)
सामाजिक कुरीतिया „ २)
हम करें क्या ? „ ३।।)
हमारे जमाने की गुलामी,, ।।।)
क्राति की भावना (क्रोपाटकिन) २।।)
नवयुवको से दो वाते „ ।=)
रोटी का सवाल „ ३)
समाज-विकास-माला (७२ पुस्तके)
प्रत्येक का मूल्य ।=)
सस्कृत-साहित्य-सौरभ
प्रत्येक का मूल्य ।=)

अन्य लेखको की

अहिंसा की शक्ति १।।)
इगलैड मे गाधीजी २)
गाधी की कहानी ४)
गाधी-अभिनदन-ग्रथ ४)
गाधी-श्रद्धाजलि-ग्रथ ३)
गाधीजी की छत्रछाया मे १।।),२।।)
जीवन-प्रभात ५)
वा, वापू और भाई ।।)
बापू २)
वापू के पत्र २)
वापू की कारावास-कहानी १०)
वापू के आश्रम मे १)
गाधी-विचार-दोहन १।।)
सत्याग्रह-मीमासा ३।।)
स्वतत्रता की ओर ४)
सर्वोदय-योजना ।।)

प्रगति पथ पर

१ नया भारत ।)
२ आजादी के आठ साल ।)
३ सिचाई और बिजली ।)
४. गाव के उद्योग-धधे ।)
५ अन्न-समस्या का हल ।)
६. सामुदायिक योजना ।)

जीवन-चरित

एक आदर्श महिला १)
मेरी जीवन-यात्रा २)
लोकमान्य तिलक २।।)
श्रेयार्थी जमनालालजी ६।।)
श्रेयार्थी जमनालालजी (सक्षिप्त) २)

इतिहास-राजनीति

अठारहसौ सत्तावन २।।)
आधुनिक भारत ५)
भारत-विभाजन की कहानी ४)
काग्रेस का इतिहास भाग २ १०)
काग्रेस का इतिहास भाग ३ १०)
भा० नव-जागरण का इतिहास ३)
राष्ट्रीय गीत ।)
राजनीति-प्रवेशिका १)
हमारा कानून ५)

उपन्यास, कहानी, नाटक, काव्य, सस्मरण

अमिट रेखाए ३)
एक क्रातिकारी के सस्मरण ।।।)
कहावतो की कहानिया २)
काश्मीर पर हमला २)
जय अमरनाथ १।।)
जीवन-सदेश १।)
जातक-कथा २।।)
तट के वधन (उपन्यास) २)

देवदासी (उपन्यास) २)
कित्तूर की रानी „ २)
नवप्रभात १)
मानवता के झरने १॥)
मील के पत्थर २)
मै भूल नही सकता २॥)
रीढ की हड्डी १॥)
लद्दाख-यात्रा की डायरी २॥)
विनोबा के साथ सात दिन ॥)
साधना के पथ पर २॥)
स्मरणाजलि १॥), २॥)
सप्तदशी २)
हमारी लोक-कथाए १॥)
जैसी करनी वैसी भरनी १॥)
पुण्य की जड हरी १॥)
हिमालय की गोद मे २)

धर्म और अध्यात्म-साहित्य

अयोध्याकाड १)
तामिलवेद १॥)
तुकाराम-गाथासार १॥)
थेरी-गाथाए १॥)
ध्रुवोपाख्यान ।)
पुरुपार्थ ६)
बुद्धवाणी १)
बुद्ध और बौद्ध साधक १॥)
भागवत-धर्म ५॥)
भागवत-कथा ३॥)
भारत-सावित्री ३॥)
मनन १॥)
रामतीर्थ-सदेश (तीन भाग) १=)
सत-सुधासार १)
तुलसी-रामकथा-माला
(पाच भाग) १।॥=)

निबध-साहित्य

अशोक के फूल ३)
कल्पवृक्ष २)
कैरली साहित्य-दर्शन ४)
जीवन-साहित्य २)
पचदशी १॥)
भारतीय सस्कृति ३॥)
रूप और स्वरूप ॥=)
साहित्य और जीवन २)

कृपि तथा ग्रामोपयोगी

अन्नो की खेती २)
कृपि-ज्ञान-कोष ४)
फलो की खेती २॥)
साग-भाजी की खेती ३)
तिलहन की खेती १)
दलहन की खेती १)
खादी द्वारा ग्राम-विकास ।॥)
ग्राम-सुधार १।)
चारादाना ।)
पशुओ का इलाज ॥)
हमारे गाव की कहानी १॥)

स्वास्थ्योपयोगी साहित्य

कब्ज—कारण और निवारण १)
मै तदुरुस्त हू या बीमार ? ॥)

युवकोपयोगी साहित्य

आत्मोपदेश १)
व्यवहार और सभ्यता १)
शिष्टाचार ॥)